# THE PSALTER, OR PSALMES of DAVID,

After the Translation of the great Bible: pointed as it shall be said or sung in Churches.

With the addition of Morning and Evening PRAYER.

LONDON,
Printed for the Societie of Stationers. 1635.

## January hath xxxj. dayes.

| | | | Morning Prayer. | | Evening Prayer. | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | 1 Lesson | 2 Lesson | 1 Lesson | 2 Lesson |
| 1 | A | Circ. | Gen.17. | Rom.2. | Deut.10 | Col.2. |
| 2 | b | | Gen.1. | Matth.1 | Gen.2. | Rom.1. |
| 3 | c | | 3 | 2 | 4 | 2 |
| 4 | d | | 5 | 3 | 6 | 3 |
| 5 | e | | 7 | 4 | 8 | 4 |
| 6 | f | Epiph. | Esai 60 | Luk.2. | Esa. 49 | Joh.2. |
| 7 | g | | Gen.9. | Matth 5 | Gen.12. | Rom.5 |
| 8 | A | Lucian. | 13 | 6 | 14 | 6 |
| 9 | b | | 15 | 7 | 16 | 7 |
| 10 | c | | 17 | 8 | 18 | 8 |
| 11 | d | | 19 | 9 | 20 | 9 |
| 12 | e | Sol. Ag. | 21 | 10 | 22 | 10 |
| 13 | f | Hillar. | 23 | 11 | 24 | 11 |
| 14 | g | Febru. | 25 | 12 | 26 | 12 |
| 15 | A | | 27 | 13 | 28 | 13 |
| 16 | b | | 29 | 14 | 30 | 14 |
| 17 | c | | 31 | 15 | 32 | 15 |
| 18 | d | Prisca. | 33 | 16 | 34 | 16 |
| 19 | e | | 35 | 17 | 37 | 1 Cor.1. |
| 20 | f | Fabian. | 38 | 18 | 39 | 2 |
| 21 | g | Agnes. | 40 | 19 | 41 | 3 |
| 22 | A | Vinc. | 42 | 20 | 43 | 4 |
| 23 | b | | 44 | 21 | 45 | 5 |
| 24 | c | | 46 | 22 | 47 | 6 |
| 25 | d | Conve. | Wisd.5. | Acts 22 | Wisd.6. | Act. 26. |
| 26 | e | of Paul. | Gen.48. | Mat 23. | Gen.49 | 1 Cor.7. |
| 27 | f | | 50 | 24 | Exod 1. | 8 |
| 28 | g | | Exod.2 | 25 | 3 | 9 |
| 29 | A | | 4 | 26 | 5 | 10 |
| 30 | b | | 7 | 27 | 8 | 11 |
| 31 | c | | 9 | 28 | 10 | 12 |

## February hath xxviij. dayes.

| | | | Morning Prayer. | | Evening Prayer. | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | 1 Lesson | 2 Lesson | 1 Lesson | 2 Lesson |
| 1 | d | Fast. | Exo 11. | Mark.1 | Exo 12. | 1 Cor.13 |
| 2 | e | Purif. Ma. | Wisd.9 | 2 | Wisd.12. | 14 |
| 3 | f | Blasii. | Exo.13. | 3 | Exo.14 | 15 |
| 4 | g | | 15 | 4 | 16 | 16 |
| 5 | A | Agath. | 17 | 5 | 18 | 2 Cor.1. |
| 6 | b | | 19 | 6 | 20 | 2. |
| 7 | c | | 21 | 7 | 22 | 3 |
| 8 | d | | 23 | 8 | 24 | 4 |
| 9 | e | | 32 | 9 | 33 | 5 |
| 10 | f | Sol. Pisc | 34 | 10 | Lev. 18 | 6 |
| 11 | g | | Lev.19. | 11 | 20 | 7 |
| 12 | A | | 26 | 12 | Num.11 | 8 |
| 13 | b | | Num.12 | 13 | 13 | 9 |
| 14 | c | Valen. | 14 | 14 | 15 | 10 |
| 15 | d | Marti. | 17 | 15 | 20 | 11 |
| 16 | e | | 21 | 16 | 22 | 12 |
| 17 | f | | 23 | Lud.di. | 24 | 13 |
| 18 | g | | 25 | dim. | 27 | Gal.1. |
| 19 | A | | 30 | 2 | 31 | 2 |
| 20 | b | | 32 | 3 | 35 | 3 |
| 21 | c | | 36 | 4 | Deut.1. | 4 |
| 22 | d | | Deut. 2. | 5 | 3 | 5 |
| 23 | e | Fast. | 4 | 6 | 5 | 6 |
| 24 | f | S. Mat- | Wisd.19. | 7 | Eccle.1 | Eph.1. |
| 25 | g | thias. | Deut. 6 | 8 | Deut.7. | 2 |
| 26 | A | | 8 | 9 | 9 | 3 |
| 27 | b | | 10 | 10 | 11 | 4 |
| 28 | c | | 13 | 11 | 15 | 5 |

## March hath xxxj. dayes.

| | | | Morning Prayer. | | Evening Prayer. | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | 1 Lesson | 2 Lesson | 1 Lesson | 2 Lesson |
| 1 | d | David. | Deut.16 | Luk.12. | Deut.17 | Ephes.6 |
| 2 | e | Cedde. | 18 | 13 | 19 | Phil.1. |
| 3 | f | | 20 | 14 | 21 | 2 |
| 4 | g | | 22 | 15 | 24 | 3 |
| 5 | A | | 25 | 16 | 26 | 4 |
| 6 | b | | 27 | 17 | 28 | Col.1. |
| 7 | c | Perpet. | 29 | 18 | 30 | 2 |
| 8 | d | | 31 | 19 | 32 | 3 |
| 9 | e | | 33 | 20 | 34 | 4 |
| 10 | f | | Josh.1. | 21 | Josh.2. | 1 The.1 |
| 11 | g | Sol. Ar. | 3 | 22 | 4 | 2 |
| 12 | A | Greg. | 5 | 23 | 6 | 3 |
| 13 | b | | 7 | 24 | 8 | 4 |
| 14 | c | | 9 | Joh.1. | 10 | 5 |
| 15 | d | April. | 23 | 2 | 24 | 2 The.1 |
| 16 | e | | Judg.1. | 3 | Judg.2. | 2 |
| 17 | f | | 3 | 4 | 4 | 3 |
| 18 | g | Edw. | 5 | 5 | 6 | 1 Tim.1 |
| 19 | A | | 7 | 6 | 8 | 2.3 |
| 20 | b | Bened. | 9 | 7 | 10 | 4 |
| 21 | c | | 11 | 8 | 12 | 5 |
| 22 | d | | 13 | 9 | 14 | 6 |
| 23 | e | | 15 | 10 | 16 | 2 Tim.1 |
| 24 | f | Fast. | 17 | 11 | 18 | 2 |
| 25 | g | Annun. | Ecclu.2. | 12 | Eccl.3. | 3 |
| 26 | A | Mary. | Judges) | 13 | Judg.10 | 4 |
| 27 | b | Inst. | 21 | 14 | Ruth.1. | Titus1. |
| 28 | c | R. Car. | Ruth.2. | 15 | 3 | 2.3 |
| 29 | d | | 4 | 16 | 1 Sa.1. | Phile |
| 30 | e | | 1 Sam.3 | 17 | 3 | Heb.1. |
| 31 | f | | 4 | 18 | 5 | 3 |

## April hath xxx. dayes.

| | | | Morning prayer. | | Evening prayer. | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | 1 Lesson | 2 Lesson | 1 Lesson | 2 Lesson |
| 1 | g | | 1 Sam.6 | Joh. 19 | 1 Sam.7 | Heb.3. |
| 2 | A | | 8 | 20 | 9 | 4 |
| 3 | b | Rich. | 10 | 21 | 11 | 5 |
| 4 | c | Ambr. | 12 | Acts 1. | 13 | 6 |
| 5 | d | | 14 | 2 | 15 | 7 |
| 6 | e | | 15 | 3 | 17 | 8 |
| 7 | f | | 18 | 4 | 19 | 9 |
| 8 | g | | 20 | 5 | 21 | 10 |
| 9 | A | | 22 | 6 | 23 | 11 |
| 10 | b | | 24 | 7 | 25 | 12 |
| 11 | c | Sol. in | 26 | 8 | 27 | 13 |
| 12 | d | Tauro. | 28 | 9 | 29 | Jam.1. |
| 13 | e | | 30 | 10 | 31 | 2 |
| 14 | f | Mall. | 2 Sam.1 | 11 | 2 Sam.2 | 3 |
| 15 | g | | 3 | 12 | 4 | 4 |
| 16 | A | | 5 | 13 | 6 | 5 |
| 17 | b | | 7 | 14 | 8 | 1 Pet.1. |
| 18 | c | | 9 | 15 | 10 | 2 |
| 19 | d | Alphag. | 11 | 16 | 12 | 3 |
| 20 | e | | 13 | 17 | 14 | 4 |
| 21 | f | | 15 | 18 | 16 | 5 |
| 22 | g | | 17 | 19 | 18 | 2 Pet.1. |
| 23 | A | S. Geor. | 19 | 20 | 2. | 2 |
| 24 | b | | 21 | 21 | 22 | 3 |
| 25 | c | Mar. | Eccle.4 | 22 | Eccl.5 | 1 Joh.1. |
| 26 | d | Evan. | 1 Sa.23. | 23 | 2 Sa.24 | 2 |
| 27 | e | | 1 King.1 | 24 | 1 Kin.2 | 3 |
| 28 | f | | 3 | 25 | 4 | 4 |
| 29 | g | | 5 | 26 | 6 | 5 |
| 30 | A | | 8 | 27 | 8 | 1.3. Joh. |

## May hath xxxi. dayes.

| | | | Morning prayer. | | Evening prayer. | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | 1 Lesson | 2 Lesson | 1 Lesson | 2 Lesson |
| 1 | b | Phil.& | Eccl. 7. | Act. 8. | Eccl. 9. | Iude 1. |
| 2 | c | Jacob. | 1 Kin. 9 | 28 | 1 Kin. 10 | Rom. 1. |
| 3 | d | inuen. | 11 | Metha. | 12 | 2 |
| 4 | e | crucis. | 13 | 2 | 14 | 3 |
| 5 | f | | 15 | 3 | 16 | 4 |
| 6 | g | John | 17 | 4 | 18 | 5 |
| 7 | A | Evan. | 19 | 5 | 20 | 6 |
| 8 | b | | 21 | 6 | 22 | 7 |
| 9 | c | | 2 King. 1. | 7 | 2 King. 2. | 8 |
| 10 | d | | 3 | 8 | 4 | 9 |
| 11 | e | | 5 | 9 | 6 | 10 |
| 12 | f | Sol. Gl. | 7 | 10 | 8 | 11 |
| 13 | g | | 9 | 11 | 10 | 12 |
| 14 | A | | 11 | 12 | 12 | 13 |
| 15 | b | | 13 | 13 | 14 | 14 |
| 16 | c | Junii. | 15 | 14 | 16 | 15 |
| 17 | d | | 17 | 15 | 18 | 16 |
| 18 | e | | 19 | 16 | 20 | 1. Cor. 1 |
| 19 | f | Dunst. | 21 | 17 | 22 | 2 |
| 20 | g | | 23 | 18 | 24 | 3 |
| 21 | A | | 25 | 19 | Ezra. 2. | 4 |
| 22 | b | | Ezra. 5. | 20 | 4 | 5 |
| 23 | c | | 5 | 21 | 6 | 6 |
| 24 | d | | 7 | 22 | 9 | 7 |
| 25 | e | | Neh. 1. | 23 | Neh. 2. | 8 |
| 26 | f | August. | 4 | 24 | 5 | 9 |
| 27 | g | | 6 | 25 | 8 | 10 |
| 28 | A | | 9 | 26 | 10 | 11 |
| 29 | b | | 13 | 27 | Esth. 1. | 12 |
| 30 | c | | Esth. 2. | 28 | 3 | 13 |
| 31 | d | | 4 | Mar. 1. | 5 | 14 |

## June hath xxx

| | | | Morning prayer. | | Evening prayer. | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | 1 Lesson | 2 Lesson | 1 Lesson | 2 Lesson |
| 1 | | Nicho. | Hest. 6. | Mat. 2. | Hest. 7. | 1 Cor. 15 |
| 2 | | | 8 | 3 | 9. | 16 |
| 3 | | | Job 1. | 4 | Job 2. | 2 Cor. 1 |
| 4 | | | 3 | 5 | 4 | 2 |
| 5 | | Boni. | 5 | 6 | 6 | 3 |
| 6 | | | 7 | 7 | 8 | 4 |
| 7 | | | 9 | 8 | 10 | 5 |
| 8 | | | 11 | 9 | 12 | 6 |
| 9 | | | 13 | 10 | 14 | 7 |
| 10 | | | 15 | 11 | 16 | 8 |
| 11 | | Bar. Ap. | Eccl. 10 | Act 13. | Eccl 12. | Act 15. |
| 12 | | Sol. Con | Job 17. | Mat 12. | Job 19. | 2 Cor. 9 |
| 13 | | Sol. æcit. | 20 (18 | 13 | 21 | 10 |
| 14 | | Julii. | 22 | 14 | 22 | 11 |
| 15 | | | 24. 25. | 15 | 25. 27. | 12 |
| 16 | | | 28 | 16 | 29 | 13 |
| 17 | | | 30 | Luk 1. | 31 | Col. 1. |
| 18 | | | 32 | 2 | 33 | 2 |
| 19 | | | 34 | 3 | 35 | 3 |
| 20 | | Edw. | 36 | 4 | 37 | 1 |
| 21 | | | 38 | 5 | 39 | 5 |
| 22 | | | 40 | 6 | 41 | 6 |
| 23 | | Fast. | 42 | 7 | Prov. 1. | Eph. 1. |
| 24 | | Nat. Bp. | Mal. 3. | Mat. 2. | Mal. 4 | Mat. 4 |
| 25 | | | Prov. 2. | Luk. 8. | Prov. 2 | Eph. 2. |
| 26 | | | 4 | 9 | 5 | 3 |
| 27 | | | 6 | 10 | 7 | 4 |
| 28 | | Fast. | 8 | 11 | 9 | 5 |
| 29 | | S. Pet. | Eccl. 19 | Act. 2. | Eccl. 19 | Acts 4 |
| 30 | | | Prov. 10 | Luk. 1. | Prov. 11 | Eph. 6. |

## July hath xxxj. dayes.

| | | | Morning prayer. | | Evening prayer. | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | 1 Lesson | 2 Lesson | 1 Lesson | 2 Lesson |
| 1 | g | Visit. | Pro. 12. | Luk. 13. | Pro. 13. | Phil. 1. |
| 2 | A | Mar. | 14 | 14 | 15 | 2 |
| 3 | b | Martin. | 16 | 15 | 17 | 3 |
| 4 | c | | 18 | 16 | 19 | 4 |
| 5 | d | | 20 | 17 | 21 | Col. 1. |
| 6 | e | Dog- | 22 | 18 | 23 | 2 |
| 7 | f | dayes. | 24 | 19 | 25 | 3 |
| 8 | g | | 26 | 20 | 27 | 4 |
| 9 | A | | 28 | 21 | 29 | 1 The. 1. |
| 10 | b | | 31 | 22 | Eccl. 1. | 2 |
| 11 | c | | Eccl. 2. | 23 | 3 | 3 |
| 12 | d | Sol. in | 4 | 24 | 5 | 4 |
| 13 | e | Leo. | 6 | Joh. 1. | 7 | 5 |
| 14 | f | | 8 | 2 | 9 | 2 Thes. 1 |
| 15 | g | Swith. | 10 | 3 | 11 | 2 |
| 16 | A | August. | 12 | 4 | Jer. 1. | 3 |
| 17 | b | | Jer. 2. | 5 | 8 | 1 Tim. 1 |
| 18 | c | | 4 | 6 | 5 | 2. 3. |
| 19 | d | | 6 | 7 | 7 | 4 |
| 20 | e | Marg. | 8 | 8 | 9 | 5 |
| 21 | f | | 10 | 9 | 11 | 6 |
| 22 | g | Mald. | 12 | 10 | 13 | 2 Tim. 1 |
| 23 | A | | 14 | 11 | 15 | 2 |
| 24 | b | Fast. | 16 | 12 | 17 | 3 |
| 25 | c | Iac. Ap. | Eccl. 23 | 13 | Eccl. 23 | 4 |
| 26 | d | Anne. | Jer. 18. | 14 | Jer. 19. | Titus 1. |
| 27 | e | | 20 | 15 | 21 | 2. 3. |
| 28 | f | | 22 | 16 | 23 | Philem. |
| 29 | g | | 24 | 17 | 25 | Heb. 1. |
| 30 | A | | 26 | 18 | 27 | 2 |
| 31 | b | | 28 | 19 | 29 | 3 |

## August hath xxxj. dayes.

| | | | Morning prayer. | | Evening prayer. | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | 1 Lesson | 2 Lesson | 1 Lesson | 2 Lesson |
| 1 | B | Lamm | er. 30 | ohn. 20 | Jer. 31. | Heb. 4 |
| 2 | c | | 32 | 21 | 33 | 5 |
| 3 | d | | 34 | Act. 1. | 35 | 6 |
| 4 | e | | 36 | 2 | 37 | 7 |
| 5 | f | | 38 | 3 | 39 | 8 |
| 6 | g | Transl. | 40 | 4 | 41 | 9 |
| 7 | A | Name | 42 | 5 | 43 | 10 |
| 8 | b | of Jes. | 44 | 6 | 45. 46 | 11 |
| 9 | c | | 47 | 7 | 48 | 12 |
| 10 | d | Laur. | 49 | 8 | 50 | 13 |
| 11 | e | | 51 | 9 | 52 | Iam. 1. |
| 12 | f | Sol. Virg. | Jam. 1. | 10 | Lam. 2. | 2 |
| 13 | g | Sapient. | 3 | 11 | 4 | 3 |
| 14 | A | | 5 | 12 | Eze. 2. | 4 |
| 15 | b | | Ezech. | 13 | 6 | 5 |
| 16 | c | A | 7 | 14 | 13 | 1 Pet. 1 |
| 17 | d | | 14 | 15 | 18 | 2 |
| 18 | e | | 22 | 16 | 24 | 3 |
| 19 | f | | Dan. 1. | 17 | Dan. 2. | 4 |
| 20 | g | | 3 | 18 | 4 | 5 |
| 21 | A | | 5 | 19 | 6 | 2 Pet. 1 |
| 22 | b | | 7 | 20 | 8 | 2 |
| 23 | c | Fast. | 9 | 21 | 10 | 3 |
| 24 | d | Bart. Ap. | Eccl. 25. | 22 | Eccl 29. | 1 Joh. 1 |
| 25 | e | | Dan. 11 | 23 | Dan. 12. | 2 |
| 26 | f | | 13 | 24 | Pro. 30. | 3 |
| 27 | g | | Hose. 1 | 25 | Hos 2, 3. | 4 |
| 28 | A | Aug. | 4 | 26 | 5. 6 | 5 |
| 29 | b | Behead. | 7 | 27 | 8 | 2. Joh. |
| 30 | c | of Joh | 9 | 28 | 10 | Jude |
| 31 | d | | 11 | Mat. 1. | 11 | Rom. |

## September hath xxx. dayes.

| | | | Morning prayer. | | Euening prayer | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | 1 Lesson | 2 Lesson | 1 Lesson | 2 Lesson |
| 1 | f | Giles. | Hos. 13. | Mat. 2. | Hos. 14 | Rom. 10 |
| 2 | g | | Joel. 1. | 3 | Joel 2. | 3 |
| 3 | A | | 1 | 4 | Amos 3 | 4 |
| 4 | b | | Amos 2 | 5 | 3 | 5 |
| 5 | c | Dogge | 4 | 6 | 5 | 6 |
| 6 | d | dayes | 6 | 7 | 7 | 7 |
| 7 | e | end. | 8 | 8 | 9 | 8 |
| 8 | f | Nat. M. | Obad. 1. | 9 | Jon. 1. | 9 |
| 9 | g | | Jon. 2. 3. | 10 | 4 | 10 |
| 10 | A | | Mich. 1. | 11 | Mica. 2 | 11 |
| 11 | b | | 3 | 12 | 4 | 12 |
| 12 | c | Sol. Lib | 5 | 13 | 6 | 13 |
| 13 | d | | 7 | 14 | Nah. 1 | 14 |
| 14 | e | holy Cr. | Nah. 2. | 15 | 3 | 15 |
| 15 | f | *Aquin.* | Hab. 1. | 16 | Hab 2. | 16 |
| 16 | g | *Autum.* | 3 | 17 | Zeph 1 | 1 Cor 1 |
| 17 | A | Lamb. | Zeph. 2 | 18 | 3 | 2 |
| 18 | b | | Hagg. 1. | 19 | Hag 2. | 3 |
| 19 | c | | Zech. 1. | 20 | Zech 2, | 4 |
| 20 | d | Faſt | 4. 5. | 21 | 6 (3 | 5 |
| 21 | e | S. *Mat.* | Eccl 35 | 22 | Ecc 3. | 6 |
| 22 | f | | Zech. 7 | 23 | Zech. 8. | 7 |
| 23 | g | | 9 | 24 | 10 | 8 |
| 24 | A | | 11 | 25 | 12 | 9 |
| 25 | b | | 14 | 26 | 14 | 10 |
| 26 | c | Cyprian | Mal. 1. | 27 | Mal 2. | 11 |
| 27 | d | | 3 | 28 | 4 | 12 |
| 28 | e | | Tob. 1. | Mar. 1. | Tobi. 2 | 13 |
| 29 | f | S. *Mich.* | Eccl. 39. | 2 | Eccl 44 | 14 |
| 30 | g | Hier. | Ecc. 3. | 3 | Tob. 4. | 15 |

## October hath xxxj. dayes.

| | | | Morning prayer. | | Euening prayer | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | 1 Lesson | 2 Lesson | 1 Lesson | 2 Lesson |
| 1 | A | Remig | Exo. 6. | Mat. 4. | Jos. 20. | 1 Cor 16 |
| 2 | b | | Tob. 7 | 5 | 22. | 2 Cor. 1 |
| 3 | c | | 9 | 6 | Tob 10. | 2 |
| 4 | d | | 11 | 7 | 12 | 3 |
| 5 | e | | 13 | 8 | 14 | 4 |
| 6 | f | Faith | Judit. 1. | 9 | Judit. 2. | 5 |
| 7 | g | | 3 | 10 | 4 | 6 |
| 8 | A | | 5 | 11 | 6 | 7 |
| 9 | b | Dennis | 7 | 12 | 8 | 8 |
| 10 | c | | 9 | 13 | 10 | 9 |
| 11 | d | | 11 | 14 | 12 | 10 |
| 12 | e | *Sol Sc* | 13 | 15 | 14 | 11 |
| 13 | f | Edwa. | 15 | 16 | 16 | 12 |
| 14 | g | | Wisd. 1. | Lu. di | Wisd. 2. | 13 |
| 15 | A | | 3 | di. 1. | 4 | Galat. 1. |
| 16 | b | Nouem | 5 | 2 | 5 | 2 |
| 17 | c | Ethel. | 7 | 3 | 9 | 3 |
| 18 | d | *Lu. Eua* | Eccl. 51. | 4 | Ioh 1. | 4 |
| 19 | e | | Wisd. 2. | 5 | Wis. 10. | 5 |
| 20 | f | | 11 | 6 | 12 | 6 |
| 21 | g | | 13 | 7 | 14 | Ephe. 1. |
| 22 | A | | 15 | 8 | 16 | 2 |
| 23 | b | | 17 | 9 | 18 | 3 |
| 24 | c | | 19 | 10 | Eccl 1. | 4 |
| 25 | d | Crisp. | Eccl. 2. | 11 | 3 | 5 |
| 26 | e | | 4 | 12 | 5 | 6 |
| 27 | f | Faſt. | 6 (. | 13 | 7 | Phil. 1. |
| 28 | g | *Sim. & Iude.* | Job 24. | 14 | Job 42. | 2 |
| 29 | A | | Eccl. 8 | 15 | Eccl. 9. | 3 |
| 30 | b | | 10 | 16 | 11 | 4 |
| 31 | c | Faſt. | 12 | 17 | 12 | Col. 1. |

## Novembe hath xxx. dayes.

| | | | Morning prayer. | | Euening prayer. | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | 1 Lesson | 2 Lesson | 1 Lesson | 2 Lesson |
| 1 | d | *All* | Wisd. 3. | He 11 | 12 Wisd. 5 | Apoc. |
| 2 | e | *Saints.* | Eccl. 14. | Luk. 18. | Eccl. 15 | 2 |
| 3 | f | | 16 | 19 | 17 | 3 |
| 4 | g | | 18 | 20 | 19 | 4 |
| 5 | A | *Pan. con.* | 20 | 21 | 21 | 5 |
| 6 | b | Leon. | 22 | 22 | 23 | 2 |
| 7 | c | | 24 | 23 | 25, 26 | 3 |
| 8 | d | | 27 | 24 | 28 | 4 |
| 9 | e | | 29 | John 1. | 30 | 5 |
| 10 | f | | 31 | 2 | 32 . | 1 Thef. |
| 11 | g | S. Mar. | 33 | 3 | 34 | 2 |
| 12 | A | So. Sag. | 35 | 4 | 36 | 2. |
| 13 | b | Brice. | 37 | 5 | 38 | 1 Ti. 1. |
| 14 | c | Decem. | 39 | 6 | 42 | 2. 3 |
| 15 | d | Magh. | 41 | 7 | 42 | 4 |
| 16 | e | | 43 | 8 | 44 | 5 |
| 12 | f | *Hug. Ep.* | 45 | 9 | 46 | 6 |
| 11 | g | | 47 | 10 | 48 | 1 Tim. 1 |
| 19 | A | | 49 | 11 | 50 | 2 |
| 20 | b | Edm. K | 51 | 12 | Barnc. 1 | 3 |
| 21 | c | | Baruc 2. | 13 | 3 | 4 |
| 22 | d | Cicily. | 4 | 14 | 5 | Tit. 1. |
| 23 | e | Clem. | 6 | 15 | Isa. 1. | 2. 3. |
| 24 | f | | Isai. 2. | 16 | 3 | Philem. |
| 25 | g | Kath. | 4 | 17 | 5 | Heb 1. |
| 26 | A | | 6 | 18 | 7 | 2 |
| 27 | b | | 8 | 19 | 9 | 3 |
| 28 | c | | 10 | 20 | 11 | 4 |
| 29 | d | Faſt. | 12 | 21 | 13 | 5 |
| 30 | e | *Andr.* | Prov. 10 | Acts 1. | Prov. 21. | 6 |

## December hath xxxj. dayes

| | | | Morning prayer. | | Euening prayer. | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | 1 Lesson | 2 Lesson | 1 Lesson | 2 Lesson |
| 1 | f | | Isai. 14 | Act. 2. | Isa. 15 | Heb. 2. |
| 2 | g | | 16 | 3 | 17 | 8 |
| 3 | A | | 18 | 4 | 19 | 9 |
| 4 | b | | 20. 21 | 5 | 22 | 10 |
| 5 | c | | 23 | 6 | 24 | 11 |
| 6 | d | *Nic. Ep.* | 25 | Tim. 7. | 26 | 12 |
| 7 | e | | 27 | Tim. 7. | 28 | 13 |
| 8 | f | Concep. | 29 | 8 | 30 | Jam. 1. |
| 9 | g | Mary. | 31 | 9 | 32 | 2 |
| 10 | A | | 33 | 10 | 34 | 3 |
| 11 | b | | 35 | 11 | 36 | 4 |
| 12 | c | *S I. Cap.* | 37 | 12 | 38 | 5 |
| 13 | d | Lucie. | 39 | 13 | 40 | 1 Pet. 1. |
| 14 | e | Janua. | 41 | 14 | 42 | 2 |
| 15 | f | | 43 | 15 | 44 | 3 |
| 16 | g | *Osapi-* | 45 | 16 | 46 | 4 |
| 17 | A | *entis.* | 47 | 17 | 48 | 5 |
| 18 | b | | 49 | 18 | 50 | 2 Pet. 1. |
| 19 | c | | 51 | 19 | 52 | 2 |
| 20 | d | Faſt. | 53 | 20 | 54 | 3 |
| 21 | e | *Thom.* | Prov. 2 | 21 | Pro. 23. | 1 Joh. 1. |
| 22 | f | *Ap ſt.* | Isai. 15. | 22 | Isai. 36. | 2 |
| 23 | g | | 17 | 23 | 58 | 3 |
| 24 | A | Faſt. | 59 | 24 | 60 | 4 |
| 25 | b | *N. Chr.* | Isai. 9. | Luk. 2. | Isai. 7. | Tit. 3. |
| 26 | c | *S Stcu.* | Prov. 18 | Acts 6, 7 | Eccle. | Act. 7. |
| 27 | d | *S. Joh.* | Eccl. 1. | Rev. 1. | Eccl. 6. | Rev. 22. |
| 28 | e | *Innoc.* | Ier. 31. | Act. 25. | Wisd. 1. | 1 Joh. |
| 29 | f | | Isa. 61. | 26 | Isai. 62. | 2 Joh. |
| 30 | g | | 63 | 27 | 64 | 3 Joh. |
| 31 | A | *Sil. Ep.* | 65 | 28 | 66 | Iude. |

# A briefe declaration when every Terme beginneth and endeth.

BE it knowne, that Easter Terme beginneth alwayes t
17. day after Easter, reckoning Easter day for one, and e
eth the Munday next after the Ascention day.

Trinity Terme beginneth alway the Friday next after Tr
ity Sunday, and endeth the 18. day of Iune.

Michaelmas Terme begimneth the ninth or tenth day
ctober, and endeth the 28. or 29. day of November.

Hilarie Terme beginneth the 23. or 24. day of Ianuary, a
deth the 12. or 13. day of February.

In Easter Terme on the Ascention day. In Trinity Term
n the Nativity of S. John Baptist. In Michaelmas Term
n the Feast of All Saints. In Hilarie Terme, on the feast
he Purification of our Lady, the Kings Iudges at Westmi
ster doe not use to sit in judgement, nor upon any Sundaies.

# Morning Prayer.

## *Sentences of Scripture.*

AT what time soever a sinner doth repent him of his sinnes from the bottome of his heart, I will put all his wickednesse out of my remembrance, saith the Lord.

I doe know my owne wickednes: and my sinne is alway against me.

Turne thy face away from our sinnes, (O Lord:) and blot out all our offences.

A sorrowfull spirit is a sacrifice to God: d spise not (O Lord) humble and contrite hearts.

Rent your hearts and not your garments, and turne to the Lord your God, because he is gentle and mercifull, he is patient, and of much mercy, and such a one that is sorry for your afflictions.

To thee (O Lord God) belongeth mercy and forgivenesse: for we have gone away from thee, and have not hearkned to thy voyce, whereby we might walke in thy lawes which thou hast appointed for us.

Correct us (O Lord) and yet in thy judgement, not in thy fury: lest wee should be consumed and brought to nothing.

Amend your lives, for the Kingdome of God is at hand.

I will goe to my Father, and say to him: Father I have sinned against heaven, and against thee, I am no more worthy to be called thy sonne.

Enter not into judgement with thy servants (O Lord: for no flesh is righteous in thy sight.

If we say that we have no sinne, we deceive our selves, and there is no truth in us.

### *The Exhortation.*

DEarly beloved brethren, the Scripture moveth us in sundry places to acknowledge and confesse our manifold sinnes and wickednesse, and that wee should not dissemble nor cloake them before the face of Almighty God our heavenly Father, but confesse them with an humble, lowly, penitent, and obedient heart, to the end that wee may obtaine forgivenesse of the same, by his infinite goodnesse and mercy. And although wee ought at all times humbly to acknowledge our sinnes before God, yet ought wee most chiefly so to doe, when wee assemble and meet together, to render thankes for the great benefits that wee have received at his hands, to set forth his most worthy praise, to heare his most holy word, and to aske those things which bee requisite and necessary, as well for the body as the soule. Wherefore I pray and beseech you, as many as bee here present, to accompany me with a pure heart, and humble voice, unto the throne of the heavenly grace, saying after me.

### *A generall Confession.*

ALmighty and most mercifull Father, we have erred and strayed from thy wayes like lost sheepe, we have followed too much the devices and desires of our owne hearts, wee have offended against thy holy lawes, we have left undone those things which we ought to have done, and we have done those things which we ought not to have done, and there is no health in us, but thou O Lord have mercy upon us miserable offenders. Spare thou them O God which confesse their faults. Restore thou them that be penitent, according to thy promises declared unto mankinde, in Christ Jesu our Lord. And grant O most mercifull Father for his sake, that wee may hereafter live a godly, righteous, and sober life, to the glory of thy holy Name, Amen.

### *The Absolution, or Remission of sins.*

ALmighty God, the father of our Lord Jesus Christ, which desireth

not the death of a ſinner, but rather that he may turne from his wickedneſſe and liue, and hath given power and commandement to his Miniſters to declare and pronounce to his people being penitent, the abſolution and remiſſion of their ſinnes, hee pardoneth and abſolveth all them that truly repent, and unfainedly beleeve his holy Goſpell: wherefore we beſeech him to grant us true repentance and his holy ſpirit, that thoſe things may pleaſe him which we doe at this preſent, and that the reſt of our life hereafter may be pure and holy, ſo that at the laſt we may come to his eternall joy, through Jeſus Chriſt our Lord. Amen.

*The Lords Prayer.*

OVr Father which art in heaven, hallowed be thy Name. Thy Kingdome come. Thy will be done in earth as it is in Heaven. Give us this day our dayly bread. And forgive us our treſpaſſes, as wee forgive them that treſpaſſe againſt us. And lead us not into temptation, but deliver us from evill. Amen.

*The ſy.*

O Lord open thou our lips.

*Anſw.*

And our mouth ſhall ſhew forth thy praiſe.

*Pſalm.*

O God make ſpeed to ſave us.

*Anſwer.*

O Lord make haſte to helpe us.

*Verſe.*

Glory bee to the Father, and to the Sonne, &c.

*Anſwer.*

As it was in the beginning, &c.
Praiſe ye the Lord.

*Venite exultemus. Pſ. 95.*

OCome let us ſing unto the Lord: let us heartily rejoyce in the ſtrength of our ſalvation.

Let us come before his preſence with thankſgiving: and ſhew our ſelves glad in him with Pſalmes.

For the Lord is a great God: and a great King above all gods.

In his hands are all the corners of the earth: and the ſtrength of the hils is his alſo.

The Sea is his, and he made it, and his hands prepared the dry land.

O come let us worſhip & fall down, and kneele before the Lord our maker.

For he is the Lord our God: and wee are the people of his paſture, and the ſheepe of his hands.

To day if ye will heare his voice, harden not your hearts: as in the provocation, and as in the day of temptation in the wilderneſſe.

When your fathers tempted me: proved me, and ſaw my works.

Forty yeares long was I grieved with this generation, and ſaid: It is a people that doe erre in their hearts, for they have not knowne my wayes.

Vnto whom I ſware in my wrath that they ſhould not enter into my reſt.

Glory be to the Father, &c.
As it was, &c.

*Te Deum laudamus.*

WE praiſe thee, O God, we knowledge thee to be the Lord.

All the earth doth worſhip thee, the Father everlaſting.

To thee all Angels cry aloud: the heavens, and all the powers therein.

To thee Cherubin and Seraphin, continually doe cry

Holy, holy, holy, Lord God of Sabaoth.

Heaven and earth are full of the Majeſty of thy glory.

The glorious compiny of the Apoſtles praiſe thee.

The goodly fellowſhip of the Prophets praiſe thee.

The noble army of Martyrs praiſe thee.

The holy Church throughout all the world doth knowledge thee.

The Father of an infinite Majeſtie.

Thy honourable true and onely Son.

Alſo the holy Ghoſt the Comforter.

Thou art the King of glory: O Chriſt.

Thou art the everlaſting Sonne of the Father.

When thou tookeſt upon thee to deliver man: thou didſt not abhorre the virgins wombe.

When thou hadſt overcome the ſharpneſſe of death: thou diddeſt open the Kingdome of heaven to all beleevers.

Thou ſitteſt at the right hand of God in the glory of the Father.

Wee beleeve, that thou ſhalt come to be our Judge.

We therefore pray thee helpe thy ſervants: whom thou haſt redeemed with thy precious bloud.

Make them to be numbred with thy Saints: in glory everlaſting.

O Lord ſave thy people, and bleſſe thine heritage.

Governe them: and lift them up for ever.

Day by day: we magnifie thee.

And

And wee worship thy Name : ever world without end.

Vouchsafe, O Lord : to keepe us this day without sinne.

O Lord have mercy upon us : have mercy upon us.

O Lord let thy mercy lighten upon us : as our trust is in thee.

O Lord in thee have I trusted : let me never bee confounded.

*Benedicite omnia opera.*

O All ye workes of the Lord, bleſſe ye the Lord : praiſe him, and magnifie him for ever.

O ye Angels of the Lord, bleſſe yee the Lord : praiſe him, and magnifie him for ever.

O yee heavens, bleſſe yee the Lord : praiſe him, and magnifie him for ever.

O yee waters that be above the firmament, bleſſe ye the Lord : praiſe him and magnifie him for ever.

O all yee powers of the Lord, bleſſe ye the Lord : praiſe him, and magnifie him for ever.

O ye Sunne and Moone, bleſſe yee the Lord: praiſe him, and magnifie him for ever.

O ye Starres of heaven, bleſſe ye the Lord : praiſe him, and magnifie him for ever.

O ye ſhowers and dew, bleſſe ye the Lord : praiſe him, and magnifie him for ever.

O yee winds of God, bleſſe yee the Lord : praiſe him, and magnifie him for ever.

O ye fire and heat, bleſſe ye the Lord : praiſe him and magnifie him for ever.

O ye Winter and Summer, bleſſe yee the Lord : praiſe him, and magnifie him for ever.

O ye dewes and froſts, bleſſe yee the Lord : praiſe him, and magnifie him for ever.

O ye froſt and cold, bleſſe ye the Lord : praiſe him, and magnifie him for ever.

O ye Ice and Snow, bleſſe ye the Lord : praiſe him, and magnifie him for ever.

O ye nights and dayes, bleſſe yee the Lord : praiſe him, and magnifie him for ever.

O ye light and darkneſſe, bleſſe ye the Lord : praiſe him, and magnifie him for ever.

O ye lightnings and clouds, bleſſe yee the Lord : praiſe him, and magnifie him for ever.

O let the earth bleſſe the Lord; yea, let it praiſe him, and magnifie him for ever.

O ye Mountaines and Hils, bleſſe yee the Lord : praiſe him, and magnifie him for ever.

O all ye greene things upon the earth, bleſſe ye the Lord : praiſe him, and magnifie him for ever.

O ye Wels, bleſſe ye the Lord : praiſe him, and magnifie him for ever.

O ye Seas and flouds, bleſſe yee the Lord : praiſe him, and magnifie him for ever.

O ye Whales, and all that move in the waters, bleſſe ye the Lord, praiſe him, and magnifie him for ever.

O yee fowles of the ayre, bleſſe yee the Lord : praiſe him, and magnifie him for ever.

O all yee beaſts and cattell, bleſſe yee the Lord : praiſe him, and magnifie him for ever.

O ye children of men, bleſſe yee the Lord : praiſe him, and magnifie him for ever.

O let Iſrael bleſſe the Lord : praiſe him, and magnifie him for ever.

O ye Prieſts of the Lord, bleſſe ye the Lord: praiſe him, and magnifie him for ever.

O yee ſervants of the Lord, bleſſe yee the Lord : praiſe him and magnifie him for ever.

O ye ſpirits and ſoules of the righteous, bleſſe ye the Lord : praiſe him, and magnifie him for ever.

O ye holy and humble men of heart, bleſſe ye the Lord : praiſe him, and magnifie him for ever.

O Ananias, Azarias, and Miſael, bleſſe ye the Lord : praiſe him, and magnifie him for ever.

Glory be to the Father, and to &c.

As it was in the beginning, &c.

*Benedictus.*

BLeſſed be the Lord God of Iſrael, for hee hath viſited and redemed his people.

And hath raiſed up a mighty ſalvation for us : in the houſe of his ſervant David.

As he ſpake by the mouth of his holy Prophets : which have bene ſince the world began.

That wee ſhould bee ſaved from our enemies, and from the hands of all that hates us.

To performe the mercie promiſed to our fore-fathers : and to remember his holy covenant.

To performe the oath which hee ſware to our fore-father Abraham, that he would give us.

That wee being delivered out of the hands of our enemies might ſerve him without feare.

In holineſſe and righteouſneſſe before him, all the dayes of our life.

And thou childe ſhalt bee called the Prophet of the higheſt: for thou ſhalt goe before the face of the Lord to prepare his wayes.

To give knowledge of ſalvation unto his people, for the remiſsion of their ſinnes.

Through the tender mercy of our God, whereby the day ſpring from on high hath viſited us.

To give light to them that ſit in darkeneſſe and in the ſhaddow of death, and to guide our feete into the way of peace.

Glorie be to the Father, &c.

As it was, &c.

*Jubilate Deo.*

OBee joyfull in the Lord all ye lands: ſerve the Lord with gladneſſe, and come before his preſence with a ſong.

Be ſure that the Lord he is God: it is hee that hath made us, and not wee our ſelves, wee are his people, and the ſheepe of his paſture.

O goe your way into his gates with thankſgiving, and into his courts with praiſe, be thankfull unto him, and ſpeake good of his name.

For the Lord is gratious, his mercy is everlaſting: and his truth endureth from generation to generation.

Glory be to the Father, &c.

As it was, &c.

*The Creed.*

I Beleeve in God the Father Almighty, maker of heaven and earth. And in Jeſus Chriſt his onely Sonne our Lord. Which was conceived by the holy Ghoſt. Borne of the Virgin Mary. Suffered under Ponce Pilate, was crucified, dead, and buried, he deſcended into hell. The third day hee roſe againe from the dead. He aſcended into heaven, and ſitteth on the right hand of God the Father Almightie. From thence hee ſhall come to judge the quicke and the dead. I beleeve in the holy Ghoſt. The holy Catholique Church. The Communion of Saints. The forgiveneſſe of ſinnes. The reſurrection of the bodie, and the life everlaſting. Amen.

*Verſicle.*

The Lord be with you.

*Anſwer.*

And with thy ſpirit.

*Let us pray.*

Lord have mercy upon us.

Chriſt have mercy upon us.

Lord have mercy upon us.

OVr Father which art in Heaven, hallowed bee thy Name. Thy Kingdome come. Thy will bedone in earth as it is in Heaven. Give us this day our daily bread. And forgive us our treſpaſſes, as wee forgive them that treſpaſſe againſt us. And lead us not into temptation. But deliver us from evill. Amen.

*Verſicle.*

O Lord ſhew thy mercy upon us.

*Anſwer.*

And grant us thy Salvation.

*Verſicle.*

O Lord ſave the King.

*Anſwer.*

And mercifully heare us when we call upon thee.

*Verſicle.*

Indue thy miniſters with righteouſneſſe

*Anſwer.*

And make thy choſen people joyfull.

*Verſicle.*

O Lord ſave thy people.

*Anſwer.*

And bleſſe thine inheritance.

*Verſicle.*

Give peace in our time O Lord.

*Anſwer.*

Becauſe there is none other that fighteth for us, but onely thou O God.

*Verſicle.*

O God make clean our hearts within us.

*Anſwer.*

And take not thy holy ſpirit from us.

*The collect for peace.*

OGod which art the author of peace and lover of concord, in knowledge of whom ſtandeth our eternall life, whoſe ſervice is perfect freedome, defend us thy humble ſervants in all aſſaults of our enemies, that wee ſurely truſting in thy defence, may not feare the power of any adverſaries, through the merits of Jeſus Chriſt our Lord, Amen.

*The Collect for Grace.*

OLord our heavenly Father, Almighty and everlaſting God, which haſt ſafely brought us to the beginning of this day, defend us in the ſame with thy mighty power: and grant that this day we fall into no ſin, neither run into any kinde of danger, but that all our doings may be ordered by thy governance, to doe alwayes that is righteous in thy ſight, through Jeſus Chriſt our Lord, Amen.

Evening

# Evening Prayer.

OVr Father which art in heaven, hallowed be thy Name. Thy Kingdome come. Thy will bee done in earth, as it is in Heaven. Give us this day our daily bread. And forgive us our trespasses, as wee forgive them that trespasse against us. And lead us not into temptation, but deliver us from evill, Amen.

*Versicle*

O Lord open thou our lips.

*Answer.*

And our mouth shall shew forth thy praise.

*Versicle.*

O God make speed to save us.

*Answer.*

O Lord make haste to helpe us.

*Versicle.*

Glory be to the Father, &c.

*Answ.*

As it was in the beginning, &c.

Praise yee the Lord.

*Magnificat.*

MY soule doth magnifie the Lord.
And my spirit hath rejoyced in God my Saviour.

For he hath regarded the lowlinesse of his handmaiden.

For behold, from henceforth all generations shall call me blessed.

For he that is mighty hath magnified me, and holy is his Name.

And his mercy is on them that feare him, throughout all generations.

Hee hath shewed strength with his arme, he hath scattered the proud in the imagination of their hearts.

He hath put downe the mighty from their seat: and hath exalted the humble and meeke.

He hath filled the hungry with good things, and the rich he hath sent empty away.

He remembring his mercy, hath holpen his servant Israel, as he promised to our fore-fathers, Abraham, and his seed for ever.

Glory be to the Father, &c.
As it was, &c.

*Cantate Domino canticum novum. Psa. 98.*

OSing unto the Lord a new song: for he hath done marvellous things.

With his owne right hand, and with his holy arme hath hee gotten himselfe the victory.

The Lord declared his salvation: his righteousnesse hath he openly shewed in the sight of the heathen.

Hee hath remembred his mercy and truth toward the house of Israel: and all the ends of the world have seene the salvation of our God.

Shew your selves joyfull unto the Lord, all yee lands: sing, rejoyce, and give thanks.

Praise the Lord upon the harpe, sing to the harpe with a Psalme of thanksgiving.

With Trumpets also, and Shaumes: O shew your selves joyfull before the Lord the King.

Let the Sea make a noise, and all that therein is: the round world, and they that dwell therein.

Let the floods clap their hands, and let the hils be joyfull together before the Lord, for he is come to judge the earth.

With righteousnesse shall hee judge the world, and the people with equity.

Glory be to the Father, &c.
As it was, &c.

*Nunc Dimittis.*

LOrd now lettest thou thy servant depart in peace according to thy word.

For mine eyes have seen thy salvation.

Which thou hast prepared before the face of all people.

To be a light to lighten the Gentiles, and to be the glory of thy people Israel.

*Deus misereatur nostri.*

GOd be mercifull unto us, and blesse us, and shew us the light of his countenance, and be mercifull unto us.

That thy way may be knowne upon earth:

earth: and thy saving health among all nations.

Let the people praise thee, O God: yea, let all the people praise thee.

O let the nations rejoyce and be glad: for thou shalt judge the folke righteously, and governe the nations upon earth.

Let the people praise thee, O God: let all the people praise thee.

Then shall the earth bring forth her increase: and God, even our owne God, shall give us his blessing.

God shall blesse us: and all the ends of the world shall feare him.

Glory be to the Father, &c.

As it was, &c.

*A Collect.*

O God from whom all holy desires, all good counsels, and all just works doe proceed, give unto thy servants that peace which the world cannot give: that both our hearts may be set to obey thy commandements, and also that by thee wee being defended from the feare of our enemies, may passe our time in rest and quietnesse, through the merits of Jesus Christ our Saviour. Amen.

*A Collect for aid against all perils.*

Lighten our darknesse, wee beseech thee, O Lord, and by thy great mercy defend us from all perils and dangers of this night, for the love of thy onely Son, our Saviour Jesus Christ. Amen.

*Quicunque vult.*

WHosoever will be saved, before all things it is necessary that he hold the Catholike faith.

Which faith, except every one doe keepe holy and undefiled: without doubt he shall perish everlastingly.

And the Catholike faith is this: that wee worship one God in Trinity, and Trinity in Vnity.

Neither confounding the persons, nor dividing the substance.

For there is one person of the Father another of the Sonne, another of the Holy Ghost.

But the Godhead of the Father, of the Sonne, and of the Holy Ghost, is all one: the glory equall, the majesty coeternall.

Such as the Father is, such is the Son, and such is the holy Ghost.

The Father uncreate, the Sonne uncreate, and the holy Ghost uncreate.

The Father incomprehensible, the Sonne incomprehensible: and the holy Ghost incomprehensible.

The Father eternall, the Son, eternall: and the holy Ghost eternall.

And yet they are not three eternals: but one eternall.

As also there bee not three incomprehensibles, nor three uncreated: but one uncreated, and one incomprehensible.

So likewise the Father is Almighty, the Sonne almighty: and the holy Ghost almighty.

And yet they are not three almightys: but one almighty.

So the Father is God, the Sonne is God: and the holy Ghost is God.

And yet they are not three Gods: but one God.

So likewise the Father is Lord, the Sonne Lord: and the holy Ghost Lord.

And yet not three Lords: but one Lord.

For like as we be compelled by the Christian veritie: to acknowledge every person by himselfe to be God and Lord.

So are we forbidden by the Catholike religion: to say there be three Gods, or three Lords.

The Father is made of none: neither created, nor begotten.

The Sonne is of the Father alone: not made nor created but begotten.

The holy Ghost is of the Father and of the Son: neither made, nor created, nor begotten, but proceeding.

So there is one Father, not three fathers, one Sonne, not three Sonnes: one holy Ghost, not three holy ghosts.

And in this Trinity, none is afore or after other: none is greater or lesse than another.

But the whole three persons be coeternall together: and coequall.

So that in all things, as is aforesaid: the Vnity in Trinity, and the Trinity in Vnity is to be worshipped.

He therefore that will be saved: must thus thinke of the Trinity.

Furthermore it is necessary to everlasting salvation: that hee also believe rightly in the incarnation of our Lord Jesus Christ.

For the right faith is, that we believe and confesse: that our Lord Jesus Christ the Sonne of God is God and man.

God of the substance of the Father, begotten before the world: and man of the substance of his mother, borne in the world.

Perfect God, and perfect man: of reasa-

reasonable soule and humane flesh subsisting.

Equall to the Father, as touching his Godhead: and inferiour to the Father, as touching his man-hood.

Who although hee be God and man: yet he is not two, but one Christ.

One, not by conversion of the Godhead into flesh: but by taking of the manhood into God.

One altogether, not by confusion of substance: but by unity of person.

For as the reasonable soule and flesh is one man: so God and man is one Christ.

Who suffered for our salvation, descended into hell: rose againe the third day from the dead.

He ascended into heaven, hee sitteth on the right hand of the Father, God Almighty: from whence he shall come to judge the quicke and the dead.

At whose comming all men shall rise againe with their bodies: and shall give account for their owne works.

And they that have done good shall goe into life everlasting: and they that have done evill, into everlasting fire.

This is the Catholike faith, which except a man believe faithfully, he cannot be saved.

Glory be to the Father, &c.
As it was, &c.

# The Letany.

O God the Father of heaven, have mercy upon us miserable sinners.

*O God the Father, &c.*

O God the Sonne, Redeemer of the world: have mercy upon us miserable sinners.

*O God the Sonne, Redeemer, &c.*

O God the Holy Ghost, proceeding from the Father and the Sonne: have mercy upon us miserable sinners.

*O God the holy Ghost proceeding, &c.*

O holy, blessed, and glorious Trinity, three persons and one God: have mercy upon us miserable sinners.

*O holy, blessed, and glorious Trinity, &c.*

Remember not Lord our offences, nor the offences of our forefathers, neither take thou vengeance of our sinnes: spare us good Lord, spare thy people, whom thou hast redeemed with thy most precious bloud, and be not angry with us for ever.

*Spare us good Lord.*

From all evill and mischiefe, from sin, from the crafts and assaults of the devill, from thy wrath, and from everlasting damnation.

*Good Lord deliver us.*

From all blindnesse of heart, from pride, vainglory and hypocrisie, from envy, hatred and malice, and all uncharitablenesse:

*Good Lord deliver us.*

From fornication and all other deadly sin, and from all the deceits of the world, the flesh, and the devill.

*Good Lord deliver us.*

From lightning and tempest, from plague, pestilence and famine, from battell and murder, and from sudden death.

*Good Lord deliver us.*

From all sedition and privie conspiracy, from all false doctrin and heresie, from hardnesse of heart, and contempt of thy Word and Commandement.

*Good Lord deliver us.*

By the mystery of thy holy incarnation, by thy holy nativity and circumcision, by thy baptisme, fasting and temptation.

*Good Lord deliver us.*

By thine agony and bloudy sweat, by thy crosse and passion, by thy precious death and burial, by thy glorious resurrection and ascention, and by the comming of the holy Ghost.

*Good Lord deliver us.*

In all time of our tribulation, in all time of our wealth, in the houre of death, and in the day of judgement.

*Good Lord deliver us.*

We sinners doe beseech thee to heare us (O Lord God) and that it may please thee to rule & governe thy holy Church universally in the right way.

*We beseech thee to heare us good Lord.*

That it may please thee to keepe and strengthen in the true worshipping of thee, in righteousnesse and holinesse of

life

lise, thy servant *Charles*, our most gracious King and Governour.

*We beseech thee to heare us good Lord.*

That it may please thee to rule his heart in thy faith, feare, and love, and that he may alwayes have affiance in thee, and ever seke thine honour and glory.

*We beseech thee to heare us good Lord.*

That it may please thee to be his defender and keeper: giving him the victory over all his enemies.

*We beseech thee to heare us good Lord.*

That it please thee to blesse and preserve our gracious Queene *Mary*, Prince *Charles*, and the rest of the King and Queenes royall issue.

*We beseech thee to heare us good Lord.*

That it may please thee to illuminate all Bishops, Pastors, and Ministers of the Church, with true knowledge and understanding of thy word, and that both by their preaching and living, they may set it forth and shew it accordingly.

*We beseech thee to heare us good Lord.*

That it may please thee to endue the Lords of the Councell, and all the Nobility, with grace, wisdome, and understanding.

*We beseech thee to heare us good Lord.*

That it may please thee to blesse and keepe the Magistrates, giving them grace to execute justice, and to maintaine truth.

*We beseech thee to heare us good Lord.*

That it may please thee to blesse and keepe all thy people.

*We beseech thee to heare us good Lord.*

That it may please thee to give to all Nations, unity, peace, and concord.

*We beseech thee to heare us good Lord.*

That it may please thee to give us an heart to love and dread thee, and diligently to live after thy Commandements.

*We beseech thee to heare us good Lord.*

That it may please thee to give to all thy people increase of grace, to heare meekly thy Word, and to receive it with pure affection, and to bring forth the fruits of the spirit.

*We beseech thee to heare us good Lord.*

That it may please thee to bring into the way of truth, all such as have erred, and are deceived.

*We beseech thee to heare us good Lord.*

That it may please thee to strengthen such as doe stand, and to comfort and helpe the weake hearted, and to raise up them that fall, and finally, to beat downe Satan under our feet.

*We beseech thee to heare us good Lord.*

That it may please thee to succour helpe, and comfort all that be in danger, necessity, and tribulation.

*We beseech thee to heare us good Lord.*

That it may please thee to preserve all that travell by land or by water, all women labouring of childe, all sicke persons and young children, and to shew thy pity upon all prisoners and captives.

*We beseech thee to heare us good Lord.*

That it may please thee to defend and provide for the fatherlesse children and widowes, and all that bee desolate and oppressed.

*We beseech thee to heare us good Lord.*

That it may please thee to have mercy upon all men.

*We beseech thee to heare us good Lord.*

That it may please thee to forgive our enemies, persecutors, and slanderers, and to turne their hearts.

*We beseech thee to heare us good Lord.*

That it may please thee to give and preserve to our use the kindly fruits of the earth, so as in due time we may enjoy them.

*We beseech thee to heare us good Lord.*

That it may please thee to give us true repentance, to forgive us all our sinnes, negligences, and ignorances, and to endue us with the grace of thy holy spirit, to amend our lives according to thy holy word.

*We beseech thee to heare us good Lord.*

Son of God we beseech thee to heare us.

*Son of God we beseech thee to heare us.*

O Lambe of God that takest away the sinnes of the world.

*Grant us thy peace.*

O Lambe of God that takest away the sinnes of the world.

*Have mercy upon us.*

O Christ heare us.

*O Christ heare us.*

Lord have mercy upon us.

*Lord have mercy upon us.*

Christ have mercy upon us.

*Christ have mercy upon us.*

Lord have mercy upon us.

*Lord have mercy upon us.*

Our Father which art in heaven, &c.

And lead us not into temptation.

But deliver us from evill, Amen.

*The Versicle.*

O Lord deale not with us after our sinnes.

*The Answere.*

Neither reward us after our iniquities.

*Let us pray.*

O God, mercifull Father, that despisest not the sighing of a contrite heart,

heart, nor the desire of such as bee sorrowfull, mercifully assist our prayers that wee make before thee, in all our troubles and adversities, whensoever they oppresse us, and graciously heare us: that those evils which the craft and subtilty of the devill or man worketh against us, be brought to nought, and by the providence of thy goodnesse they may be dispersed: that we thy servants being hurt by no persecutions, may evermore give thanks unto thee in thy holy Church, through Jesus Christ our Lord.

*O Lord arise, helpe us, and deliver us, for thy Names sake.*

O God, we have heard with our eares, and our Fathers have declared unto us, the noble works that thou didst in their dayes and in the old time before them.

*O Lord arise, helpe us, and deliver us, for thine honour.*

Glory be to the Father and to the, &c. As it was in the beginning is now, &c.

From our enemies defend us, O Christ.

*Graciously looke upon our afflictions.*

Pitifully behold the sorrowes of our hearts.

*Mercifully forgive the sins of thy people.*

Favourably with mercy heare our prayers

*O Sonne of David have mercy upon us.*

Both now and ever vouchsafe to heare us, O Christ.

*Graciously heare us O Christ, graciously heare us O Lord Christ.*

*The Versicle.*

O Lord let thy mercy be shewed upon us

*The Answer.*

As we doe put our trust in thee.

*Let us pray.*

WE humbly beseech thee, O Father, mercifully to looke upon our infirmities, and for the glory of thy Names sake, turne from us all those evils that we most righteously have deserved: and grant that in all our troubles we may put our whole trust and confidence in thy mercy, and evermore serve thee in holinesse and pureness of living, to thy honour and glory, through our onely Mediatour and Advocate, Jesus Christ our Lord, Amen.

*A Prayer for the Kings Majestie.*

O Lord our heavenly Father, high and mighty King of Kings, Lord of Lords, the onely Ruler of Princes, which dost from thy throne behold all the dwellers upon earth, most heartily we beseech thee with thy favour to behold our most gracious soveraigne Lord, King *Charles*, and so replenish him with the grace of thy holy spirit, that he may alway incline to thy will, and walke in thy way: endue him plentifully with heavenly gifts, grant him in health and wealth long to live, strengthen him that hee may vanquish and overcome all his enemies, and finally after this life, hee may attaine everlasting joy and felicity, through Jesus Christ our Lord, Amen.

*A Prayer for the Queene, Prince Charles, and the rest of the royall Progeny.*

ALmighty God, the fountaine of all goodnesse, we humbly beseech thee to blesse our most gracious Queene *Mary*, our hopeful Prince *Charles*, with the rest of the royall Progeny, the Lady *Elizabeth* the Kings onely sister, with her princely issue: endue them with thy holy Spirit, enrich them with thy heavenly grace, prosper them with all happinesse, and bring them to thine everlasting Kingdome, through Jesus Christ our Lord, Amen.

ALmighty and everlasting God, which onely worketh great marvels, send downe upon our Bishops and Curates, and all congregations committed to their charge, the healthfull spirit of thy grace. And that they may truly please thee, powre upon them the continuall dew of thy blessing, grant this O Lord, for the honour of our Advocate and Mediator Jesus Christ, Amen.

*A Prayer of Chrysostome.*

ALmighty God, which hast given us grace at this time with one accord to make our common supplications unto thee, and dost promise that when two or three bee gathered together in thy Name, thou wilt grant their requests: fulfill now, O Lord, the desires and petitions of thy servants, as may bee most expedient for them, granting us in this world knowledge of thy truth, and in the world to come life everlasting, Amen.

2 Cor. 13.

THe grace of our Lord Jesus Christ, and the love of God, and the fellowship of the Holy Ghost, be with us all evermore, Amen.

*For raine, if the time require.*

O God, heavenly Father, which by thy Sonne Jesus Christ, hast promised to all them that seeke thy Kingdome, and the righteousnesse thereof, all things necessary to their bodily sustenance: send us we beseech thee, in this our necessity such moderate raine and showers, that we may receive the fruits of the earth, to our comfort, and to thy honour, through Iesus Christ our Lord, Amen.

*For faire weather.*

O Lord God, which for the sinne of man diddest once drowne all the world except eight persons, and afterward of thy great mercy diddest promise never to destroy it so againe: we humbly beseech thee, that although we for our iniquities have worthily deserved this plague of raine and water, yet upon our true repent nce thou wilt send us such weather, whereby we may receive the fruits of the earth in due season, and learne both by thy punishment to amend our lives, and for thy clemency to give thee praise and glory, through Jesus Christ our Lord, Amen.

*In the time of dearth and famine.*

O God, heavenly Father, whose gift it is that the raine doth fall, the earth is fruitfull, beasts increase, and fishes doe multiply, behold, we beseech thee, the afflictions of thy people, and grant that the scarcity and dearth, which we doe now most justly suffer for our iniquity, may through thy goodnesse be mercifully turned into cheapnesse and plenty, for the love of Iesus Christ our Lord, to whom with thee, and the holy Ghost, be praises for evermore, Amen.

*In time of Warre.*

O Almighty God, King of all Kings, and governour of all things, whose power no creature is able to resist, to whom it belongeth justly to punish sinners, and to be mercifull unto them that truly repent, save and deliver us, wee humbly beseech thee, from the hands of our enemies, abate their pride, asswage their malice, and confound their devises, that we being armed with thy defence, may be preserved evermore from all perils, to glorifie thee, which art the onely giver of all victory, through the merits of thy onely Sonne Jesus Christ our Lord. Amen.

*In a time of any common plague or sickenesse.*

O Almighty God, which in thy wrath, in the time of King David, diddest slay with the plague of pestilence, threescore and ten thousand, and yet remembring thy mercy, diddest save the rest; have pity upon us miserable sinners, that now are visited with great sickenesse and mortality, that like as thou diddest then command thine Angell to cease from punishing, so it may please thee to withdraw from us this plague and grievous sickenesse, through Jesus Christ our Lord, Amen.

O God, whose nature and property is, ever to have mercie and to forgive, receive our humble petitions, and though we be tied and bound with the chaine of our sinnes, yet let the pitifulnesse of thy great mercy loose us, for the honour of Jesus Christ sake, our Mediator and Advocate, Amen.

*A Thanksgiving for Raine.*

O God, our heavenly Father, who by thy gracious providence doth cause the former and the latter raine to descend upon the earth, that it may bring forth fruit for the use of man: We give thee humble thanks, that it hath pleased thee in our greatest necessity, to send us at the last a joyfull raine upon thine inheritance, and to refresh it when it was dry, to the great comfort of us thy unworthy servants, and to the glory of thy holy Name, through thy mercies in Jesus Christ our Lord. Amen.

*A Thanksgiving for faire weather.*

O Lord God, who hast justly humbled us by the late plague of immoderate raine and waters, and in thy mercy hast relieved and comforted our soules by this seasonable and blessed change of weather: we praise and glorifie thy holy Name for this thy mercy, and will alwayes declare thy loving kindnesse from generation to generation, through Jesus Christ our Lord, Amen.

*A Thanksgiving for Health.*

O Most mercifull Father, which of thy gracious goodnesse hast heard the

the devout prayers of thy Church, and turned our dearth and ſcarcity, into cheapneſſe and plenty, we give thee humble thankes for this thy ſpeciall bounty, beſeeching thee to continue this thy loving kindneſſe unto us, that our land may yeeld us her fruits of increaſe, to thy glory, and our comfort, through Jeſus Chriſt our Lord, Amen.

*A Thankſgiving for peace and victory.*

OAlmighty God, which art a ſtrong Tower of defence unto thy ſervants, againſt the face of their enemies, wee yeeld thee praiſe and thankſgiving for our deliverance from thoſe great and apparant dangers, wherewith wee were compaſſed. We acknowledge it thy goodneſſe, that wee were not delivered over as a prey unto them, beſeeching thee ſtill to continue ſuch thy mercies towards us, that all the world may know that thou art our Saviour and mighty deliverer, through Jeſus Chriſt our Lord, Amen.

*A Thankſgiving for deliverance from the Plague.*

OLord God, which haſt wounded us for our ſinnes, and conſumed us for our tranſgreſſions, by thy late heavie and dreadfull viſitation, and now in the middeſt of judgement remembring mercie, haſt redeemed our ſoules from the jawes of death; We offer unto thy fatherly goodneſſe, our ſelves, our ſoules and bodies, which thou haſt delivered, to be a living ſacrifice unto thee, alwayes praiſing and magnifying thy mercies in the middeſt of thy congregation, through Jeſus Chriſt our Lord, Amen.

*Or this.*

WE humbly acknowledge before thee (O moſt mercifull Father) that all the puniſhments which are threatned in thy Law, might juſtly have fallen upon us by reaſon of our manifold tranſgreſſions, and hardneſſe of heart: yet ſeeing it hath pleaſed thee of thy tender mercy, upon our weakeand unworthy humiliation, to aſſwage the noyſom peſtilence, wherewith we lately have beene ſore afflicted, and to reſtore the voyce of joy and health into our dwellings: wee offer unto thy divine Majeſtie, the ſacrifice of praiſe and thankſgiving: landing and magnifying thy glorious name, for ſuch thy preſervation and providence over us, through Jeſus Chriſt our Lord, Amen.

# The Catechiſme.

*Queſtion.*

WHat is your Name?

*Anſwer.*

N. or M.

*Queſtion.*

Who gave you this Name?

*Anſwer.*

My God-fathers and God-mothers in my baptiſme, wherin I was made a member of Chriſt, the childe of God, and an inheritour of the Kingdome of Heaven.

*Queſt.*

What did your God-fathers and God-mothers then for you?

*Anſwer.*

They did promiſe and vow three things in my name. Firſt, that I ſhould forſake the devill and all his works, the pomps and vanities of this wicked world, and all the ſinfull luſts of the fleſh. Secondly, that I ſhould beleeve all the Articles of the Chriſtian faith. And thirdly, that I ſhould keepe Gods holy will and Commandements, and walke in the ſame all the dayes of my life.

*Queſtion.*

Doeſt thou not thinke that thou art bound to beleeve, and to doe as they have promiſed for thee?

*Anſwer.*

Yes verily, and by Gods helpe ſo I will. And I heartily thanke our heavenly Father, that hee hath called me to this ſtate of ſalvation, through Jeſus Chriſt our Saviour. And I pray God to give me his grace, that I may continue in the ſame unto my lives end.

*Queſt.*

*Question.*

Rehearse the Articles of thy Beliefe.

*Answ.*

I Believe in God the Father Almighty, maker of heaven and earth. And in Jesus Christ his onely Sonne our Lord, which was conceived by the holy Ghost, borne of the Virgin Mary, suffered under Pontius Pilate, was crucified, dead and buried, he descended into hell, the third day he rose againe from the dead, he ascended into heaven, and sitteth at the right hand of God, the Father Almighty, from thence he shall come to judge both the quicke and the dead. I believe in the holy Ghost, the holy Catholike Church, the Communion of Saints, the forgivenesse of sinnes, the resurrection of the body, and the life everlasting. Amen.

*Question.*

What dost thou chiefly learne in these Articles of thy Beliefe?

*Answer.*

First, I learne to believe in God the Father, who hath made me and all the world.

Second'y, in God the Sonne, who hath redeemed me, and all mankinde.

Thirdly, in God the holy Ghost, who sanctifieth me, and all the elect people of God.

*Question.*

You said, that your God-fathers and God-mothers did promise for you, that you should keepe Gods Commandements, tell mee how many there bee.

*Answer.*

Ten.

*Question.*

Which be they?

*Answer.*

THe same which God spake in the xx. Chapter of Exodus, saying, I am the Lord thy God, which have brought thee out of the land of Egypt, out of the house of bondage.

1. Thou shalt have no other Gods but me.

2. Thou shalt not make to thy selfe any graven Image, nor the likenesse of any thing that is in heaven above, or in the earth beneath, or in the water under the earth, Thou shalt not bow downe to them nor worship them, for I the Lord thy God am a jealous God, and visit the sinnes of the fathers upon the children, unto the third and fourth generation of them that hate me, and shew mercy unto thousands in them that love mee, and keepe my Commandements.

3 Thou shalt not take the Name of the Lord thy God in vaine, for the Lord will not hold him guiltlesse that taketh his Name in vaine.

4 Remember that thou keepe holy the Sabbath day. Six dayes shalt thou labour and doe all that thou hast to doe, but the seventh day is the Sabbath of the Lord thy God. In it thou shalt doe no manner of worke, thou and thy Sonne and thy daughter, thy man-servant, and thy maid-servant, thy cattell and thy stranger that is within thy gates: for in six dayes the Lord made heaven and earth, the sea, and all that in them is, and rested the seventh day. Wherefore the Lord blessed the seventh day, and hallowed it.

5 Honour thy father and thy mother, that thy dayes may be long in the land which the Lord thy God giveth thee.

6 Thou shalt doe no murder.

7 Thou shalt not commit adultery.

8 Thou shalt not steale.

9 Thou shalt not beare false witnesse against thine neighbour.

10 Thou shalt not covet thy neighbours house, thou shalt not covet thy neighbours wife, nor his servant, nor his maid, nor his oxe, nor his asse, nor any thing that is his.

*Quest.*

What doest thou chiefely learne by these Commandements?

*Answ.*

I learne two things: My duty towards God, and my duty towards my neighbour.

*Quest.*

What is thy duety towards God?

*Answ.*

My duty towards God, is to believe in him, to feare him, and to love him with all my heart, with all my mind, with all my soule, and with all my strength, to worship him, to give him thanks, to put my whole trust in him, to call upon him, to honour his holy Name, and his Word, and to serve him truly all the dayes of my life.

*Quest.*

What is thy duty towards thy neighbour?

*Answ.*

My duty towards my neighbour, is to love him as my selfe, and to doe to all men, as I would they should doe to me. To love, honour, and succour my father and mother. To honour and obey the King and his Ministers. To submit my selfe to all my governours, teachers, spirituall

spirituall Pastours, and Masters, to order my selfe lowly and reverently to all my betters. To hurt no body by word, or deed. To be true and just in all my dealings. To beare no malice nor hatred in my heart. To keepe my hands from picking and stealing, and my tongue from evill speaking, lying and slandering. To keepe my body in temperance, sobernesse, and chastity. Not to covet nor desire other mens goods, but to learne and labour truly to getmine owne living, and to doe my duty in that state of life unto the which it shall please God to call me.

*Quest.*

My good childe know this, that thou art not able to doe these things of thy selfe, nor to walke in the Commandements of God, and to serve him, without his speciall grace, which thou must learne at all times to call for by diligen prayer: Let mee heare therefore if thou canst say the Lords prayer.

*Answ.*

OVr Father which art in heaven, hallowed be thy Name. Thy kingdome come. Thy will bee done in earth as it is in heaven. Give us this day our daily bread. And forgive us our trespasses, as wee forgive them that trespasse against us. And lead us not into temptation, but deliver us from evill. Amen.

*Quest.*

What desirest thou of God in this prayer?

*Answ.*

I desire my Lord God our heavenly Father, who is the giver of all goodnesse, to send his grace unto me, and to all people, that we may worship him, serve him, and obey him, as we ought to doe. And I pray unto God, that he will send us all things that bee needfull both for our soules and bodies, and that hee will be mercifull unto us, and forgive us our sinnes, and that it will please him to save and defend us in all dangers ghostly and bodily, and that he will keep us from all sinne and wickednesse, and from our ghostly enemie, and from everlasting death. And this I trust he will doe of his mercy and goodnesse, through our Lord Jesus Christ. And therefore I say, Amen. So be it.

*Quest.*

HOw many Sacraments hath Christ ordained in his Church?

*Answ.*

Two onely, as generally necessary to salvation, that is to say, Baptisme, and the Supper of the Lord.

*Quest.*

What meanest thou by this word Sacrament?

*Answ.*

I meane an outward and visible signe of an inward and spirituall grace, given unto us, ordained by Christ himselfe, as a meanes whereby we receive the same, and a pledge to assure us thereof.

*Quest.*

How many parts be there in a Sacrament?

*Answ.*

Two; the outward visible signe, and the inward spirituall grace.

*Quest.*

What is the outward visible signe or forme in Baptisme?

*Answ.*

Water, wherein the person baptised is dipped or sprinkled with it: In the Name of the Father, and of the Sonne, and of the Holy Ghost.

*Quest.*

What is the inward and spirituall grace?

*Answ.*

A death unto sinne, and a new birth unto righteousnesse: for being by nature borne in sinne, and the children of wrath, we are hereby made the children of grace.

*Quest.*

What is required of persons to bee baptized?

*Answ.*

Repentance, whereby they forsake sinne: and Faith, whereby they stedfastly beleeve the promises of God made to them in that Sacrament.

*Quest.*

Why then are infants baptized, when by reason of their tender age they cannot performe them?

*Answ.*

Yes: they doe performe them by their Sureties: who promise and vow them both in their names: which when they come to age, themselves are bound to performe.

*Quest.*

Why was the Sacrament of the Lords Supper ordained?

*Answ.*

For the continuall remembrance of the sacrifice of the death of Christ, and the benefits which wee receive thereby.

*Quest.*

What is the outward part or signe of the Lords Supper?

*Answ.*

*Answ.*

Bread and Wine, which the Lord hath commanmanded to be received.

*Quest.*

What is the inward part or thing signified?

*Answ.*

The Body and Bloud of Christ, which are verily and indeed taken and received of the faithfull in the Lords Supper.

*Quest.*

What are the benefits whereof wee are partakers thereby?

*Answ.*

The strengthening and refreshing of our soules by the Body and Bloud of Christ, as our bodies are by the Bread and Wine.

*Quest.*

What is required of them which come to the Lords Supper?

*Answ.*

To examine themselves, whether they repent them truly of their former sins, stedfastly purposing to lead a new life: to have a lively faith in Gods mercy through Christ, with a thankefull remembrance of his death, and to be in charity with all men.

# THE PSALMES OF *DAVID*.

*Beatus vir.* *Psal. j.* } *Morning prayer.*

BLessed is the man that hath not walked in the counsell of the ungodly, nor stood in the way of sinners: and hath not sit in the seat of the scornfull.

2 But his delight is in the Law of the Lord: and in his law will he exercise himself: day and night.

3 And he shall be like a tree planted by the waters side: that will bring forth his fruit in due season.

4 His leafe also shall not wither: and looke whatsoever he doth, it shall prosper.

5 As for the ungodly, it is not so with them: but they are like the chaffe which the wind scattereth away from the face of the earth.

6 Therefore the ungodly shall not be able to stand in the judgement: neither the sinners in the congregation of the righteous.

7 But the Lord knoweth the way of the righteous: and the way of the ungodly shall perish.

*Quare fremuerunt. Psal. ij.*

WHy doe the heathen so furiously rage together? and why doe the people imagine a vaine thing?

2 The Kings of the earth stand up, and the Rulers take counsell together: against the Lord, and against his anointed.

3 Let us breake their bonds asunder: and cast away their cords from us.

4 He that dwelleth in heaven shall laugh them to scorne: the Lord shall have them in derision.

5 Then shall he speake to them in his wrath: and vex them in his sore displeasure.

6 Yet have I set my King: upon my holy hill of Sion.

7 I will preach the Law, whereof the Lord hath said unto me: Thou art my Sonne, this day have I begotten thee.

8 Desire of me, and I will give thee the heathen for thine inheritance: and the uttermost parts of the earth for thy possession.

9 Thou shalt bruise them with a rod of iron: and breake them in peeces like a potters vessell.

10 Be wise now therefore, O ye Kings: bee learned, ye that be Judges of the earth.

11 Serve the Lord with feare, and rejoyce unto him with reverence.

12 Kisse the Sonne, lest he be angry: and so ye perish from the right way: if his wrath be kindled, (but a little,

blessed

blessed are all they that put their trust in him.

*Domine quidmultiplicati? Psal. iij.*

LOrd how are they increased that trouble mee: many are they that rise against me.

2 Many one there be that say of my soule: there is no helpe for him in his God.

3 But thou, O Lord, art my defender: thou art my worship, and the lifter up of my head.

4 I did call upon the Lord with my voice: & he heard me out of his holy hill.

5 I laid me downe and slept, and rose up againe: for the Lord sustained me.

6 I will not be afraid for ten thousands of people: that have set themselves against me roundabout.

7 Vp Lord, and helpe me, O my God: for thou smitest all mine enemies upon the cheeke bone: thou hast broken the teeth of the ungodly.

8 Salvation belongeth to the Lord: and thy blessing is upon thy people.

*Cum invocarem. Psal. iv.*

HEare me when I call, O God of my righteousnesse: for thou hast set mee at liberty when I was in trouble, have mercy upon me, and hearken unto my prayer.

2 O ye sonnes of men, how long will ye blaspheme mine honour: and have such pleasure in vanity, and seeke after leasing?

3 Know this also, that the Lord hath chosen to himself the man that is godly: when I call upon the Lord, he will heare me.

4 Stand in awe, and sinne not: commune with your owne heart, and in your chamber, and be still.

5 Offer the sacrifice of righteousnesse: and put your trust in the Lord.

6 There be many that say: Who will shew us any good.

7 Lord lift thou up the light of thy countenance upon us.

8 Thou hast put gladnesse in my heart: since the time that their corne, and wine, and oyle increased.

9 I will lay mee downe in peace, and take my rest: for it is thou Lord onely that makest mee dwell in safety.

*Verba mea auribus. Psal. v.*

POnder my words, O Lord: consider my meditation.

2 O hearken thou unto the voice of my calling, my King and my God: for unto thee will I make my prayer.

3 My voice shalt thou heare betimes, O Lord: early in the morning will I direct my prayer unto thee, & will look up.

4 For thou art the God that hast no pleasure in wickednesse: neither shall any evill dwell with thee.

5 Such as be foolish shall not stand in thy sight: for thou hatest all them that worke vanity.

6 Thou shalt destroy them that speake leasing: the Lord will abhorre both the bloud-thirstie and deceitfull man.

7 But as for me, I will come into thy house, even upon the multitude of thy mercies: and in thy feare will I worship toward thy holy temple.

8 Lead me, O Lord, in thy righteousnesse, because of mine enemies: make thy way plaine before my face.

9 For there is no faithfulnesse in his mouth: their inward parts are very wickednesse.

10 Their throat is an open sepulchre: they flatter with their tongue.

11 Destroy thou them, O God, let them perish through their owne imagination: cast them out in the multitude of their ungodlinesse, for they have rebelled against thee.

12 And let all them that put their trust in thee, rejoyce: they shall ever be giving of thanks, because thou defendest them: they that love thy Name, shall be joyfull in thee.

13 For thou Lord wilt give thy blessing unto the righteous: and with thy favourable kindnesse wilt thou defend him, as with a shield.

*Domine ne in furore? Psal vj.* } *Evening Prayer.*

O Lord rebuke me not in thine indignation: neither chasten me in thy displeasure.

2 Have mercy upon me, O Lord, for I am weake: O Lord heale me, for my bones are vexed.

3 My soule is also sore troubled: but Lord, how long wilt thou punish me?

4 Turne thee, O Lord, and deliver my soule: O save me for thy mercies sake.

5 For in death no man remembreth thee: and who will give thee thanks in the pit?

6 I am wearie of my groaning, every night wash I my bed: and water my couch with my teares.

7 My beauty is gone for very trouble:

and

and worne away because of all mine enemies.

8 Away from me all yee that worke vanity: for the Lord hath heard the voice of my weeping.

9 The Lord hath heard my petition: the Lord will receive my prayer.

10 All mine enemies shall bee confounded and sore vexed: they shall bee turned backe, and put to shame suddenly.

*Domine Deus meus in.* Psal. vij.

O Lord my God, in thee have I put my trust: save mee from all them that persecute me, and deliver me.

2 Lest he devoure my soule like a Lyon, and teare it in peeces: while there is none to helpe.

3 O Lord my God, if I have done any such thing: or if there be any wickednesse in my hands.

4 If I have rewarded evill unto him that dealt friendly with me: yea, I have delivered him that without any cause is mine enemie.

5 Then let mine enemie persecute my soule, and take mee: yea, let him tread my life downe upon the earth, and lay mine honour in the dust.

6 Stand up, O Lord, in thy wrath, and lift up thy selfe: because of the indignation of mine enemies, arise up for me in the judgement that thou hast commanded.

7 And so shall the congregation of the people come about thee: for th it sake therefore lift up thy selfe againe.

8 The Lord shall judge the people, give sentence with me, O Lord: according to my righteousnesse, and according to the innocencie that is in me.

9 O let the wickednesse of the ungodly come to an end: but guide thou the just.

10 For the righteous God tryeth the very hearts and reines.

11 My help commeth of God: which preserveth them that are true of heart.

12 God is a righteous judge, strong and patient: and God is provoked every day.

13 If a man will not turne, hee will whet his sword: he hath bent his bow, and made it ready.

14 He hath prepared for him the instruments of death: he ordaineth his arrowes against the persecutors.

15 Behold he travelleth with mischiefe: he hath conceived sorrow, and brought forth ungodlinesse.

16 Hee hath graven and digged up a pit: and is fallen himselfe into the destruction that he made for others.

17 For his trowell shall come upon his head: and his wickednesse shall fall upon his owne pate.

18 I will give thanks unto the Lord, according to his righteousnesse: and will praise the Name of the Lord the most High.

*Domine Dominus noster.* Psal. viij.

O Lord our Governour, how excellent is thy Name in all the world: thou that hast set thy glory above the heavens.

2 Out of the mouth of very babes and sucklings hast thou ordained strength, because of thy enemies: that thou mightest still the enemie and avenger.

3 For I will consider the heavens, even the works of thy fingers: the Moone and the Starres which thou hast ordained.

4 What is man, that thou art mindfull of him: and the sonne of man, that thou visitest him?

5 Thou madest him lower than the Angels: to crowne him with glory and worship.

6 Thou madest him to have dominion of the works of thy hands: and hast put all things in subjection under his feet.

7 All sheepe and oxen: yea, and the beasts of the field.

8 The fowles of the aire, and the fishes of the Sea: and whatsoever walketh through the paths of the Seas.

9 O Lord our Governour, how excellent is thy Name in all the world.

*Confitebor tibi.* Psal. ix. } *Morning Prayer.*

I Will give thanks unto thee, O Lord, with my whole heart: I will speake of thy marvellous works.

2 I will be glad and rejoyce in thee: yea, my songs will I make of thy Name, O thou most High.

3 While mine enemies are driven backe: they shall fall and perish at thy presence.

4 For thou hast maintained my right and my cause: thou art set in the throne that judgest right.

5 Thou hast rebuked the heathen, and destroyed the ungodly: thou hast put out their Name for ever and ever.

6 O thou enemy, destructions are come to a perpetuall end: even as the Cities

which

which thou hast destroyed, their memoriall is perished with them.

7 But the Lord shall endure for ever, he hath also prepared his seat for judgement.

8 For he shall judge the world in righteousnesse: and minister true judgement unto the people.

9 The Lord also will be a defence for the oppressed: even a refuge in due time of trouble.

10 And they that know thy Name, will put their trust in thee: for thou Lord hast never failed them that seeke thee.

11 O praise the Lord which dwelleth in Sion: shew the people of his doings.

12 For when he maketh inquisition for bloud, he remembreth them, and forgetteth not the complaint of the poore.

13 Have mercy upon mee, O Lord, consider the trouble which I suffer of them that hate me: thou that liftest me up from the gates of death.

14 That I may shew all thy praises within the ports of the daughter of Sion: I will rejoyce in thy salvation.

15 The heathen are sunke downe in the pit that they made: in the same net which they hid privily, is their own foot taken.

16 The Lord is knowne to execute judgement: the ungodly is trapped in the worke of his owne hands.

17 The wicked shall bee turned into hell: and all the people that forget God.

18 For the poore shall not alway bee forgotten: the patient abiding of the meeke shall not perish for ever.

19 Up Lord, and let not man have the upper hand: let the heathen be judged in thy sight.

20 Put them in feare, O Lord: that the heathen may know themselves to be but men.

### *Ut quid Domine.* Psal. X.

WHy standst thou so farre off, O Lord: and hidest thy face in the needfull time of trouble.

2 The ungodly for his owne lust doth persecute the poore: let them be taken in the crafty wilinesse that they have imagined.

3 For the ungodly hath made boast of his owne hearts desire: and speaketh good of the covetous, whom God abhorreth.

4 The ungodly is so proud, that hee careth not for God: neither is God in all his thoughts.

5 His wayes are alwayes grievous, thy judgements are farre above, out of his sight: and therefore defieth he all his enemies.

6 For he hath said in his heart, Tush, I shall never be cast downe: there shall no harme happen unto me.

7 His mouth is full of cursing, deceit, and fraud: under his tongue is ungodlinesse and vanity.

8 He sitteth lurking in the theevish corners of the streets: and privily in his lurking dens doth he murther the innocent, his eyes are set against the poore.

9 For hee lyeth waiting secretly, even as a Lion lurketh in his den: that hee may ravish the poore.

10 He doth ravish the poore: when he getteth him into his net.

11 He falleth downe and humbleth himselfe, that the congregation of the poore may fall into the hands of his captaines.

12 He hath said in his heart, Tush God hath forgotten: he hideth away his face, and he will never see it.

13 Arise, O Lord, and lift up thine hand: forget not the poore.

14 Wherefore should the wicked blaspheme God: while he doth say in his heart, Tush, thou God, careest not for it.

15 Surely thou hast seene it: for thou beholdest ungodlinesse and wrong.

16 That thou maist take the matter into thy hand: the poore committeth himselfe unto thee, for thou art the helper of the friendlesse.

17 Breake thou the power of the ungodly, and malitious: take away his ungodlinesse, and thou shalt finde none.

18 The Lord is King for ever and ever: and the heathen are perished out of the land.

19 Lord thou hast heard the desire of the poore, thou preparest their heart, and thine eare heareth thereto.

20 To help the fatherlesse and poore unto their right, that the man of the earth be no more exalted against them.

### *In Domino confide.* Psal. xj.

IN the Lord put I my trust, how say you then to my soule, that she should flee as a bird to the hill.

2 For the ungodly bend their bow, and make ready their arrowes within the quiver: that they may privily shoot at them that are true of heart.

3 For the foundations will be cast downe

downe: and what hath the righteous done?

4 The Lord is in his holy Temple: the Lords seat is in heaven.

5 His eyes consider the poore: and his eye-lids try the children of men.

6 The Lord alloweth the righteous, but the ungodly, and him that delighteth in wickednesse doth his soule abhorre.

7 Vpon the ungodly he shall raine snares, fire and brimstone, storme and tempest: this shall bee their portion to drinke.

8 For the righteous Lord loveth righteousnesse, his countenance will behold the thing that is just.

*Saluum me fac.* } { *Euening*
*Psal. xij.* } { *prayer.*

HElpe me Lord, for there is not one godly man left: for the faithfull are minished from among the children of men.

2 They talke of vanity, every one with his neighbour: they doe but flatter with their lips, and dissemble with their double heart.

3 The Lord shall root out all deceitfull lips: and the tongue that speaketh proud things.

4 Which have said; With our tongue we will prevaile: woe are they that ought to speake. Who is Lord over us?

5 Now for the comfortlesse troubles sake of the needy: and because of the deepe sighing of the poore.

6 I will up (saith the Lord:) and will helpe every one from him that swelleth against him, and will set them at rest.

7 The words of the Lord are pure words: even as the silver which from the earth is tried, and purified seven times in the fire.

8 Thou shalt keep them, O Lord, thou shalt preserve him, from this generation for ever.

9 The ungodly walke on every side: when they are exalted, the children of men are put to rebuke.

*Vsque quo Domine. Psal xiij.*

HOw long wilt thou forget mee, O Lord, for ever: how long wilt thou hide thy face from mee.

2 How long shall I seeke counsell in my soule, and be so vexed in my heart: how long shall mine enemies triumph over me?

3 Consider and heare mee, O Lord, my God: lighten mine eyes, that I sleepe not in death.

4 Lest mine enemie say, I have prevailed against him: for if I be cast down, they that trouble mee will rejoyce at it.

5 But my trust is in thy mercy: and my heart is joyfull in thy salvation.

6 I will sing of the Lord, because he hath dealt so lovingly with me: yea, I will praise the Name of the Lord most highest.

*Dixit insipiens. Psal xiv.*

THe foole hath said in his heart: There is no God.

2 They are corrupt, and become abominable in their doings, there is not one that doth good, no not one.

3 The Lord looked downe from heaven upon the children of men: to see if there were any that would understand and seek after God.

4 But they are all gone out of the way: they are altogether become abominable, there is none that doth good, no not one.

5 Their throat is an open sepulcher, with their tongues have they deceived: the poyson of Aspes is under their lips.

6 Their mouth is full of cursing and bitternesse: their feet are swift to shed bloud.

7 Destruction and unhappinesse is in their wayes, and the way of peace have they not knowne, there is no feare of God before their eyes.

8 Have they no knowledge, that they are all such workers of mischiefe: eating up my people as it were bread.

9 And call not upon the Lord, there were they brought in great feare, even where no feare was: for God is in the generation of the righteous.

10 As for you, yee have made a mocke at the counsell of the poore: because he putteth his trust in the Lord.

11 Who shall give salvation unto Israel, out of Sion: when the Lord turneth the captivity of his people, then shall Jacob rejoyce, and Israel shall bee glad.

*Domine quis.* } { *Morning*
*Psal. xv.* } { *Prayer.*

LOrd, who shall dwell in thy Tabernacle, or who shall rest upon thy holy hill.

2 Even he that leadeth an uncorrupt life: and doth the thing that is right,

and

and ſpeaketh the truth from his heart.

3 He that hath uſed no deceit in his tongue, nor done evill to his neighbour: and hath not ſlandered his neighbour.

4 He that ſetteth not by him ſelfe, but is lowly in his own eyes. and maketh much of them that feare the Lord.

5 He that ſweareth unto his neighbour, and diſappointeth him not: though it were to his own hinderance.

6 He that hath not given his mony upon uſury: nor taken reward againſt the innocent.

7 Whoſo doth theſe things: ſhall never fall.

*Conſerua me.* Pſal. xvi.

PReſerve me, O God: for in thee have I put my truſt.

2 O my ſoule, thou haſt ſaid unto the Lord: thou art my God, my goods are nothing unto thee.

3 All my delight is upon the ſaints that are in the earth: and upon ſuch as excel in vertue.

4 But they that run after another God: ſhall have great trouble.

5 Their drinke offerings of bloud will I not offer: neither make mention of their names within my lips.

6 The Lord himſelfe is the portion of mine inheritance, and of my cup: thou ſhalt maintaine my lot.

7 The lot is fall'en unto me in a faire ground: yea, I have a goodly heritage.

8 I will thank the Lord for giving mee warning: my reins alſo chaſten mee in the night ſeaſon.

9 I have ſet God alwaies before me: for he is on my right hand, therefore I ſhall not fall.

10 Wherefore my heart was glad, and my glory reioyced: my fleſh alſo ſhall reſt in hope.

11 For why? thou ſhalt not leave my ſoul in hell: neither ſhalt thou ſuffer thine Holy one to ſee corruption.

12 Thou ſhalt ſhew me the path of life, in thy preſence is the fulneſſe of ioy: and at thy right hand there is pleaſure for ever more.

*Exaudi Domine iuſtitiam.* Pſal. 17.

HEare the right, O Lord, conſider my complaint: and hearken unto my prayer that goeth not out of feigned lips.

2 Let my ſentence come forth from thy preſence: and let thine eyes look upon the thing that is equall.

3 Thou haſt proved and viſited mine heart in the night ſeaſon, thou haſt tryed me, & ſhalt finde no wickednes in me: for I am utterly purpoſed that my mouth ſhall not offend.

4 Becauſe of mens workes that are done againſt the words of my lips: I have kept me from the waies of the deſtroyer.

5 O hold thou up my goings in thy paths that my foot-ſteps ſlip not.

6 I have called upon thee, O God, for thou ſhalt heare me: incline thine eare to me, and hearken unto my words.

7 Shew thy marvellous loving kindnes, thou that art the Saviour of them which put their truſt in thee: from ſuch as reſiſt thy right hand.

8 Keep me as the apple of an eye: hide me under the ſhadow of thy wings.

9 From the ungodly that trouble mee: mine enemies compaſſe me round about to take away my ſoule.

10 They are incloſed in their own fat: and their mouth ſpeaketh proud things.

11 They lie waiting in our way on every ſide: turning their eyes downe to the ground.

12 Like as a lion that is greedy of his prey: and as it were a lions whelp lurking in ſecret places.

13 Vp Lord, diſappoint him, & caſt him down: deliver my ſoul from the ungodly, which is a ſword of thine.

14 From the men of thy hand, O Lord, from the men, I ſay, & from the evil world: which have their portion in this life, whoſe bellies thou filleſt with thy hid treaſure.

15 They have children at their deſire: and leave the reſt of their ſubſtance for their babes.

16 But as for me, I will behold thy preſence in righteouſneſſe: and when I awake up after thy likeneſſe, I ſhall be ſatisfied with it.

*Diligam te.* Pſal. 18. } *Evening prayer.*

IWill love thee (O Lord) my ſtrength the Lord is my ſtony rocke and my defence: my Saviour, my God, and my might in whom I will truſt, my buckler, the horne alſo of my ſalvation, and my refuge.

2 I will call upon the Lord which is worthy to be praiſed: ſo ſhall I bee ſafe from mine enemies.

3 The ſorrows of death compaſſed mee: and the overflowings of ungodlineſſe made me afraid.

4 The paines of hell came about me:

the snares of death overtooke me.

5 In my trouble I will call upon the Lord: and complaine unto my God.

6 So shal he heare my voice out of his holy temple: and my complaint shal come before him, it shall enter even into his eares.

7 The earth trembled and quaked: the very foundations also of the hills shook, and were removed, because hee was wroth.

8 There went a smoke out of his presence, and a consuming fire out of his mouth, so that coales were kindled at it.

9 He bowed the Heavens also, and came downe: and it was darke under his feet.

10 He rode upon the cherubims, and did flie: he came flying upon the wings of the winde.

11 He made darknesse his secret place: his pavilion round about him, with dark water, and thick clouds to cover him.

12 At the brightnesse of his presence his clouds removed: hailstones and coals of fire.

13 The Lord also thundred out of heaven, and the highest gave his thunder: hailstones and coales of fire.

14 He sent out his arrowes and scattered them: he cast forth lightnings and destroyed them.

15 The springs of waters were seene and the foundations of the round world were discovered at thy chiding, O Lord: at the blasting of the breath of thy displeasure.

16 He shall send downe from on high to fetch me: and shall take me out of many waters.

17 He shall deliver me from my stronge-est enemy, and from them that hate me: for they are too mighty for me.

18 They prevented me in the day of my trouble: but the Lord was my upholder.

19 Hee brought mee forth also into a place of liberty: he brought mee forth, even because he had a favour unto me.

20 The Lord shall reward mee after my righteous dealing: according to the cleannesse of my hands shall hee recompense mee.

21 Because I have kept the wayes of the Lord: and have not forsaken my God as the wicked doth.

22 For I have an eye unto all his lawes: and will not cast out his commandments from me.

23 I was also uncorrupt before him: and eschewed mine owne wickednesse.

24 Therefore shall the Lord reward me after my righteous dealing: and according unto the cleannesse of my hands in his eye-sight.

25 With the holy thou shalt bee holy: and with a perfect man thou shalt be perfect.

26 With the clean thou shalt be clean: and with the froward thou shalt learne frowardnesse.

27 For thou shalt save the people that are in adversity: and shalt bring downe the high lookes of the proud.

28 Thou shalt also light my candle: the Lord my God shall make my darknesse to be light.

29 For in thee I shall discomfit an host of men: and with the helpe of my God I shall leap over the wall.

30 The way of God is an undefiled way: the word of the Lord also is tried in the fire, he is the defender of all them that put their trust in him.

31 For who is God but the Lord: or who hath any strength except our God?

32 It is God that girdeth mee with strength of warre: and maketh my way perfect.

33 He maketh my feet like harts feet: and setteth mee up on high.

34 Hee teacheth mine hands to fight: and mine armes shall breake even a bow of steele.

35 Thou hast given me the defence of thy salvation: thy right hand also shall hold me up, and thy loving correction shall make me great.

36 Thou shalt make roome enough under me for to goe: that my footsteps shal not slid.

37 I will follow upon mine enemies, and overtake them: neither will I turne againe till I have destroyed them.

38 I will smite them that they shall not be able to stand: but fall under my feet.

39 Thou hast girded mee with strength unto the battell: thou shalt throw downe mine enemies under me.

40 Thou hast made mine enemies also to turne their backes upon me: and I shall destroy them that hate me.

41 They shal cry, but there shal be none to help them: yea even unto the Lord shall they crie, but he shall not hear them.

42 I will beat them as small as the dust before the winde: I will cast them out as the clay in the streets.

43 Thou shalt deliver me from the strivings of the people: and thou shalt make me the head of the heathen.

44 A people whom I have not knowne shall serve me.

45 Assoone as they heare of me, they shall obey me: but the strange children shall dissemble with me.

46 The strange children shall fail: and be afraid out of their prisons.

47 The Lord liveth, and blessed be my strong helper: and praised be the God of my salvation.

48 Even the God that seeth that I bee avenged: and subdueth the people unto me.

49 It is he that delivereth me from my (cruell) enemies, and setteth mee up above mine adversaries: thou shalt rid me from the wicked man.

50 For this cause will I give thankes unto thee (O Lord) among the Gentiles: and sing praises unto thy name.

51 Great prosperity giveth hee unto his King: and sheweth loving kindnesse unto David his anointed, and unto his seed for evermore.

*Cæli enarrant.* Psal. xix. } *Morning Prayer.*

THe heavens declare the glory of God: and the firmament sheweth his handy worke.

2 One day telleth another: and one night certifyeth another.

3 There is neither speech nor language: but their voices are heard among them.

4 Their sound is gone out into all lands: and their words into the ends of the world.

5 In them hath he set a tabernacle for the sunne: which commeth forth as a Bridegroome out of his chamber, and rejoyceth as a giant to run his course.

6 It goeth forth from the uttermost part of the heaven, and runneth about unto the end of it againe: and there is nothing hid from the heat thereof.

7 The law of the Lord is an undefiled law, converting the soule: the testimony of the Lord is sure, and giveth wisdome unto the simple.

8 The statutes of the Lord are right, and rejoyce the heart: the commandment of the Lord is pure, and giveth light unto the eyes.

9 The feare of the Lord is cleane, and endureth for ever: the judgements of the Lord are true, and righteous altogether.

10 More to bee desired are they then gold, yea then much fine gold: sweeter also then honey and the honey combe.

11 Moreover by them is thy servant taught: and in keeping of them there is great reward.

12 Who can tell how oft he offendeth? O cleanse thou me from my secret faults.

13 Keep thy servant also from presumptuous sins, lest they get the dominion over me: so shall I be undefiled and innocent from the great offence.

14 Let the words of my mouth, and the meditation of my heart bee alwayes acceptable in thy sight.

15 O Lord: my strength & my redeemer.

*Exaudiat te dominus.* Psal. xx.

THe Lord heare thee in the day of trouble: the name of the God of Jacob defend thee.

2 Send thee helpe from the sanctuary: and strengthen thee out of Sion.

3 Remember all thy offerings: and accept thy burnt-sacrifice.

4 Grant thee thy hearts desire: and fulfill all thy minde.

5 We will rejoyce in thy salvation, and triumph in the name of the Lord our God: the Lord performe all thy petitions.

6 Now know I that the Lord helpeth his anointed, and will heare him from his holy heaven: even with the wholsome strength of his right hand.

7 Some put their trust in chariots, and some in horses: but we will remember the name of the Lord our God.

8 They are brought downe and fallen: but we are risen and stand upright.

9 Save Lord, and heare us O King of heaven: when we call upon thee.

*Domine in virtute.* Psal. xxi.

THe king shall rejoyce in thy strength, O Lord: exceeding glad shall hee be of thy salvation.

2 Thou hast given him his hearts desire: and hast not denyed him the request of his lips.

3 For thou shalt prevent him with the blessings of goodnesse: and shalt set a crowne of pure gold upon his head.

4 He asked life of thee, and thou gavest him a long life: even for ever and ever.

5 His honour is great in thy salvation: glory and great worship shalt thou lay upon him:

6 For thou shalt give him everlasting felicity: and make him glad with the joy of thy countenance.

7 And why? because the king putteth his trust in the Lord: and in the mercies of the most Highest he shall not miscarry.

8 All thine enemies shall feele thine

hand: thy right hand shall finde out them that hate thee.

9 Thou shalt make them like a fiery oven in time of thy wrath: the Lord shall destroy them in his displeasure, & the fire shall consume them.

10 Their fruit shalt thou root out of the earth, and their seed from among the children of men.

11 For they intended mischiefe against thee: and imagined such a device as they are not able to performe.

12 Therefore shalt thou put them to flight: and the strings of thy bow shalt thou make ready against the face of them.

13 Bee thou exalted Lord in thine own strength: so will wee sing and praise thy power.

*Deus deus meus* } *Evening*
Psal. xxij. } *Prayer.*

MY God, my God, looke upon mee? why hast thou forsaken me: and art so farre from my health, and from the words of my complaint?

2 O my God, I cry in the day time, but thou hearest not: & in the night season also I take no rest.

3 And thou continuest holy: O thou worship of Israel.

4 Our fathers hoped in thee: they trusted in thee, and thou diddest deliver them.

5 They called upon thee, and were holpen: they put their trust in thee, and were not confounded.

6 But as for mee, I am a worme and no man: a very scorne of men, and the outcast of the people.

7 All they that see mee, laugh me to scorne: they shoot out their lips, and shake their heads, saying;

8 He trusted in God that he would deliver him: let him deliver him, if he will have him.

9 But thou art hee that tooke me out of my mothers wombe: thou wast my hope, when I hanged yet upon my mothers breasts.

10 I have beene left unto thee ever since I was borne: thou art my God, even from my mothers wombe.

11 O goe not from me, for trouble is hard at hand: and there is none to helpe mee.

12 Many oxen are come about mee: fat Buls of Basan close mee in on every side.

13 They gape upon mee with their mouths: as it were a ramping & roaring Lion.

14 I am powred out like water, and all my bones are out of joynt: my heart also in the middest of my body is even like melting wax.

15 My strength is dryed up like a pot-sheard, and my tongue cleaveth to my gummes: and thou shalt bring me into the dust of death.

16 For (many) dogs are come about me: and the counsell of the wicked layeth siege against me.

17 They pierced my hands and my feet, I may tell all my bones: they stand staring and looking upon me.

18 They part my garments among them: and cast lots upon my vesture.

19 But be not thou farre from me, O Lord: thou art my succour, haste thee to helpe me.

20 Deliver my soule from the sword: my darling from the power of the dog.

21 Save me from the Lions mouth: thou hast heard me also from among the horres of the Unicornes.

22 I will declare thy Name unto my brethren: in the midst of the congregation will I praise thee.

23 O praise the Lord, yee that feare him: magnifie him all ye of the seed of Jacob, and feare him all yee seed of Israel.

24 For hee hath not despised nor abhorred the low estate of the poore, hee hath not hid his face from him: but when he called unto him, he heard him.

25 My praise is of thee in the great congregation: my vowes will I performe in the sight of them that feare him.

26 The poore shall eat and be satisfied: they that seeke after the Lord shall praise him, your heart shall live for ever.

27 All the ends of the world shall remember themselves, and bee turned unto the Lord: and all the kindreds of the nations shall worship before him.

28 For the Kingdome is the Lords: and he is the governour among the people.

29 All such as be fat upon earth: have eaten and worshipped.

30 All they that goe downe into the dust shall kneele before him: and no man hath quickned his owne soule.

31 My seed shall serve him: they shall bee counted unto the Lord for a generation.

32 They shall come, and the heavens shall declare his righteousnesse: unto a people that shall be borne, whom the Lord hath made.

*Domine*

*Dominus regit me.* Psal. xxiij.

THe Lord is my shepherd : therefore can I lacke nothing.

2 He shall feed me in a greene pasture : and lead me forth beside the waters of comfort.

3 He shall convert my soule : and bring me forth in the paths of righteousnesse for his Names sake.

4 Yea, though I walke through the valley of the shadow of death, I will feare no evill : for thou art with me, thy rod and thy staffe comfort me.

5 Thou shalt prepare a table before me against them that trouble me : thou hast anointed my head with oyle, and my cup shall be full.

6 But thy loving kindnesse and mercy shall follow me all the dayes of my life : and I will dwell in the house of the Lord for ever.

*Domini est terra.* Psal. xxiv. } *Morning Prayer.*

THe earth is the Lords, and all that therein is : the compasse of the world, and they that dwell therein.

2 For hee hath founded it upon the Seas : and prepared it upon the floods.

3 Who shall ascend into the hill of the Lord : or who shall rise up in his holy place ?

4 Even he that hath cleane hands, and a pure heart : and that hath not lift up his minde unto vanity, nor sworne to deceive his neighbour.

5 Hee shall receive the blessing from the Lord : and righteousnesse from the God of his salvation.

6 This is the generation of them that seeke him : even of them that seeke thy face, O Jacob.

7 Lift up your heads, O ye gates, and be ye lift up ye everlasting doores : and the King of glory shall come in.

8 Who is the King of glory ? it is the Lord, strong and mighty, even the Lord mighty in battell.

9 Lift up your heads, O ye gates, and be yee lift up ye everlasting doores : and the King of glory shall come in.

10 Who is the King of glory ? even the Lord of hosts, he is the King of glory.

*Ad te, Domine.* Psal. xxv.

UNto thee, O Lord, will I lift up my soule, my God, I have put my trust in thee : O let me not be confounded, neither let mine enemies triumph over me.

2 For all they that hope in thee shall not be ashamed : but such as transgresse without a cause, shall be put to confusion.

3 Shew me thy wayes, O Lord : and teach me thy paths.

4 Lead me forth in thy truth, and learne me : for thou art the God of my salvation, in thee hath beene my hope all the day long.

5 Call to remembrance, O Lord, thy tender mercies : and thy loving kindnesse which hath beene ever of old.

6 O remember not the sinnes and offences of my youth : but according to thy mercy thinke thou upon me (O Lord) for thy goodnesse.

7 Gracious and righteous is the Lord : therefore will hee teach sinners in the way.

8 Them that be meeke shall he guide in judgement : and such as be gentle, them shall he learne his way.

9 All the paths of the Lord are mercy and truth : unto such as keepe his covenant and his testimonies.

10 For thy Names sake, O Lord : be mercifull unto my sinne, for it is great.

11 What man is hee that feareth the Lord : him shall he teach in the way that he shall chuse.

12 His soule shall dwell at ease : and his seed shall inherit the land.

13 The secret of the Lord is among them that feare him : and hee will shew them his covenant.

14 Mine eyes are ever looking unto the Lord : for he shall plucke my feet out of the net.

15 Turne thee unto me, and have mercy upon mee : for I am desolate and in misery.

16 The sorrowes of my heart are enlarged : O bring thou mee out of my troubles.

17 Looke upon mine adversity and misery : and forgive me all my sin.

18 Consider mine enemies, how many they are : and they beare a tyrannous hate against me.

19 O keepe my soule, and deliver me : let me not be confounded, for I have put my trust in thee.

20 Let perfectnesse and righteous dealing wait upon me : for my hope hath beene in thee.

21 Deliver Israel, O God : out of all his troubles.

*Judica me, Domine.* Psal. xxvi.

BE thou my Judge, O Lord : for I have walked innocently : my trust hath

been also in the Lord, therefore shall I not fall.

2 Examine me, O Lord, and prove me: try out my reines and my heart.

3 For thy loving kindnesse is ever before mine eyes: and I will walke in thy truth:

4 I have not dwelt with vain persons: neither will I have fellowship with the deceitfull.

5 I have hated the congregation of the wicked: and will not sit among the ungodly.

6 I will wash my hands in innocency, O Lord: and so will I goe to thine altar.

7 That I may shew the voice of thanksgiving: and tell of all thy wondrous workes.

8 Lord, I have loved the habitation of thy house: and the place where thine honour dwelleth.

9 O shut not up my soule with the sinners: nor my life with the bloudthirsty.

10 In whose hands is wickednesse: and their right hands are full of gifts.

11 But as for me, I will walke innocently: O Lord deliver me, and bee mercifull unto me.

12 My foot standeth right: I will praise the Lord in the congregations.

*Dominus illuminatio.* Psal. xxvii. } *Evening prayer.*

THe Lord is my light and my salvation, whom then shall I feare: the Lord is the strength of my life: of whom then shall I be afraid?

2 When the wicked (even mine enemies and my foes) came upon mee to eat up my flesh: they stumbled and fell.

3 Though an host of men were laid against me, yet shall not my heart bee afraid: and though there rose up war against me, yet will I put my trust in him.

4 One thing have I desired of the Lord which I will require: even that I may dwell in the house of the Lord all the daies of my life, to behold the fair beauty of the Lord, and to visit his temple.

5 For in the time of trouble he shal hide me in his tabernacle: yea in the secret place of his dwelling shall he hide me, and set me up upon a rocke of stone.

6 And now shall he lift up mine head: above mine enemies round about mee.

7 Therefore will I offer in his dwelling an oblation with great gladnesse: I will sing and speake praises unto the Lord.

8 Hearken unto my voyce, O Lord, when I cry unto thee: have mercy upon me, and heare mee.

9 My heart hath talked of thee, seek ye my face: thy face Lord will I seek.

10 O hide not thou thy face from me: nor cast thy servant away in displeasure.

11 Thou hast been my succour: leave me not, neither forsake me, O God of my salvation.

12 When my father and my mother forsake me: the Lord taketh me up.

13 Teach me thy way, O Lord: and lead me in the right way, because of mine enemies.

14 Deliver me not over into the will of mine adversaries: for there are false witnesses risen up against mee, and such as speake wrong.

15 I should utterly have fainted: but that I beleeve verily to see the goodnesse of the Lord in the land of the living.

16 O tarry thou the Lords leasure: bee strong, and he shall comfort thine heart, and put thou thy trust in the Lord.

*Ad te Domine.* Psal. xxviii.

VNto thee will I cry, O Lord my strength: thinke no scorne of me, lest if thou make as though thou heardest not, I become like them that go downe into the pit.

2 Heare the voice of my humble petitions when I cry unto thee: when I hold up my hands toward the mercy seat of thy holy temple.

3 O plucke me not away (neither destroy me) with the ungodly and wicked doers: which speake friendly to their neighbors, but imagine mischiefe in their hearts.

4 Reward them according to their deeds: and according to the wickednesse of their owne inventions.

5 Recompence them after the worke of their hands: pay them that they have deserved.

6 For they regard not in their minde the workes of the Lord, nor the operation of his hands: therefore shall hee breake them downe, and not build them up.

7 Praised be the Lord: for he hath heard the voice of my humble petitions.

8 The Lord is my strength and my shield, my heart hath trusted in him, and I am helped: therefore my heart danceth for joy, and in my song will I praise him.

9 The Lord is my strength: & he is the wholesome defence of his anointed.

10 O

10 O save thy people, and give thy blessing unto thine inheritance: feed them, and set them up for ever.

*Afferte Domino.* Psal. 29.

BRing unto the Lord (O ye mighty) bring young rams unto the Lord: ascribe unto the Lord worship and strength.

2 Give the Lord the honour due unto his name: worship the Lord with holy worship.

3 It is the Lord that commandeth the waters: it is the glorious God that maketh the thunder.

4 It is the Lord that ruleth the sea, the voice of the Lord is mighty in operation: the voice of the Lord is a glorious voice.

5 The voice of the Lord breaketh the cedar trees: yea, the Lord breaketh the cedars of Libanus.

6 Hee made them also to skip like a calfe: Libanus also and Sirion like a yong Unicorne.

7 The voice of the Lord divideth the flames of fire, the voice of the Lord shaketh the wildernesse: yea, the Lord shaketh the wildernesse of Cades.

8 The voice of the Lord maketh the hindes to bring forth yong, and discovereth the thicke bushes: in his temple doth every man speak of his honour.

9 The Lord sitteth above the waterfloods: and the Lord remaineth a King for ever.

10 The Lord shall give strength unto his People: the Lord shall give his people the blessing of peace.

*Exaltabo te Domine.* Psal. xxx. } *Morning prayer.*

I Will magnifie thee, O Lord, for thou hast set me up: and not made my foes to triumph over me.

2 O Lord my God, I cried unto thee: and thou hast healed me.

3 Thou Lord hast brought my soul out of hell: thou hast kept my life from them that go downe to the pit.

4 Sing praises unto the Lord (O yee Saints of his:) and give thankes to him for a remembrance of his holinesse.

5 For his wrath endureth but the twinkling of an eye, and in his pleasure is life: heavinesse may endure for a night, but joy commeth in the morning.

6 And in my prosperity I said, I shall never bee removed: thou Lord of thy goodnesse hast made my hill so strong.

7 Thou didst turn thy face from me: and I was troubled.

8 Then cryed I unto thee, O Lord: and gate me unto my Lord right humbly.

9 What profit is there in my bloud: when I go downe into the pit?

10 Shal the dust give thanks unto thee: or shall it declare thy truth?

11 Heare, O Lord, and have mercy upon me: Lord be thou my helper.

12 Thou hast turned my heavinesse into joy: thou hast put off my sackcloth, and girded me with gladnesse.

13 Therefore shall every good man sing of thy praise without ceasing: O my God I will give thankes unto thee for ever.

*In te Domine speravi.* Psal. xxxi.

IN thee, O Lord, have I put my trust: let me never be put to confusion, deliver me in thy righteousnesse.

2 Bow downe thine eare to me: make haste to deliver me.

3 And bee thou my strong rocke, and the house of defence: that thou mayest save mee.

4 For thou art my strong rock, and my castle: be thou also my guid, and lead me for thy Names sake.

5 Draw mee out of the net that they have laied privily for mee: for thou art my strength.

6 Into thy hands I commend my spirit, for thou hast redeemed mee, O Lord, thou God of truth.

7 I have hated them that hold of superstitious vanities: and my trust hath been in the Lord.

8 I will be glad, and rejoyce in thy mercy: for thou hast considered my trouble, and hast knowne my soule in adversities.

9 Thou hast not shut mee up into the hand of the enemy: but hast set my feet in a large roome.

10 Have mercy upon me, O Lord, for I am in trouble: and mine eye is consumed for very heavinesse: yea, my soule, and my body.

11 For my life is waxen old with heavinesse: and my yeares with mourning.

12 My strength faileth me, because of mine iniquity: and my bones are consumed.

13 I became a reproofe among al mine enemies, but specially among my neigh-

bors: and they of mine acquaintance were afraid of mee, and they that did see mee without, conveyed themselves from me.

14 I am clean forgotten as a dead man out of mind: I am become like a broken vessell.

15 For I have heard the blasphemy of the multitude: and feare is on every side, while they consspire together against me, and take their counsell to take away my life.

16 But my hope hath been in thee, O Lord: I have said, Thou art my God.

17 My time is in thy hand, deliver mee from the hand of mine enemies: & from them that persecute me.

18 Shew thy servant the light of thy countenance: and save me for thy mercies sake.

19 Let me not be confounded, O Lord, for I have called upon thee: let the ungodly be put to confusion, and bee put to silence in the grave.

20 Let the lying lips be put to silence which cruelly, disdainfully, and despitefully speake against the righteous.

21 O how plentifull is thy goodnesse, which thou hast laied up for them that feare thee: and that thou hast prepared for them that put their trust in thee, even before the sons of men?

22 Thou shalt hide them privily by thine owne presence, from the provoking of all men: thou shalt keepe them secretly in thy tabernacle from the strife of tongues.

23 Thanks be to the Lord: for he hath shewed me marvellous great kindnesse in a strong city.

24 And when I made haste, I said, I am cast out of the sight of thine eyes.

25 Nevertheless thou hearkenedst the voice of my prayer: when I cryed unto thee.

26 O love the Lord all yee his saints: for the Lord preserveth them that are faithfull, and plenteously rewardeth the proud doer.

27 Be strong, and he shall stablish your heart: all yee that put your trust in the Lord.

*Beati quorum.* } *Evening*
*Psal. xxxii.* } *Prayer.*

BLessed is he whose unrighteousnesse is forgiven: and whose sinne is covered.

2 Blessed is the man unto whom the Lord imputeth no sinne: and in whose spirit there is no guile.

3 For while I held my tongue, my bones consumed away through my daily complaining.

4 For thy hand is heavy upon mee day and night: and my moisture is like the drought in summer.

5 I will knowledge my sinne unto thee: and mine unrighteousnesse have I not hid.

6 I said, I will confesse my sinnes unto the Lord: and so thou forgavest the wickednesse of my sin.

7 For this shall every one that is godly make his prayer unto thee, in a time when thou maiest be found: but in the great water flouds they shall not come nigh him.

8 Thou art a place to hide me in, thou shalt preserve me from trouble: thou shalt compasse me about with songs of deliverance.

9 I will informe thee, and teach thee in the way wherein thou shalt go: and I will guide thee with mine eye.

10 Be ye not like to horse & mule which have no understanding: whose mouthes must be holden with bit and bridle, lest they fall upon thee.

11 Great plagues remain for the ungodly: but whoso putteth his trust in the Lord, mercy embraceth him on every side.

12 Be glad, O ye righteous, & rejoyce in the Lord: and be joyfull all ye that are true of heart.

*Exultate iusti.* Psal. xxxiii.

RIeoyce in the Lord, O yee righteous: for it becommeth well the iust to bee thankfull.

2 Praise the Lord with harpe: sing psalmes unto him with the lute and instrument of ten strings.

3 Sing unto the Lord a new song: sing praises lustily (unto him) with a good courage.

4 For the word of the Lord is true: and all his workes are faithfull.

5 He loveth righteousnesse and iudgement: the earth is full of the goodnesse of the Lord.

6 By the word of the Lord were the heavens made: and all the hosts of them by the breath of his mouth.

7 He gathereth the waters of the sea together, as it were upon an heap: & layeth up the deep, as in a treasure house.

8 Let all the earth fear the Lord: stand in awe of him all yee that dwell in the world.

9 For

9 For he spake, and it was done: hee commanded, and it stood fast.

10 The Lord bringeth the counsel of the heathen to nought: and maketh the devices of the people to be of none effect, and casteth out the counsels of princes.

11 The counsell of the Lord shall endure for ever: and the thoughts of his heart from generation to generation.

12 Blessed are the people whose God is the Lord Iehovah: and blessed are the folk that he hath chosen to him, to be his inheritance.

13 The Lord looked downe from heaven, and beheld all the children of men: from the habitation of his dwelling hee considereth all them that dwell in the earth.

14 He fashioneth all the hearts of them: and understandeth all their works.

15 There is no king that can bee saved by the multitude of an host: neither is any mighty man delivered by much strength.

16 An horse is counted but a vain thing to save a man: neither shall he deliver any man by his great strength.

17 Behold, the eye of the Lord is upon them that feare him: and upon them that put their trust in his mercy.

18 To deliver their soules from death: and to feed them in the time of dearth.

19 Our soule hath patiently tarried for the Lord: for he is our helpe and our shield.

20 For our heart shall reioyce in him: because we have hoped in his holy name.

21 Let thy mercifull kindnesse (O Lord) bee upon us: like as wee doe put our trust in thee.

*Benedicam Domino*, Psal. 34.

I Will alway give thankes unto the Lord: his praise shall ever bee in my mouth.

2 My soule shall make her boast of the Lord: the humble shall hear thereof, and be glad.

3 O praise the Lord with me: and let us magnifie his name together.

4 I sought the Lord, & he heard mee: yea he delivered me out of all my feare.

5 They had an eye unto him, and were lightened: and their faces were not ashamed.

6 Lo, the poore cryeth, and the Lord heareth him: yea, and saveth him out of all his troubles.

7 The angel of the Lord tarieth round about them that fear him: and delivereth them.

8 O taste and see how gracious the Lord is: blessed is the man that trusteth in him.

9 O feare the Lord, ye that be his saints: for they that feare him lacke nothing.

10 The lions do lack and suffer hunger: but they which seeke the Lord, shal want no manner of thing that is good.

11 Come ye children and hearken unto me: I will teach you the feare of the Lord.

12 What man is he that lusteth to live, and would faine see good dayes: keep thy tongue from evill, and thy lips that they speake no guile.

13 Eschew evil, and do good: seek peace and ensue it.

14 The eyes of the Lord are over the righteous: and his ears are open unto their prayers.

15 The countenance of the Lord is against them that do evill: to root out the remembrance of them from the earth.

16 The righteous cry, and the Lord heareth them: and delivereth them out of all their troubles.

17 The Lord is nigh unto them that are of a contrite heart: and will save such as be of an humble spirit.

18 Great are the troubles of the righteous: but the Lord delivereth him out of all.

19 Hee keepeth all his bones: so that not one of them is broken.

20 But misfortune shall slay the ungodly: and they that hate the righteous, shall be desolate.

21 The Lord delivereth the soules of his servants: and all they that put their trust in him, shall not be destitute.

*Iudica me Domine* Psal. xxxv. } *Morning Prayer.*

PLead thou my cause, O Lord, with them that strive with me: and fight thou against them that fight against mee.

2 Lay hand upon the shield and buckler and stand up to helpe me.

3 Bring forth the spear, and stop the way against them that persecute me: say unto my soule, I am thy salvation.

4 Let them be confounded and put to shame that seek after my soul: let them be turned backe, and brought to confusion, that imagine mischiefe for me.

5 Let them be as the dust before the winde: and the angell of the Lord scattering them,

6 Let their way be darke and slippery: and let the Angell of the Lord persecute them.

7 For they have privily laid their net to destroy me without a cause: yea, even without a cause have they made a pit for my soule.

8 Let a sudden destruction come upon him unawares: and his net that he hath laid privily catch himselfe: that he may fall into his owne mischiefe.

9 And my soule be joytall in the Lord: it shall rejoyce in his salvation.

10 All my bones shall say, Lord who is like unto thee, which delivereſt the poore from him that is too strong for him: yea, the poore, and him that is in misery, from him that spoileth him.

11 False witnesse did rise up: they laid to my charge things that I knew not.

12 They rewarded me evill for good: to the great discomfort of my soule.

13 Nevertheleſſe, when they were sicke I put on sack-cloth, and humbled my soule with fasting: and my prayer shall turne into mine own bosome.

14 I behaved my selfe as though it had beene my friend, or my brother: I went heavily, as one that mourneth for his mother.

15 But in mine adversity they rejoyced, and gathered them together: yea, the very abjects came together against me unawares, making mowes at me, and ceased not.

16 With the flatterers were busie mockers: which gnashed upon me with their teeth.

17 Lord, how long wilt thou looke upon this: O deliver my soule from the calamities which they bring on me, and my darling from the Lions.

18 So will I give thee thanks in the great congregation: I will praise thee among much people.

19 O let not them that are mine enemies triumph over me ungodly: neither let them winke with their eyes, that hate me without a cause.

20 And why? their communing is not for peace: but they imagine deceitfull words against them that are quiet in the land.

21 They gaped on mee with their mouths: and said, Fie on thee, fie on thee, we saw it with our eyes.

22 This thou hast seene, O Lord: hold not thy tongue then, goe not farre from me, O Lord.

23 Awake and stand up to judge my quarrell: avenge thou my cause, my God, and my Lord.

24 Judge me, O Lord my God, according to thy righteousnesse: and let them not triumph over me.

25 Let them not say in their hearts, There, there, so would we have it: neither let them say, wee have devoured him.

26 Let them be put to confusion and shame together, that rejoyce at my trouble: let them be clothed with rebuke and dishonour, that boast themselves against mee.

27 Let them be glad and rejoyce that favour my righteous dealing: yea, let them say alway, Blessed bee the Lord which hath pleasure in the prosperity of his servant.

28 And as for my tongue, it shall bee talking of thy righteousnesse: and of thy praise all the day long.

*Dixit injustus.* Psal. xxxvj.

MY heart sheweth me the wickednesse of the ungodly: that there is no feare of God before his eyes.

2 For he flattereth himselfe in his own sight: untill his abominable sinne bee found out.

3 The words of his mouth are unrighteous, and full of deceit: hee hath left off to behave himselfe wisely, and to doe good.

4 Hee imagineth mischiefe upon his bed, and hath set himselfe in no good way: neither doth he abhorre any thing that is evill.

5 Thy mercy, O Lord, reacheth unto the heavens: and thy faithfulnesse unto the clouds.

6 Thy righteousnesse standeth like the strong mountaines: thy judgements are like the great deepe.

7 Thou Lord shalt save both man and beast, how excellent is thy mercy, O God: and the children of men shall put their trust under the shadow of thy wings.

8 They shall be satisfied with the plenteousnesse of thy house: and thou shalt give them drinke of thy pleasures, as out of the River.

9 For with thee is the Well of life: and in thy light shall we see light.

10 O continue forth thy loving kindnesse unto them that know thee: and thy righteousnesse unto them that are true of heart.

11 O let not the foot of pride come against me: and let not the hand of the ungodly cast me downe.

12 There are they fallen (all) that worke wickednesse: they are cast downe, and shall not be able to stand.

*Noli æmulari.* } { *Evening*
*Psal. xxxvij.* } { *Prayer.*

FRet not thy selfe because of the ungodly: neither be thou envious against the evill doers.

2 For they shall soone be cut downe like the grasse: and bee withered even as the greene herbe.

3 Put thou thy trust in the Lord, and be doing good: dwell in the land, and verily thou shalt be fed.

4 Delight thou in the Lord: and hee shall give thee thy hearts desire.

5 Commit thy way unto the Lord, and put thy trust in him: and he shall bring it to passe.

6 He shall make thy righteousnesse as cleare as the light: and thy just dealing as the noone day.

7 Hold thee still in the Lord, and abide patiently upon him: but grieve not thy selfe at him whose way doth prosper, against the man that doth after evill counsels.

8 Leave off from wrath, and let goe displeasure: fret not thy selfe, else shalt thou be moved to doe evill.

9 Wicked doers shall be rooted out: and they that patiently abide the Lord, those shall inherit the land.

10 Yet a little while, and the ungodly shall be cleane gone: thou shalt looke after his place, and he shall be away.

11 But the meeke spirited shall possesse the earth: and shall bee refreshed in the multitude of peace.

12 The ungodly seeketh counsell against the just: and gnasheth upon him with his teeth.

13 The Lord shall laugh him to scorn: for hee hath seene that his day is comming.

14 The ungodly have drawne out the sword, and have bent their bow: to cast downe the poore and needy, and to slay such as be of a right conversation.

15 Their sword shall goe through their owne heart: and their bow shall bee broken.

16 A small thing that the righteous hath: is better than great riches of the ungodly.

17 For the armes of the ungodly shall be broken: and the Lord upholdeth the righteous.

18 The Lord knoweth the dayes of the godly: and their inheritance shall endure for ever.

19 They shall not bee confounded in the perillous times: and in the dayes of dearth they shall have enough.

20 As for the ungodly, they shall perish, and the enemies of the Lord shall consume as the fat of lambs: yea, even as the smoke shall they consume away.

21 The ungodly borroweth and payeth not againe: but the righteous is mercifull and liberall.

22 Such as be blessed of God shall possesse the land: and they that be cursed of him shall be rooted out.

23 The Lord ordereth a good mans going: and maketh his way acceptable to himselfe.

24 Though hee fall, hee shall not bee cast away: for the Lord upholdeth him with his hand.

25 I have beene young, and now am old: and yet saw I never the righteous forsaken, nor his seed begging their bread.

26 The righteous is ever mercifull and lendeth: and his seed is blessed.

27 Flee from evill, and doe the thing that is good: and dwell for evermore.

28 For the Lord loveth the thing that is right: hee forsaketh not his that bee godly, but they are preserved for ever.

29 The righteous shall bee punished: as for the seed of the ungodly, it shall bee rooted out.

30 The righteous shall inherit the land: and dwell therein for ever.

31 The mouth of the righteous is exercised in wisdome: and his tongue will be talking of judgement.

32 The law of his God is in his heart: and his goings shall not slide.

33 The ungodly seeth the righteous: and seeketh occasion to slay him.

34 The Lord will not leave him in his hand: nor condemne him when hee is judged.

35 Hope thou in the Lord, and keepe his way, and he shall promote thee, that thou shalt possesse the land: when the ungodly shall perish thou shalt see it.

36 I my selfe have seene the ungodly in great power: and flourishing like a greene Bay tree.

37 And I went by, and loe, hee was gone: I sought him, but his place could no where be found.

38 Keepe innocency, and take heed unto the thing that is right: for that shall bring a man peace at the last.

39 As for the transgressours, they shall perish together: and the end of the ungodly is, they shall bee rooted out at the last.

40 But the salvation of the righteous commeth of the Lord: which is also their strength in the time of trouble.

41. And

41 And the Lord ſhall ſtand by them, and ſave them: he ſhall deliver them from the ungodly, and ſhall ſave them, becauſe they put their truſt in him.

*Domine, ne in furore.* Pſal. xxxviij. } *Morning prayer.*

PUt me not to rebuke (O Lord) in thine anger: neither chaſten me in thy heavie diſpleaſure.

2 For thine arrowes ſticke faſt in me: and thy hand preſſeth me ſore.

3 There is no health in my fleſh, becauſe of thy diſpleaſure: neither is there any reſt in my bones, by reaſon of my ſin.

4 For my wick dneſſes are gone over my head: and are like a ſore burden, too heavie for me to bear.

5 My wounds ſtinke, and are corrupt: through my fooliſhneſſe.

6 I am brought into ſo great trouble and miſery: that I goe mourning all the day long.

7 For my loynes are filled with a ſore diſeaſe: and there is no whole part in my body.

8 I am feeble and ſore ſmitten: I have roared for the very diſquietneſſe of my heart.

9 Lord thou knoweſt all my deſire: and my groaning is not hid from thee.

10 My heart panteth, my ſtrength hath failed me: and the ſight of mine eyes is gone from me.

11 My lovers and my neighbours did ſtand looking upon my trouble: and my kinſmen ſtood a farre off.

12 They alſo that ſought after my life, laid ſnares for me: and they that went about to doe me evill, talked of wickedneſſe, and imagined deceit all the day long.

13 As for me, I was like a deafe man and heard not: and as one that is dumb, who doth not open his mouth.

14 I became even as a man that heareth not: and in whoſe mouth are no reproofes.

15 For in thee, O Lord, have I put my truſt: thou ſhalt anſwer for me, O Lord, my God.

16 I have required, that they (even mine enemies) ſhould not triumph over me: for when my foot ſlipt, they rejoyced greatly againſt me.

17 And I truly am fet in the plague: and my heavineſſe is ever in my ſight.

18 For I will confeſſe my wickedneſſe, and be ſorry for my ſinne.

19 But mine enemies live, and are mighty: and they that hate mee wrongfully, are many in number.

20 They alſo that reward evill for good, are againſt me: becauſe I follow the thing that good is.

21 Forſake me not, O Lord my God: be not thou farre from me.

22 Haſte thee to helpe me: O Lord God my ſalvation.

*Dixi Cuſtodiam.* Pſal. xxxix.

I Said, I will take heed unto my wayes: that I offend not in my tongue.

2 I will keepe my mouth, as it were with a bridle: while the ungodly is in my ſight.

3 I held my tongue, and ſpake nothing: I kept ſilence, yea, even from good words, but it was paine and grefe to me.

4 My heart was hot within me, and while I was thus muſing, the fire kindled: and at the laſt I ſpake with my tongue.

5 Lord let me know mine end, and the number of my dayes: that I may be certified how long I have to live.

6 Behold, thou haſt made my dayes as it were a ſpan long: and mine age is even as nothing in reſpect of thee, and verily every man living is altogether vanity.

7 For man walketh in a vaine ſhadow, and diſquieteth himſelfe in vaine: he heapeth up riches, and cannot tell who ſhall gather them.

8 And now Lord, what is my hope? truly my hope is even in thee.

9 Deliver me from all mine offences: and make mee not a rebuke unto the foolish.

10 I became dumbe, and opened not my mouth: for it was thy doing.

11 Take thy plague away from me: I am even conſumed by the meanes of thy heavie hand.

12 When thou with rebukes doeſt chaſten man for ſin, thou makeſt his beauty to conſume away like as it were a moth fretting a garment: every man therefore is but vanity.

13 Heare my prayer, O Lord, and with thine eares conſider my calling: hold not thy peace at my teares.

14 For I am a ſtranger with thee: and a ſojourner, as all my fathers were.

15 O ſpare me a little, that I may recover my ſtrength: before I goe hence, and be no more ſeene.

*Ex eſſam expectans vi.* Pſal. xl.

I Waited patiently for the Lord: and hee inclined unto me, and heard my calling.

2 He

2 He brought me also out of the horrible pit, out of the mire and clay: and set my feet upon the rocke, and ordered my goings.

3 And he hath put a new song in my mouth: even a thanksgiving unto our God.

4 Many shall see it, and feare: and shall put their trust in the Lord.

5 Blessed is the man that hath set his hope in the Lord: and turned not unto the proud, and to such as goe about with lies.

6 O Lord my God, great are thy wonderous works which thou hast done: like as be also thy thoughts which are to us-ward, and yet there is no man that ordereth them unto thee.

7 If I would declare them, and speake of them: they should be more than I am able to expresse.

8 Sacrifice and meat-offering thou wouldest not have: but mine eares hast thou opened.

9 Burnt-offerings and sacrifice for sin hast thou not required: then said I, Lo, I come.

10 In the volume of the booke it is written of me, that I should fulfill thy will, O my God: I am content to doe it, yea, thy law is within my heart.

11 I have declared thy righteousnesse in the great congregation: lo, I will not refraine my lips, O Lord, and that thou knowest.

12 I have not hid thy righteousnesse within my heart: my talking hath been of thy truth, and of thy salvation.

13 I have not kept backe thy loving mercy and truth from the great congregation.

14 Withdraw not thou thy mercy from me, O Lord: let thy loving kindnesse and thy truth alway preserve me.

15 For innumerable troubles are come about me, my sinnes have taken such hold upon me, that I am not able to looke up: yea, they be more in number than the hairs of mine head, and my heart hath failed me.

16 O Lord, let it be thy pleasure to deliver me: make haste, O Lord, to helpe me.

17 Let them be ashamed and confounded together that seek after my soule to destroy it: let them be driven backward, and put to rebuke, that wish me evill.

18 Let them be desolate and rewarded with shame, that say unto me: Fie upon thee, fie upon thee.

19 Let all those that seeke thee bee joyfull and glad in thee: and let such as love thy salvation, say alway, The Lord be praised.

20 As for me, I am poore and needy: but the Lord careth for me.

21 Thou art my helper and Redeemer: make no long tarrying, O my God.

*Beatus qui intelligit.* Psal. xli. } *Evening Prayer.*

BLessed is he that considereth the poore and needy: the Lord shall deliver him in the time of trouble.

2 The Lord preserve him and keepe him alive, that hee may bee blessed upon earth: and deliver not thou him into the will of his enemies.

3 The Lord comfort him when hee lieth sicke upon his bed: make thou all his bed in his sicknesse.

4 I said, Lord be mercifull unto me: heale my soule, for I have sinned against thee.

5 Mine enemies speake evill of mee: when shall he die, and his name perish?

6 And if hee come to see me, he speaketh vanity: and his heart conceiveth falshood within himselfe, and when hee commeth forth, he telleth it.

7 All mine enemies whisper together against me: even against mee doe they imagine this evill.

8 Let the sentence of guiltinesse proceed against him: and now that he lieth, let him rise up no more.

9 Yea, even mine owne familiar friend whom I trusted: which did also eat of my bread, hath laid great wait for me.

10 But be thou mercifull unto me, O Lord: raise thou mee up againe, and I shall reward them.

11 By this I know thou favourest me: that mine enemie doth not triumph against me.

12 And when I am in my health, thou upholdest me: and shalt set me before thy face for ever.

13 Blessed be the Lord God of Israel: world without end, Amen.

*Quemadmodum.* Psal. xlij.

LIke as the Hart desireth the water-brooks: so longeth my soule after thee O God.

2 My soule is a thirst for God, yea, even for the living God: when shall I come to appeare before the presence of God?

3 My teares have beene my meat day and

and night: while they daily say unto me, Where is now thy God?

4 Now when I think therupon, I poure out my heart by my selfe: for I went with the multitude, and brought them forth into the house of God.

5 In the voice of praise and thankesgiving: among such as keepe holy day.

6 Why art thou so full of heavinesse (O my soule:) and why art thou so disquieted within me?

7 Put thy trust in God: for I will yet give him thankes for the help of his countenance.

8 My God, my soule is vexed within me: therefore will I remember thee concerning the land of Iordan, and the little hill of Hermon.

9 One deep calleth another, because of the noyse of thy water pipes: all thy waves and stormes are gone over me.

10 The Lord hath granted his loving kindnesse on the day time: and in the night season did I sing of him, and make my prayer unto the God of my life.

11 I will say unto the God of my strength, why hast thou forgotten me: why goe I thus heavily while the enemy oppresseth me?

12 My bones are smitten a sunder as with a sword: while mine enemies (that trouble me) cast me in the teeth.

13 Namely, while they say daily unto me, Where is now my God?

14 Why art thou so vexed, O my soule: and why art thou so disquieted within mee?

15 O put thy trust in God: for I will yet thanke him, which is the help of my countenance, and my God.

*Judica me Deus. Psal. xliii.*

GIve sentence with me, O God, and defend my cause against the ungodly people: O deliver me from the deceitfull and wicked man.

2 For thou art the God of my strength, why hast thou put me from thee: and why goe I so heavily while the enemy oppresseth mee?

3 O send out thy light and thy truth, that they may lead me, and bring me unto thy holy hill, and to thy dwelling.

4 And that I may go unto the Altar of God, even unto the God of my joy and gladnesse: and upon the harp will I give thankes unto thee, O God, my God.

5 Why art thou so heavy, O my soule: & why art thou so disquieted within me?

6 O put thy trust in God: for I will yet give him thanks, which is the helpe of my countenance, and my God.

*Deus auribus.* } *Morning*
*Psal. xliv.* } *Prayer.*

WE have heard with our eares, O God, our fathers have told us: what thou hast done in their time of old.

2 How thou hast driven out the heathen with thy hand, and planted them in: how thou hast destroyed the Nations, and cast them out.

3 For they got not the land in possession through their owne sword: neither was it their owne arme that helped them.

4 But thy right hand and thine arme, and the light of thy countenance: because thou hadst a favour unto them.

5 Thou art my King (O God:) send helpe unto Jacob.

6 Through thee will wee overthrow our enemies: and in thy Name will wee tread them under that rise up against us.

7 For I will not trust in my bow: it is not my sword that shall helpe me.

8 But it is thou that savest us from our enemies: and puttest them to confusion that hate us.

9 Wee make our boast of God all day long: and will praise thy Name for ever.

10 But now thou art farre off, and puttest us to confusion: and goest not forth with our armies.

11 Thou makest us to turne our backs upon our enemies: so that they which hate us spoile our goods.

12 Thou lettest us to be eaten up like sheepe: and hast scattered us among the heathen.

13 Thou sellest thy people for nought: and takest no money for them.

14 Thou makest us to bee rebuked of our neighbours: to be laughed to scorne, and had in derision of them that are round about us.

15 Thou makest us to be a by-word among the heathen: and that the people shake their heads at us.

16 My confusion is daily before me: and the shame of my face hath covered me

17 For the voice of the slanderer and blasphemer: for the enemie and avenger.

18 And though all this be come upon us, yet doe we not forget thee: nor behave our selves frowardly in thy covenant.

19 Our heart is not turned backe: neither our steps gone out of thy way.

10 No not when thou hast smitten us into the place of dragons: and covered us with the shadow of death.

11 If wee have forgotten the name of our God, and hold up our hands to any strange god: shall not God search it out? for hee knoweth the very secrets of the heart.

22 For thy sake also are wee killed all the day long: and are counted as sheepe appointed to be slaine.

23 Up Lord, why sleepest thou: awake, and be not absent from us for ever.

24 Wherefore hidest thou thy face: and forgettest our misery and trouble?

25 For our soule is brought low, even unto the dust: our belly cleaveth unto the ground.

26 Arise and helpe us: and deliver us for thy mercies sake.

*Eructavit cor meum.* Psal. 45.

MY heart is enditing of a good matter: I speake of the things which I have made unto the king.

2 My tongue is the pen of a ready writer.

3 Thou art fairer then the children of men: full of grace are thy lips, because God hath blessed thee for ever.

4 Gird thee with thy sword upon thy thigh, O thou most mighty: according to thy worship and renowne.

5 Good luske have thou with thine honour: ride on, because of the word of truth, of meeknesse and righteousnesse, and thy right hand shall teach thee terrible things.

6 Thy arrowes are very sharpe, and the people shall bee subdued unto thee: even in the middest among the kings enemies.

7 Thy seat (O God) endureth for ever: the sceptre of thy kingdome is a right sceptre.

8 Thou hast loved righteousnesse, and hated iniquity: wherefore God (even thy God) hath anointed thee with the oyle of gladnesse above thy fellowes.

9 All thy garments smell of Myrrhe, aloes, and casia: out of the ivory palaces, whereby they have made thee glad.

10 Kings daughters were among thy honourable women: upon thy right hand did stand the queene in a vesture of gold (wrought about with diverse colours.)

11 Hearken (O daughter) and consider, encline thine eare: forget also thine own people, and thy fathers house,

12 So shall the king have pleasure in thy beauty: for hee is thy Lord (God) & worship thou him.

13 And the daughter of Tyre shall be there with a gift: like as the rich also among the people shall make their supplication before thee.

14 The Kings daughter is all glorious within: her clothing is of wrought gold.

15 She shall be brought unto the King in raiment of needle worke: the virgins that be her fellows shall beare her company, and shall be brought unto thee.

16 With ioy and gladnesse shall they be brought: and shall enter into the kings palace.

17 In stead of thy fathers thou shalt have children: whom thou mayest make princes in all lands.

18 I will remember thy name from one generation unto another: therefore shall the people give thankes unto thee world without end.

*Deus noster refugium.* Psal. xlvi.

GOd is our hope and strength: a very present help in trouble.

2 Therefore will we not fear though the earth be moved: and though the hills be carried into the midst of the sea.

3 Though the waters thereof rage and swell: and though the mountains shake at the tempest of the same.

4 The rivers of the flood thereof shall make glad the city of God: the holy place of the tabernacle of the most Highest.

5 God is in the midst of her, therefore shall she not be removed: God shall helpe her, and that right early.

6 The heathen make much ado, and the kingdomes are moved: but God hath shewed his voice, and the earth shall melt away.

7 The Lord of Hosts is with us: the God of Jacob is our refuge.

8 O come hither, and behold the works of the Lord: what destruction hee hath brought upon the earth.

9 He maketh warres to cease in all the world: he breaketh the bow, and knappeth the speare asunder, and burneth the chariots in the fire.

10 Be still then, and know that I am God: I will be exalted among the heathen, and I will be exalted in the earth.

11 The Lord of hosts is with us: the God of Jacob is our refuge.

Omnes

*O mnes gentes plaudite* Psal. xlvii. } *Evening Prayer.*

O Clap your hands together, (all ye people:) O sing unto God with the voyce of melody.

2 For the Lord is high, and to be feared: hee is the great king upon all the earth.

3 Hee shall subdue the people under us: and the nations under our feet.

4 He shall choose out an heritage for us: even the worship of Iacob, whom hee loved.

5 God is gone up with a merry noise: and the Lord with the sound of the trump.

6 O sing praises, sing praises unto (our) God. O sing praises, sing praises unto our King.

7 For God is the King of all the earth: sing ye praises with understanding.

8 God reigneth over the heathen: God sitteth upon his holy seat.

9 The princes of the people are joined unto the people of the God of Abraham: for God (which is very high exalted) doth defend the earth as it were with a shield.

*Magnus Dominus.* Psal. xlviii.

GReat is the Lord, & highly to be praised: in the city of our God, even upon his holy hill.

2 The hill of Sion is a fare place, and the ioy of the whole earth: upon the North side lieth the city of the great king, God is well knowne in her palaces as a sure refuge.

3 For lo, the kings of the earth are gathered: and gone by together.

4 They marvelled to see such things: they were astonied, and suddenly cast downe.

5 Feare came thereupon them, and sorrow: as upon a woman in her travell.

6 Thou shalt break the ships of the sea through the east winde.

7 Like as we have heard, so have wee seene in the city of the Lord of hosts, in the city of our God: God upholdeth the same for ever.

8 Wee wait for thy loving kindnesse (O God) in the middest of thy temple.

9 O God, according unto thy name, so is thy praise unto the worlds end: thy right hand is full of righteousnesse.

10 Let the mount Sion reioyce, and the daughters of Iuda be glad, because of thy iudgements.

11 Walke about Sion, and goe round about her: and tell the towers thereof.

12 Marke well her bulwarkes, set up her houses: that ye may tell them that come after.

13 For this God is our God for ever and ever: he shall be our guid unto death.

*Audite hæc omnes.* Psal. xlix.

OHeare ye this all ye people: ponder it with your ears, all ye that dwell in the world.

2 High and low, rich & poore: one with another.

3 My mouth shall speake of Wisedome: and my heart shall muse of understanding.

4 I will incline mine eare to the parable: and shew my darke speech upon the harpe.

5 Wherefore should I feare in the dayes of wickednesse: and when the wickednesse of my heeles compasseth mee round about?

6 There be some that put their trust in their goods: and boast themselves in the multitude of their riches.

7 But no man may deliver his brother: nor make agreement unto God for him.

8 For it cost more to redeeme their soules: so that hee must let that alone for ever.

9 Yea, though he live long: and see not the grave.

10 For he seeth, that wise men also die, and perish together: as well as the ignorant and foolish, and leave their riches for other.

11 And yet they thinke that their houses shall continue for ever: and that their dwelling places shall endure from one generation to another, and call their Lands after their owne names.

12 Nevertheless, man will not abide in honour: seeing he may be compared unto the beasts that perish, this is the way of them.

13 This is their foolishnesse: and their posterity praise their saying.

14 They lie in the Hell like sheepe, death gnaweth upon them, and the righteous shall have domination over them in the morning: their beauty shall consume in the sepulchre out of their dwelling.

15 But God hath delivered my soule from the place of hell: for he shall receive me.

16 Be not thou afraid, though one bee made rich: or if the glory of his house bee increased.

17 For hee shall carry no hing away with him when he dieth: neither shal his pomp follow him.

18 For while he lived, he counted himselfe an happy man: and so long as thou dost well unto thy selfe, men will speake good of thee.

19 He shall follow the generation of his fathers: and shall never see light.

20 Man being in honour, hath no understanding: but is compared unto the beasts that perish.

*Dixit Dominus.* } *Morning*
Psal. L. } *prayer.*

THe Lord, even the most mighty God hath spoken: and called the world, from the rising up of the Sunne, unto the going downe thereof.

2 Out of Sion hath God appeared: in perfect beauty.

3 Our God shall come, and shal not keep silence: there shall go before him a consuming fire, and a mighty tempest shall be stirred up round about him.

4 He shall call the heaven from above, and the earth, that hee may iudge his people.

5 Gather my Saints together unto mee: those that have made a covenant with me with sacrifice.

6 And the heavens shall declare his righteousnesse: for God is iudge himselfe.

7 Heare, O my people, and I will speake: I my selfe will testifie against thee, O Israel, for I am God, even thy God.

8 I will not reprove thee because of thy sacrifices, or for thy burnt offerings: because they were not alway before me.

9 I will take no bullocke out of thine house: nor he-goats out of thy folds.

10 For all the beasts of the forrest are mine: and so are the cattels upon a thousand hils.

11 I know all the fowls upon the mountaines: and the wilde beasts of the field are in my sight.

12 If I be hungry, I will not tell thee: for the whole world is mine, and all that is therein.

13 Think'st thou that I will eat buls flesh: and drinke the bloud of goats?

14 Offer unto God thanksgiving: and pay thy vowes unto the most Highest.

15 And call upon mee in the time of trouble: so will I heare thee, and thou shalt praise me.

16 But unto the ungodly said God: why dost thou preach my lawes, and takest my covenant in thy mouth?

17 Whereas thou hatest to be reformed: and hast cast my words behind thee.

18 When thou sawest a theefe, thou consentedst unto him: and hast bin partaker with the adulterers.

19 Thou hast let thy mouth speak wickednesse: and with thy tongue thou hast set forth deceit.

20 Thou satest and spakest against thy brother: yea, and hast slandered thine owne mothers son.

21 These things hast thou done, and I held my tongue, and thou thoughtest wickedly, that I am even such a one as thy selfe: but I will reprove thee, and set before thee the things that thou hast done.

22 O consider this, yee that forget God: lest I plucke you away, and there be none to deliver you.

23 Whoso offereth me thanks & praise he honoureth me: and to him that ordereth his conversation right, will I shew the salvation of God.

*Miserere mei Deus.* Psal. Li.

HAve mercy upon me, O God, after thy great goodnesse: according to the multitude of thy mercies doe away mine offences.

2 Wash me throughly from my wickednesse: and cleanse me from my sin.

3 For I knowledge my faults: and my sin is ever before me.

4 Against thee only have I sinned, & done this evill in thy sight: that thou mightest be iustified in thy saying, and cleare when thou art iudged.

5 Behold, I was shapen in wickednesse: and in sinne hath my mother conceived mee.

6 But loe, thou requirest truth in the inward parts: and shalt make me to understand wisedome secretly.

7 Thou shalt purge mee with Hyssope, and I shall be cleane: thou shalt wash mee, and I shall bee whiter than snow.

8 Thou shalt make mee heare of ioy and gladnesse: that the bones which thou hast broken may rejoyce.

9 Turn thy face from my sinne: and put out all my misdeeds.

10 Make me a cleane heart, (O God) and renue a right spirit within me.

11 Cast mee not away from thy presence: and take not thy holy Spirit from mee.

12 O give me the comfort of thy helpe againe: and stablish mee with thy free Spirit.

13 Then shall I teach thy wayes unto the wicked: and sinners shall bee converted unto thee.

14 Deliver me from bloud-guiltinesse, O God, thou that art the God of my health: and my tongue shall sing of thy righteousnesse.

15 Thou shalt open my lips, (O Lord:) and my mouth shall shew thy praise.

16 For thou desirest no sacrifice, else would I give it thee: but thou delightest not in burnt-offerings.

17 The sacrifice of God is a troubled spirit: a broken and a contrite heart (O God) shalt thou not despise.

18 O be favourable and gracious unto Sion: build thou the wals of Jerusalem.

19 Then shalt thou bee pleased with the sacrifice of righteousnesse, with the burnt-offerings and oblations: then shall they offer young bullocks upon thine altar.

*Quid gloriaris? Psal. Lij.*

WHy boastest thou thy selfe, thou tyrant: that thou canst doe mischiefe?

2 Whereas the goodnesse of God, endureth yet daily.

3 Thy tongue imagineth wickednesse: and with lies thou cuttest like a sharpe rasour.

4 Thou hast loved unrighteousnesse more than goodnesse: & to talk of lies more than righteousnes.

5 Thou hast loved to speake all words that may do hurt: O thou false tongue.

6 Therefore shall God destroy thee for ever: he shall take thee, and pluck thee out of thy dwelling: and root thee out of the land of the living.

7 The righteous also shall see this, and feare: and shall laugh him to scorne.

8 Lo this is the man that tooke not God for his strength: but trusted unto the multitude of his riches: and strengthened himselfe in his wickednesse.

9 As for me, I am like a greene Olive tree in the house of God: my trust is in the tender mercy of God for ever and ever.

10 I will alwaies give thankes unto thee, for that thou hast done: and I will hope in thy name, for thy Saints like it well.

*Dixit insipiens. Psal. 53.* } *Evening Prayer.*

THe foolish body hath said in his heart: There is no God.

2 Corrupt are they, and become abhominable in their wickednesse, there is none that doth good.

3 God looked downe from heaven upon the children of men, to see if there were any that would understand and seeke after God.

4 But they are all gone out of the way, they are altogether become abhominable, there is also none that doth good, no not one.

5 Are not they without understanding that worke wickednesse, eating up my people as it they would eat bread? they have not called upon God.

6 They were afraid where no feare was: for God hath broken the bones of him that besieged thee, thou hast put them to confusion, because God hath despised them.

7 Oh that the salvation were given unto Israel out of Sion: oh that the Lord would deliver his people out of captivity.

8 Then should Jacob rejoyce: and Israel should be right glad.

*Deus in nomine. Psal. 54.*

SAve me, O God, for thy names sake: and avenge me in thy strength.

2 Heare my prayer, O God: and hearken unto the words of my mouth.

3 For strangers are risen up against me: and tyrants (which have not God before their eyes) seeke after my soule.

4 Behold, God is my helper: the Lord is with them that uphold my soule.

5 He shall reward evill unto mine enemies: destroy thou them in thy truth.

6 An offering of a free heart will I give thee, and praise thy Name (O Lord:) because it is so comfortable.

7 For he hath delivered me out of all my trouble: and mine eye hath seene his desire upon mine enemies.

*Deus*

*Exaudi Deus.* Pſal. Lv.

HEare my prayer, O God: and hide not thy ſelfe from my petition.

2 Take heed unto me, and heare me: how I mourn in my prayer, and am vexed.

3 The enemie cryeth ſo, and the ungodly commeth on ſo faſt: for they are minded to doe mee ſome miſchiefe, ſo maliciouſly are they ſet againſt me.

4 My heart is diſquieted within me: and the feare of death is fallen upon mee.

5 Fearefulneſſe and trembling are come upon me: and an horrible dread hath overwhelmed me.

6 And I ſaid, O that I had wings like a dove: for then would I flie away, and be at reſt.

7 Loe then would I get me away farre off: and remaine in the wilderneſſe.

8 I would make haſte to eſcape: becauſe of the ſtormy wind and tempeſt.

9 Deſtroy their tongues (O Lord) and divide them: for I have ſpied unrighteouſneſſe and ſtrife in the City.

10 Day and night they goe about within the wals thereof: miſchiefe alſo, and ſorrow are in the mids of it.

11 Wickedneſſe is therein: deceit and guile goe not out of their ſtreets.

12 For it is not an open enemy that hath done mee this diſhonour, for then I could have borne it.

13 Neither was it mine adverſary that did magnifie himſelfe againſt me, for then (peradventure) I would have hid my ſelfe from him.

14 But it was even thou my companion, my guide: and mine owne familiar friend.

15 We tooke ſweet counſell together, and walked in the houſe of God, as friends.

16 Let death come haſtily upon them, and let them goe downe quicke into hell: for wickedneſſe is in their dwellings, and among them.

17 As for me, I will call upon God: and the Lord ſhall ſave me.

18 In the evening and morning, and at noone day will I pray, and that inſtantly: and he ſhall heare my voice.

19 It is he that hath delivered my ſoule in peace, from the battell that was againſt me: for there were many with me.

20 Yea, even God that indureth for ever, ſhall heare me, and bring them downe: for they will not turne nor feare God.

21 He laid his hands upon ſuch as bee at peace with him: and hee brake his covenant.

22 The words of his mouth were ſofter than butter, having warre in his heart: his words were ſmoother than oyle, and yet be they very ſwords.

23 O caſt thy burthen upon the Lord, and he ſhall nouriſh thee; and ſhall not ſuffer the righteous to fall for ever.

24 And as for them; thou, O God, ſhalt bring them into the pit of deſtruction.

25 The bloud thirſty and deceitfull men, ſhall not live out halfe their dayes: nevertheleſſe, my truſt ſhall be in thee, O Lord.

*Miſerere mei Deus.* Pſal. 56. } *Morning Prayer.*

BE mercifull unto me, O God, for man goeth about to devoure me: he is daily fighting and troubling me.

2 Mine enemies are daily in hand to ſwallow mee up: for they be many that fight againſt mee, O thou moſt Higheſt.

3 Nevertheleſſe, though I am ſometime afraid: yet put I my truſt in thee.

4 I will praiſe God, becauſe of his word: I have put my truſt in God, and will not feare what fleſh can do unto me.

5 They daily miſtake my words: all that they imagine is to doe me evill.

6 They hold all together and keepe themſelves cloſe, and mark my ſteps, when they lay wait for my ſoule.

7 Shall they eſcape for their wickedneſſe: thou (O God) in thy diſpleaſure ſhalt caſt them downe.

8 Thou telleſt my flittings, put my teares into thy bottle: are not theſe things noted in thy booke?

9 Whenſoever I call upon thee, then ſhall mine enemies be put to flight: this I know, for God is on my ſide.

10 In Gods word will I reioyce: in the Lords Word will I comfort me.

11 Yea, in God have I put my truſt: I will not be afraid what man can doe unto mee.

12 Vnto thee (O God) will I pay my vowes: unto thee will I give thankes.

13 For thou haſt delivered my ſoule from death, and my feet from falling: that I may walke before God in the light of the living.

*Miſerere mei Deus.* Pſal. 57.

BE mercifull unto me, O God, bee mercifull unto me, for my ſoule truſteth in thee

thee: and under the shadow of thy wings shall be my refuge, untill this tyranny be overpast.

2 I will call unto the most high God: even unto the God that shall performe the cause which I have in hand.

3 He shall send from heaven: and save me from the reproofe of him that would eat me up.

4 God shall send forth his mercy and truth, my soule is among Lions.

5 And I lie even among the children of men (that are set on fire) whose teeth are speares and arrowes, and their tongue a sharpe sword.

6 Set up thy selfe, O God, above the heavens: and thy glory above all the earth.

7 They have laid a net for my feet, and pressed downe my soule: they have digged a pit before me, and are fallen into the middest of it themselves.

8 My heart is fixed, O God, my heart is fixed: I will sing and give praise.

9 Awake up my glory, awake Lute and Harpe: I my selfe will awake right early.

10 I will give thankes unto thee, O Lord, among the people, and I will sing unto thee among the Nations.

11 For the greatnesse of thy mercy reacheth unto the heavens: and thy truth unto the clouds.

12 Set up thy selfe, O God, above the heavens: and thy glory above all the earth.

*Si vere utique.* Psal. Lviij.

ARe your minds set upon righteousnesse, O yee congregation: and doe yee judge the thing that is right, O yee sonnes of men?

2 Yea, ye imagine mischiefe in your heart upon the earth: and your hands deale with wickednesse.

3 The ungodly are froward, even from their mothers wombe: as soone as they bee borne, they goe astray, and speake lies.

4 They are as venomous as the poyson of a serpent: even like the deafe Adder, that stoppeth her eares.

5 Which refuseth to heare the voyce of the charmer: charme he never so wisely.

6 Breake their teeth (O God) in their mouths, smite the jaw bones of the Lions, O Lord: let them fall away like water that runneth apace, and when they shoot their arrowes, let them be rooted out.

7 Let them consume away like a snaile, and bee like the untimely fruit of a woman: and let them not see the Sunne.

8 Or ever your pots be made hot with thornes: so let indignation vex him, even as a thing that is raw.

9 The righteous shall rejoyce, when he seeth the vengeance: he shall wash his footesteps in the bloud of the ungodly.

10 So that a man shall say, Verily, there is a reward for the righteous: doubtlesse there is a God that judgeth the earth.

*Eripe me de inimicis.* Psal. Lix. } { *Evening prayer.*

DEliver mee from mine enemies (O God) defend me from them that rise up against me.

2 O Deliver mee from the wicked doers: and save me from the bloud-thirsty men.

3 For loe, they lie waiting for my soule: the mighty men are gathered against me, without any offence or fault of me, O Lord.

4 They runne and prepare themselves without my fault: arise thou therfore to help me, and behold.

5 Stand up (O Lord God of hosts) thou God of Israel, to visit all the heathen: and bee not mercifull unto them that offend of malicious wickednesse.

6 They goe to and fro in the evening: they grin like a dogge, and runne about thorow the City.

7 Behold, they speak with their mouth, and swords are in their lips: for who doth heare?

8 But thou, O Lord, shalt have them in derision: and thou shalt laugh all the heathen to scorne.

9 My strength will I ascribe unto thee: for thou art the God of my refuge.

10 God sheweth mee his goodnesse plenteously: and God shall let me see my desire upon my enemies.

11 Slay them not, lest my people forget it: but scatter them abroad among the people, and put them downe, O Lord, our defence.

12 For the sin of their mouth, and for the words of their lips, they shall be taken in their pride: and why? their preaching is of cursing and lies.

13 Consume them in thy wrath, consume them, that they may perish: and know that it is God that ruleth in Jacob, and unto the ends of the world.

14 And in the evening they will returne, grinne like a dogge, and will goe about the City.

15 They will runne here and there for meat:

meat: and grudge, if they be not satisfied.

15 As for me, I will sing of thy power, and will praise thy mercy betimes in the morning: for thou hast been my defence and refuge in the day of my trouble.

17 Vnto thee (O my strength) will I sing: for thou, O God, art my refuge, and my mercifull God.

*Deus repulisti nos.* Psal. Lx.

O God, thou hast cast us out, and scattered us abroad: thou also hast been displeased, O turn thee unto us again.

2 Thou hast moved the land, and divided it: heale the sores thereof, for it shaketh.

3 Thou hast shewed thy people heavie things: thou hast given us a drink of deadly wine.

4 Thou hast given a token for such as feare thee: that they may triumph because of the truth.

5 Therefore were thy beloved delivered: help me with thy right hand, and heare me.

6 God hath spoken in his holinesse, I will rejoyce and divide Sichem: and mete out the valley of Succoth.

7 Gilead is mine, and Manasses is mine: Ephraim also is the strength of my head, Iuda is my Law-giver.

8 Moab is my wash pot, over Edom will I cast out my shoe: Philistia be thou glad of me.

9 Who will lead me into the strong city: who will bring me into Edom?

10 Hast thou not cast us out, O God: wilt not thou, O God, goe out with our hosts?

11 O be thou our helpe in trouble: for vaine is the help of man.

12 Through God will we do great acts: for it is he that shall tread downe our enemies.

*Exaudi Deus.* Psal. lxi.

HEare my crying, O God: give eare unto my prayer.

2 From the ends of the earth will I call unto thee: when my heart is in heavinesse.

3 O set me up upon the rocke that is higher than I: for thou hast beene my hope, and a strong tower for me against the enemy.

4 I will dwel in thy tabernacle for ever: and my trust shall be under the covering of thy wings.

5 For thou, O Lord, hast heard my desires: and hast given an heritage unto those that feare thy name.

6 Thou shalt grant the King a long life: that his yeares may endure throughout all generations.

7 He shall dwell before God for ever: O prepare thy loving mercy and faithfulnesse, that they may preserve him.

8 So will I alwaies sing praise unto thy Name: that I may daily perfome my vowes.

*Nonne Deo.* } { *Morning*
Psal. lxii. } { *Prayer.*

MY soule truly waiteth still upon God: for of him commeth my salvation.

2 He verily is my strength and my salvation: hee is my defence, so that I shall not greatly fall.

3 How long will ye imagine mischiefe against every man: ye shall be slaine all the sort of you, yea, as a tottering wall shall ye be, and like a broken hedge.

4 Their device is onely how to put him out whom God will exalt: their delight is in lies, they give good words with their mouth, but curse with their heart.

5 Nevertheless, my soule, wait thou still upon God: for my hope is in him.

6 He truly is my strength and my salvation: he is my defence, so that I shall not fall.

7 In God is my health and my glory: the rocke of my might, and in God is my trust.

8 O put your trust in him alway (yee people:) powre out your hearts before him, for God is our hope.

9 As for the children of men, they are but vain: the children of men are deceitfull upon the weights, they are altogether lighter than vanity it selfe.

10 O trust not in wrong and robbery, give not your selves unto vanity: if riches increase, set not your heart upon them.

11 God spake once and twice: I have also heard the same: that power belongeth unto God.

12 And that thou Lord art mercifull: for thou rewardest every man according to his worke.

*Deus Deus meus.* Psal. Lxiii.

O God, thou art my God, earely will I seeke thee.

2 My soule thirsteth for thee, my flesh also longeth after thee: in a barren and dry land where no water is.

3 Thus have I looked for thee in holinesse: that I might behold thy power and glory.

4 For thy loving kindnesse is better than the life it selfe: my lips shall praise thee.

5 As long as I live will I magnifie thee on this manner: and lift up my hands in thy Name.

6 My soule shall be satisfied even as it were with marrow and fatnesse: when my mouth praiseth thee with joyfull lips.

7 Have I not remembred thee in my bed: and thought upon thee when I was waking?

8 Because thou hast bin my helper: therefore under the shadow of thy wings will I rejoyce.

9 My soule hangeth upon thee: thy right hand hath upholden me.

10 These also that seeke the hurt of my soule: they shall goe under the earth.

11 Let them fall upon the edge of the sword: that they may bee a portion for foxes.

12 But the King shall rejoyce in God, all they also that sweare by him, shall bee commended: for the mouth of them that speak lies shall be stopped.

*Exaudi Deus.* Psal. Lxiii.

HEare my voice, O God, in my prayer: preserve my life from feare of the enemy.

2 Hide me from the gathering together of the froward: and from the insurrection of wicked doers.

3 Which have whet their tongue like a sword: and shoot out their arrowes, even bitter words.

4 That they may privily shoot at him, that is perfect: suddenly do they hit him, and feare not.

5 They courage themselves in mischiefe: and commune among themselves, how they may lay snares, and say that no man shall see them.

6 They imagine wickednesse, and practice it: that they keepe secret among themselves, every man in the deepe of his heart.

7 But God shall suddenly shoot at them with a swift arrow: that they shall bee wounded.

8 Yea their owne tongues shall make them fall: insomuch that who so seeth them, shall laugh them to scorne.

9 And all men that see it shall say, This hath God done: for they shall perceive that it is his worke.

10 The righteous shall rejoyce in the Lord, and put his trust in him, and all they that are true of heart, shall be glad.

*Te decet hymnus* } *Evening*
Psal. 65. } *prayer.*

THou, O God, art praised in Sion: and unto thee shall the vow be performed in Ierusalem.

2 Thou that hearest the prayer: unto thee shall all flesh come.

3 My misdeeds prevaile against mee; O be thou mercifull unto our sinnes.

4 Blessed is the man whom thou chooseſt, and receivest unto thee; he shall dwell in thy court, & shall be satisfied with the pleasures of thy house, even of thy holy Temple.

5 Thou shalt shew us wonderfull things in thy righteousnesse, O God of our salvation; thou that art the hope of all the ends of the earth, and of them that remaine in the broad Sea.

6 Which in his strength setteth fast the mountaines, and is girded about with power.

7 Which stilleth the raging of the Sea: and the noise of his waves, and the madnesse of his people.

8 They also that dwell in the uttermost parts of the earth, shall be afraid at thy tokens: thou that makest the outgoings of the morning and evening to praise thee.

9 Thou visitest the earth, and blessest it; thou makest it very plenteous.

10 The river of God, is full of water, thou preparest their corne: for so thou provideſt for the earth.

11 Thou waterest her furrows, thou sendest raine into the little valleyes thereof: thou makest it soft with the drops of raine, and blessest the increase of it.

12 Thou crownest the yeere with thy goodnesse: and thy clouds drop fatnesse.

13 They shall drop upon the dwellings of the wildernesse: and the little hils shall rejoyce on every side.

14 The folds shall bee full of sheepe: the valleyes also shall stand so thicke with corne, that they shall laugh and sing.

*Iubilate Deo.* Psal. 66.

O Be joyfull in God all ye lands: sing praises unto the honour of his Name: make his praise to be glorious.

2 Say unto God, O how wonderfull art thou in thy workes: through the greatnesse of thy power shall thine enemies be found lyars unto thee,

3 For

3 For all the world ſhall worſhip thee: ſing of thee, and praiſe thy Name.

4 O come hither and behold the works of God: how wonderfull he is in his doing toward the children of men.

5 He turned the ſea into dry land: ſo that they went thorow the water on foot, there did wee reioyce thereof.

6 He ruleth with his power for ever, his eyes behold the people: and ſuch as will not beleeve, ſhall not be able to exalt themſelves.

7 O praiſe our God (yee people:) and make the voice of his praiſe to be heard.

8 Which holdeth our ſoule in life: and ſuffereth not our feet to ſlip.

9 For thou (O God) haſt proved us: thou alſo haſt tryed us, like as ſilver is tryed.

10 Thou broughteſt us into the ſnare: and layeſt trouble upon our loynes.

11 Thou ſuffereſt men to ride over our heads, wee went thorow fire and water, and thou broughteſt us out into a wealthy place.

12 I will go into thy houſe with burnt offerings: and will pay thee my vowes which I promiſed with my lips, and ſpake with my mouth, when I was in trouble.

13 I will offer unto thee fat burnt ſacrifices, with the incenſe of rams: I will offer bullock and goats.

14 O come hither and hearken, all ye that feare God: and I will tell you what he hath done for my ſoule.

15 I called unto him with my mouth: and gave him praiſes with my tongue.

16 If I incline unto wickedneſſe with my heart: the Lord will not heare me.

17 But God hath heard me: and conſidered the voice of my prayer.

18 Praiſed be God, which hath not caſt out my prayer: nor turned his mercy from me.

*Deus miſereatur.* Pſal. 67.

GOd be mercifull unto us and bleſſe us: and ſhew us the light of his countenance, and be mercifull unto us.

2 That thy way may be knowne upon earth: thy ſaving health among all nations.

3 Let the people praiſe thee, O God: yea, let all the people praiſe thee.

4 O let the nations reioyce & be glad: for thou ſhalt iudge the folke righteouſly, and governe the nations upon earth.

5 Let the people praiſe thee, O God: let all the people praiſe thee.

6 Then ſhall the earth bring forth her increaſe: and God, even our own God, ſhall give us his bleſſing.

7 God ſhall bleſſe us: and all the ends of the world ſhall feare him.

*Exurgat Deus.* } *Morning*
Pſal. Lxviii. } *Prayer.*

LEt God ariſe, and let his enemies be ſcattered: let them alſo that hate him, flee before him.

2 Like as the ſmoake vaniſheth, ſo ſhalt thou drive them away: and like as wax melteth at the fire, ſo let the ungodly periſh at the preſence of God.

3 But let the righteous be glad and reioyce before God, let them alſo be merry and ioyfull.

4 O ſing unto God, and ſing praiſes to his Name: magnifie him that rideth upon the heavens, as it were upon an horſe, praiſe him in his Name, yea, and reioyce before him.

5 He is a father of the fatherleſſe, and defendeth the cauſe of the widowes: even God in his holy habitation.

6 Hee is the God, that maketh men to be of one mind in an houſe, and bringeth the priſoners out of captivity: but letteth the runnagates continue in ſcarceneſſe.

7 O God, when thou wenteſt forth before the people: when thou wenteſt thorow the wilderneſſe.

8 The earth ſhooke, and the heavens dropped at the preſence of God: even as Sinai alſo was moved at the preſence of God, which is the God of Iſrael.

9 Thou, O God, ſendeſt a gracious raine upon thine inheritance: and refreſheſt it when it was weary.

10 Thy congregation ſhal dwell therein: for thou O God, haſt of thy goodneſſe prepared for the poore.

11 The Lord gave the word: great was the compony of the Preachers.

12 Kings with their armies did flie, and were diſcomfited: and they of the houſhold divided the ſpoyle.

13 Though yee have lien among the pots, yet ſhal ye be as the wings of a dove: that is covered with ſilver wings, and her feathers like gold.

14 When the Almighty ſcattered kings for their ſake: then were they as white as ſnow in Salmon.

15 As the hill of Baſan, ſo is Gods hill: even an high hill, as the hill of Baſan.

16 Why hop ye ſo, ye high hils; this is Gods hill, in the which it pleaſeth him to dwell: yea, the Lord wil abide in it for ever.

17 The chariets of God are twenty thousand, even thousands of Angels: and the Lord is among them as in the holy place of Sinai.

18 Thou art gone up on high, thou hast led captivity captive, and received gifts for men: yea, even for thine enemies, that the Lord God might dwel among them.

19 Praised be the Lord daily: even the God which helpeth us, and powreth his benefits upon us.

20 He is our God, even the God of whom commeth salvation: God is the Lord, by whom we escape death.

21 God shal wound the head of his enemies: and the hairy scalpe of such a one as goeth on still in his wickednesse.

22 The Lord hath said, I will bring my people againe, as I did from Basan: mine owne will I bring againe, as I did sometime from the deepe of the Sea.

23 That thy foot may be dipped in the bloud of thine enemies: and that the tongue of thy dogges may be red through the same.

24 It is well seene, O God, how thou goest: how thou my God and King, goest in the Sanctuary.

25 The Singers goe before, the Minstrels follow after: in the middest are the damosels playing with the Timbrels.

26 Give thanks, O Israel, unto God the Lord in the Congregations: from the ground of the heart.

27 There is little Beniamin their ruler, and the Princes of Juda their counsell: the Princes of Zabulon, and the Princes of Nephthali.

28 Thy God hath sent forth strength for thee: stablish the thing, O God, that thou hast wrought in us.

29 For thy Temples sake at Jerusalem: so shall Kings bring presents unto thee.

30 When the company of the speare-men, and multitude of the mighty are scattered abroad among the beasts of the people, (so that they humbly bring peeces of silver:) and when hee hath scattered the people that delight in warre.

31 Then shall the Princes come out of Egypt, the Morians land shal soon stretch out her hands unto God.

32 Sing unto God, O yee Kingdomes of the earth: O sing praises unto the Lord.

33 Which sitteth in the heavens over all from the beginning: loe, hee doth send out his voice, yea and that a mighty voyce.

34 Ascribe yee the power to God over Israel: his worship and strength is in the clouds.

35 O God, wonderfull art thou in thy holy places: even the God of Israel, hee will give strength and power unto his people: Blessed be God.

*Salvum me fac.* Psal. Lxix. } Evening Prayer.

SAve me, O God: for the waters are come in, even unto my soule.

2 I sticke fast in the deepe myre, where no ground is: I am come into deepe waters, so that the flouds runne over me.

3 I am weary of crying, my throat is dry. my sight faileth me, for waiting so long upon my God.

4 They that hate me without a cause, are moe than the haires of my head: they that are mine enemies, and would destroy me guiltlesse, are mighty.

5 I payed them the things that I never tooke: God thou knowest my simplenesse, and my faults are not hid from thee.

6 Let not them that trust in thee, O Lord God of hosts, be ashamed for my cause: let not those that seeke thee be confounded, through me, O Lord God of Israel.

7 And why? for thy sake have I suffered reproofe: shame hath covered my face.

8 I am become a stranger unto my brethren: even an aliant unto my mothers children.

9 For the zeale of thy house hath even eaten me: and the rebukes of them that rebuked thee, are fallen upon me.

10 I wept, and chastened my self with fasting: and that was turned to my reproofe.

11 I put on sacke-cloth also: and they jested upon me.

12 They that sit in the gate, speake against me: and the drunkards make songs upon me.

13 But Lord, I make my prayer unto thee: in an acceptable time.

14 Heare me, O God, in the multitude of thy mercies: even in the truth of thy salvation.

15 Take me out of the mire, that I sinke not: oh let mee be delivered from them that hate me, and out of the deep waters.

16 Let not the water-flood drowne mee, neither let the deepe swallow me up: and let not the pit shut her mouth upon mee.

17 Heare me, O Lord, for thy loving kindnesse

findeſſe it comfortable: turne thee unto me, according to the multitude of thy mercies.

18 And hide not thy face from thy ſervant, for I am in trouble: O haſte thee, and heare me.

19 Draw nigh unto my ſoule, and ſave it, oh deliver me, becauſe of mine enemies.

20 Thou haſt knowne my reproofe, my ſhame and my diſhonour: mine adverſaries are all in thy ſight.

21 Thy rebuke hath broken my heart I am full of heavineſſe: I looked for ſome to have pitie on me, but there was no man, neither found I any to comfort me

22 They gave me gall to eat: and when I was thirſty, they gave me vinegar to drinke.

23 Let the ſir table be made a ſnare to take them withall: and let the things that ſhould have been for their wealth, be unto them an occaſion of falling.

24 Let their eyes be blinded that they ſee not: and ever bow downe their backs.

25 Powre out thine indignation upon them: and let thy wrathfull diſpleaſure take hold on them.

26 Let their habitation be voide: and no man to dwell in their tents.

27 For they perſecute him whom thou haſt ſmitten: and they talke how they may vex them whom thou haſt wounded

28 Let them fall from one wickedneſs to another: and not come into thy righteouſneſſe.

29 Let them bee wiped out of the booke of the living: and not be written among the righteous.

30 As for me, when I am poore and in heavineſſe, thy help (O God) ſhall lift me up

31 I will praiſe the Name of God with a ſong: and magnifie it with thankſgiving.

32 This alſo ſhall pleaſe the Lord: better than a bullocke that hath hornes and hoofes.

33 The humble ſhall conſider this, and be glad. Seeke ye after God, and your ſoule ſhall live.

34 For the Lord heareth the poore: and deſpiſeth not his priſoners.

35 Let heaven and earth praiſe him: the Sea, and all that moveth therein.

36 For God will ſave Sion: and build the Cities of Iudah: that men may dwell there, and have it in poſſeſſion.

37 The poſterity alſo of his ſervants ſhall inherit it: and they that love his name, ſhall dwell therein.

*Deus in adjutorium.* Pſal. Lxx.

HAſte thee, O God, to deliver me: make haſte to help me, O Lord.

2 Let them be aſhamed and confounded, that ſeeke after my ſoule: let them be turned backward, and put to confuſion that wiſh me evil.

3 Let them (for their reward) be ſoone brought to ſhame: that cry over me, There, there.

4 But let all thoſe that ſeeke thee, bee joyful and glad in thee: and let ſuch as delight in thy ſalvation, ſay alway, The Lord be praiſed.

5 As for me, I am poore and in miſery: haſte thee unto me, O God.

6 Thou art my helper and my Redeemer: O Lord make no long tarying.

*In te Domine ſperavi.* Pſal. Lxxj. *Morning Prayer.*

IN thee, O Lord, have I put my truſt, let me never be put to confuſion: but rid me and deliver me in thy righteouſneſſe, incline thine eare unto mee, and ſave me.

2 Be thou my ſtrong hold, whereunto I may alway reſort: thou haſt promiſed to help me, for thou art my houſe of defence, and my caſtle.

3 Deliver me, O my God, out of the hand of the ungodly: out of the hand of the unrighteous and cruell man.

4 For thou, O Lord God, art the thing that I long for: thou art my hope, even from my youth.

5 Through thee have I beene holden up ever ſince I was borne: thou art he that tooke me out of my mothers wombe, my praiſe ſhall be alway of thee.

6 I am become as it were a monſter unto many: but my ſure truſt is in thee.

7 O let my mouth be filled with thy praiſe: that I may ſing of thy glory and honour all the day long.

8 Caſt me not away in the time of age: forſake mee not when my ſtrength faileth mee.

9 For mine enemies ſpeak againſt mee: and they that lay wait for my ſoule, take their counſell together, ſaying, God hath forſaken him, perſecute him, and take him, for there is none to deliver him.

10 Goe not farre from me, O God: my God haſte thee to helpe me.

11 Let them be confounded and periſh, that are againſt my ſoule: let them be covered with ſhame and diſhonor that ſeeke to doe me evil.

12 As for me, I will patiently abide alway: and will praiſe thee more and more.

13 My mouth shall daily speake of thy righteousnesse and salvation: for I know no end thereof.

14 I will goe forth in the strength of the Lord God: and will make mention of thy righteousnesse onely.

15 Thou (O God) hast taught me from my youth up until now: therefore will I tell of thy wondrous works.

16 Forsake me not, O God, in mine old age, when I am gray headed: until I have shewed thy strength unto this generation, and thy power unto all them that are yet for to come.

17 Thy righteousnesse (O God) is very high, and great things are they which thou hast done: O God, who is like unto thee?

18 O what great troubles and adversities hast thou shewed me? and yet didst thou turne and refresh mee: yea, and brought'st me from the deepe of the earth againe.

19 Thou hast brought me to great honour: and comforted me on every side.

20 Therefore will I praise thee and thy faithfulnesse (O God) playing upon an instrument of musicke: unto thee will I sing upon the harpe, O thou holy one of Israel.

21 My lips will be faine when I sing unto thee: and so will my soule, whom thou hast delivered.

22 My tongue also shall talke of thy righteousnesse all the day long: for they are confounded and brought unto shame that seeke to doe mee evill.

*Deus Judicium.* Psal. Lxxii.

GIve the King thy judgements (O God:) and thy righteousnesse unto the Kings sonne.

2 Then shall hee judge the people according unto right: and defend the poore.

3 The mountaines also shall bring peace: and the little hils righteousnesse unto the people.

4 Hee shall keepe the simple folke by their right: defend the children of the poore, and punish the wrong doer.

5 They shall feare thee as long as the Sunne and Moone endureth: from one generation to another.

6 Hee shall come downe like the raine into a fleece of woll: even as the drops that water the earth.

7 In his time shall the righteous flourish: yea, and abundance of peace, so long as the Moone endureth.

8 His dominion shall be also from the one Sea to the other: and from the flood unto the worlds end.

9 They that dwell in the wildernesse shall kneele before him: his enemies shall licke the dust.

10 The King of Tharsis, and of the Iles shall give presents: the Kings of Arabia and Saba shall bring gifts.

11 All Kings shall fall downe before him: all nations shall doe him service.

12 For he shall deliver the poore when he cryeth: the needy also, and him that hath no helper.

13 He shall be favourable to the simple and needy: and shall preserve the soules of the poore.

14 He shall deliver their soules from falshood and wrong: and deare shall their blood be in his sight.

15 Hee shall live, and unto him shall be given of the gold of Arabia: prayer shall bee made ever unto him, and daily shall he be praised.

16 There shall be an heape of corne in the earth high upon the hils: his fruit shall shake like Libanus, and shall be greene in the City, like grasse upon the earth.

17 His Name shall endure for ever: his name shall remain under the Sun among the posteritie: which shall bee blessed through him, and all the heathen shall praise him.

18 Blessed be the Lord God, even the God of Israel: which only doth wondrous things.

19 And blessed be the Name of his Majesty for ever: and all the earth shall be filled with his Majesty. Amen, Amen.

*Quam bonus Israel.* Psal. Lxxiii. *Evening prayer.*

TRuly God is loving unto Israel: even unto such as are of a cleane heart.

2 Never-the-lesse my feet were almost gone: my treadings had well nigh slipt.

3 And why? I was grieved at the wicked: I doe also see the ungodly in such prosperity.

4 For they are in no perill of death, but are lusty and strong.

5 They come in no misfortune like other folke: neither are they plagued like other men.

6 And this is the cause that they bee so holden with pride: and overwhelmed with cruelty.

7 Their eyes swell with fatnesse: and they doe even what they lust.

8 They corrupt other, and speake of wicked blasphemy: their talking is against the most Highest.

9 For

9 For they ſtretch forth their mouth unto the heaven: and their tongue goeth through the world.

10 Therefore fall the people unto them: and thereout ſucke they no ſmall aduantage.

11 Tuſh, ſay they, how ſhould God perceiue it: is there knowledge in the moſt Higheſt?

12 Loe, theſe are the ungodly, theſe proſper in the world, and theſe haue riches in poſſeſsion: and I ſaid, Then haue I cleanſed my heart in vaine, and waſhed mine handes in innocency

13 All the day long haue I been puniſhed: and chaſtened every morning.

14 Yea, and I had almoſt ſaid even as they: but loe, then ſhould I haue condemned the generation of thy children.

15 Then thought I to underſtand this: but it was too hard for me.

16 Vntill I went into the Sanctuary of God: then vnderſtood I the end of theſe men.

17 Namely, how thou doſt ſet them in ſlippery places, and caſteſt them downe, and deſtroyeſt them.

18 O how ſuddenly doeſt thy conſume, periſh, and come to a fearefull end.

19 Yea, euen like as a dreame when one awaketh, ſo ſhalt thou make their image to vaniſh out of the City.

20 Thus my heart was grieued: and it went even through my reynes.

21 So fooliſh was I and ignorant: even as it were a beaſt before thee.

22 Neuertheleſſe, I am alway by thee: for thou haſt holden me by my right hand.

23 Thou ſhalt guide mee with thy counſell: and after that receiue me with glory.

24 Whom haue I in heauen but thee: and there is none vpon earth that I deſire in compariſon of thee.

25 My fleſh and my heart faileth: but God is the ſtrength of my heart, and my portion for euer.

26 For loe, they that forſake thee ſhall periſh: thou haſt deſtroyed all them that commit fornication againſt thee.

27 But it is good for mee to hold mee faſt by God, to put my truſt in the Lord God: and to ſpeake of all thy works, in the gates of the daughter of Sion.

*Vt quid Deus. Pſal. Lxxiv*

O God, why art thou abſent from us ſo long: why is thy wrath ſo hot againſt the ſheepe of thy paſture?

2 O thinke vpon thy congregation: whom thou haſt purchaſed and redeemed of old.

3 Thinke vpon the tribe of thine inheritance: and mount Sion, wherein thou haſt dwelt.

4 Lift vp thy feet, that thou mayeſt vtterly deſtroy every enemy: which hath done euill in thy Sanctuary.

5 Thine aduerſaries roare in the middeſt of thy congregations: and ſet vp their banners for tokens.

6 He that hewed timber afore out of the thicke trees: was knowne to bring it to an excellent worke.

7 But now they breake downe all the carued worke thereof: with axes and hammers.

8 They haue ſet fire vpon thy holy places: and haue defiled the dwelling place of thy Name, euen vnto the ground.

9 Yea, they ſaid in their hearts, Let us make hauocke of them altogether: thus haue they burnt vp all the houſes of God in the land.

10 We ſee not our tokens, there is not one Prophet more: no not one is there among us that vnderſtandeth any more.

11 O God, how long ſhall the aduerſary doe this diſhonour: how long ſhall the enemy blaſpheme thy Name, for euer?

12 Why withdraweſt thou thy hand, why pluckeſt not thou thy right hand out of thy boſome, to conſume the enemy?

13 For God is my king of old: the help that is done vpon earth, hee doth it himſelfe.

14 Thou didſt diuide the ſea through thy power: thou brakeſt the heads of the Dragons in the waters.

15 Thou ſmoteſt the heads of Leviathan in pieces: and gaueſt him to be meat for the people in the wilderneſſe.

16 Thou broughteſt out fountaines & waters out of the hard rocks: thou driedſt up mighty waters.

17 The day is thine, and the night is thine: thou haſt prepared the light and the Sun.

18 Thou haſt ſet all the borders of the earth: thou haſt made ſummer and winter.

19 Remember this, O Lord, how the enemy hath rebuked: and how the fooliſh people haue blaſphemed thy Name.

20 O deliuer not the ſoule of thy Turtle dove vnto the multitude of the enemies: and forget not the congregation of the poore for euer.

21 Looke vpon the Couenant: for all the earth is full of darkeneſſe, and cruell habitations.

22 Oh let not the ſimple goe away aſhamed: but let the poore and needy give praiſe vnto thy Name.

23 Arise, O God, maintaine thine owne cause: remember how the foolish man blasphemeth thee daily.

24 Forget not the voice of thine enemies: the presumption of them that hate thee increaseth ever more and more.

*Confitebimur tibi.* Psal. 75. } *Morning prayer.*

UNto thee (O God) doe we give thanks: yea unto thee do we give thanks.

2 Thy Name also is so nigh: and that doe thy wondrous workes declare.

3 When I receive the congregation: I shall judge according unto right.

4 The earth is weake, and all the Inhabiters thereof: I beare up the pillars of it.

5 I said unto the fooles, Deale not so madly: and to the ungodly, set not up your horne.

6 Set not up your horne on high: and speake not with a stiffe necke.

7 For promotion commeth neither from the East nor from the West: nor yet from the South.

8 And why? God is the Judge: he putteth downe one, and setteth up another.

9 For in the hand of the Lord there is a cup, and the wine is red: it is full mixt, and he powreth out of the same.

10 As for the dregs thereof: all the ungodly of the earth shall drinke them, and sucke them out.

11 But I will talke of the God of Iacob: and praise him for ever.

12 All the hornes of the ungodly also will I breake: and the hornes of the righteous shall bee exalted.

*Notus in Iudæa.* Psal. 76.

IN Iury is God knowne: his name is great in Israel.

2 At Salem is his tabernacle: and his dwelling in Sion.

3 There brake he the arrowes of the bow: the shield, the sword, and the battell.

4 Thou art of more honour and might: than the hils of the robbers.

5 The proud are robbed, they have slept their sleepe: and all the men which were mighty, have found nothing.

6 At thy rebuke, O God of Iacob: both the charet and horse are fallen.

7 Thou, even thou art to be feared: and who may stand in thy sight when thou art angry?

8 Thou diddest cause thy judgement to be heard from heaven: the earth trembled, and was still.

9 When God arose to judgement: and to helpe all the meeke upon earth.

10 The fiercenesse of man shall turne to thy praise: and the fiercenesse of them shalt thou restraine.

11 Promise unto the Lord your God, and keepe it, all yee that be round about him: bring presents unto him that ought to be feared.

12 He shall restrain the spirit of Princes: and is wonderfull among the Kings of the earth.

*Voce mea ad Dominum.* Psal. Lxxvij.

I Will cry unto God with my voyce: even unto God will I cry with my voyce, and he shall hearken unto me.

2 In the time of my trouble I sought the Lord: my sore ran, and ceased not, in the night season my soule refused comfort.

3 When I am in heavinesse, I will think upon God: when my heart is vexed, I will complaine.

4 Thou holdest mine eyes waking: I am so feeble that I cannot speake.

5 I have considered the dayes of old: and the yeares that are past.

6 I call to remembrance my song: and in the night I commune with mine owne heart, and search out my spirit.

7 Will the Lord absent himselfe for ever: and will he be no more intreated.

8 Is his mercy cleane gone for ever: and is his promise come utterly to an end for evermore?

9 Hath God forgotten to be gracious: and will he shut up his loving kindnesse in displeasure?

10 And I said, it is mine owne infirmitie: but I will remember the yeares of the right hand of the most Highest.

11 I will remember the works of the Lord: and call to minde thy wonders of old time.

12 I will thinke also of all thy works: and my talking shall be of thy doings.

13 Thy way, O God, is holy: who is so great a God as our God.

14 Thou art the God that doeth wonders: and hast declared thy power among the people.

15 Thou hast mightily delivered thy people: even the sonnes of Iacob and Joseph.

16 The waters saw thee, O God, the waters saw thee, and were afraid: the depths also were troubled.

17 The

17 The clouds powred out water, the aire thundered: and thine arrowes went abroad.

18 The voice of thy thunder was heard round about: the lightnings shone upon the ground, the earth was moved and shooke withall.

19 Thy way is in the Sea, and thy paths in the great waters: and thy footsteps are not knowne.

20 Thou leadest thy people like sheep: by the hand of Moses and Aaron.

*Attendite popule.* } { *Evening*
Psal. Lxxviij. } { *Prayer.*

HEare my Law, O my people: encline your eares unto the words of my mouth

2 I will open my mouth in a parable: I will declare hard sentences of old.

3 Which we have heard and knowne: and such as our Fathers have told us.

4 That wee should not hide them from the children of the generations to come: but to shew the honour of the Lord, his mighty and wonderfull works that he hath done.

5 Hee made a Covenant with Jacob, and gave Israel a Law: which hee commanded our fore-fathers to teach their children.

6 That their posterity might know it: and the children which were yet unborne.

7 To this intent, that when they came up, they might shew their children the same.

8 That they might put their trust in God: and not to forget the works of God, but to keepe his Commandements.

9 And not to bee as their fore-fathers, a faithlesse and stubborne generation: a generation that set not their heart aright, and whose spirit cleaved not stedfastly unto God.

10 Like as the children of Ephraim: which being harnessed, and carrying bowes, turned themselves backe in the day of battell.

11 They kept not the Covenant of God: and would not walke in his Law.

12 But forgat what he had done: and the wonderful works that he had shewed [illegible].

13 Marvellous things did he in the sight of our fore-fathers in the land of [illegible] even in the field of Zoan.

14 He divided the Sea, and let them go thorow: he made the waters to stand on an heape.

15 In the day time also hee lead them with a cloud: and all the night through with a light of fire.

16 Hee clave the hard rocks in the wildernesse: and gave them drinke thereof as it had beene out of the great depth.

17 He brought waters out of the stony rocke: so that it gushed out like the Rivers.

18 Yet for all this they sinned more against him: & provoked the most Highest in the wildernesse.

19 They tempted God in their hearts: and required meat for their lust.

20 They spake against God also, saying: Shall God prepare a table in the wildernesse:

21 He smote the stony rocke indeed, that the water gushed out, and the streams flowed withall: but can he give bread also, or provide flesh for his people?

22 When the Lord heard this, he was wroth: so the fire was kindled in Jacob, and there came up heavie displeasure against Israel.

23 Because they beleeved not in God: and put not their trust in his helpe.

24 So he commanded the clouds above: and opened the doores of heaven.

25 He rained downe Manna also upon them for to eat: and gave them food from heaven.

26 So man did eat Angels food: for he sent them meat enough.

27 Hee caused the East wind to blow under heaven: and through his power hee brought in the South-west wind.

28 He rained flesh upon them as thicke as dust: and feathered fowle like as the sand of the Sea.

29 He let it fall among their tents: even round about their habitation.

30 So they did eat and were wel filled, for he gave them their owne desire, they were not disappointed of their lust.

31 But while the meat was yet in their mouths, the heavie wrath of God came upon them, and slew the wealthiest of them: yea, and smote downe the chosen men that were in Israel.

32 But for all this they sinned yet more: and beleeved not his wondrous works.

33 Therefore their dayes did hee consume in vanity, and their yeares in trouble.

34 When hee slew them, they sought him: and turned them early, and enquired after God.

35 And they remembred that God was their strength: and that the high God was their Redeemer.

36 Neverthelesse, they did but flatter

him with their mouth : and dissembled with him in their tongue.

37 For their heart was not whole with him : neither continued they stedfast in his Covenant.

38 But he was so mercifull that hee forgave their misdeeds : and destroyed them not.

39 Yea, many a time turned he his wrath away : and would not suffer his whole displeasure to arise.

40 For hee considered that they were but flesh : and that they were even a wind that passeth away, and commeth not againe.

41 Many a time did they provoke him in the wildernesse : and grieved him in the desart.

42 They turned backe and tempted God : and moved the holy One in Israel.

43 They thought not on his hand : and of the day when hee delivered them from the hand of the enemie.

44 How he had wrought his miracles in Egypt : and his wonders in the field of Zoan.

45 He turned their waters into blood : so that they might not drinke of the Rivers.

46 He sent lice among them, and devoured them up : and frogs to destroy them.

47 He gave their fruit unto the caterpillar : and their labour unto the grashopper.

48 He destroyed their Vines with hailstons, & their Mulbury trees with the frost

49 Hee smote their cattell also with hailestones : and their flocks with hot thunderbolts.

50 Hee cast upon them the furiousnesse of his wrath, anger, displeasure and trouble, and sent evil Angels among them.

51 He made a way to his indignation, and spared not their soule from death : but gave their life over to the pestilence.

52 And smote all the first-borne in Egypt : the most principall and mightiest in the dwellings of Ham.

53 But as for his owne people, he led them forth like sheepe : and carried them in the wildernesse like a flocke.

54 Hee brought them out safely, that they should not feare : and overwhelmed their enemies with the Sea.

55 And brought them within the borders of his Sanctuary : even to his mountaine which he purchased with his right hand.

56 Hee cast out the heathen also before them : caused their land to bee divided among them for an heritage, and made the tribes of Israel to dwell in their tents.

57 So they tempted and displeased the most high God : and kept not his Testimonies.

58 But turned their backes, and fell away like their forefathers : starting aside like a broken bow.

59 For they grieved him with their high Altars : and provoked him to displeasure with their images.

60 When God heard this, he was wroth : and tooke sore displeasure at Israel.

61 So that he forsooke the Tabernacle in Silo : even the tent that he had pitched among them.

62 He delivered their power into captivity : and their beauty into the enemies hand.

63 He gave his people over also unto the sword : and was wroth with his inheritance.

64 The fire consumed their young men : and their maidens were not given to marriage.

65 Their Priests were slaine with the sword : and there were no widowes to make lamentation.

66 So the Lord awaked as one out of sleepe : and like a giant refreshed with wine.

67 He smote his enemies in the hinder parts : and put them to a perpetuall shame.

68 He refused the Tabernacle of Joseph : and chose not the tribe of Ephraim.

69 But chose the tribe of Judah : even the hill of Sion, which he loved.

70 And there hee builded his Temple on high : and laid the foundation of it like the ground, which hee hath made continually.

71 Hee chose David also his servant : and tooke him away from the sheep-folds.

72 As hee was following the Ewes great with young ones, he tooke him : that he might feed Jacob his people, and Israel his inheritance.

73 So hee fed them with a faithfull and true heart : and ruled them prudently with all his power.

*Domine venerunt.* } *Morning*
Psal. lxxix. } *prayer.*

O God, the heathen are come into thine inheritance : thy holy Temple have they defiled, and made Jerusalem an heape of stones.

2 The dead bodies of thy servants have they given to be meat unto the fowls

of

of the ayre: and the flesh of thy Saints unto the beasts of the land.

3 Their bloud have they shed like water on every side of Jerusalem: and there was no man to bury them.

4 Wee are become an open shame to our enemies: a very scorne and derision unto them that are round about us.

5 Lord how long wilt thou be angry: shall thy jealousie burne like fire for ever?

6 Powre out thine indignation upon the heathen that have not knowne thee: and upon the kingdomes that have not called upon thy Name.

7 For they have devoured Jacob: and layd waste his dwelling place.

8 O remember not our old sinnes, but have mercy upon us, and that soone: for wee are come to great misery.

9 Helpe us, O God of our salvation, for the glory of thy Name: O deliver us, and be mercifull unto our sinnes, for thy Names sake.

10 Wherefore doe the heathen say: where is now their God?

11 O let the vengeance of thy servants bloud that is shedde openly shewed upon the heathen in our sight.

12 O let the sorrowfull sighing of the prisoners come before thee: according to the greatnesse of thy power, preserve thou those that are appointed to die.

13 And for the blasphemy wherewith our neighbours have blasphemed thee: reward thou them (O Lord) seven-fold into their bosome.

14 So we that bee thy people and sheep of thy pasture, shall give thee thankes for ever: and will alway be shewing forth thy praise from generation to generation.

## *Qui regis Israel.* Psal. Lxxx.

HEare, O thou shepheard of Israel, thou that leddest Ioseph like a sheep: shew thy selfe also thou that sittest upon the Cherubims.

2 Before Ephraim, Beniamin, and Manasses, stirre up thy strength, and come and helpe us.

3 Turne us againe, O God: shew the light of thy countenance, and we shall be whole.

4 O Lord God of hosts: how long wilt thou bee angry with thy people that pray?

5 Thou feedest them with the bread of teares, and givest them plentifulnesse of teares to drinke.

6 Thou hast made us a very strife unto our neighbours, and our enemies laugh us to scorne.

7 Turne us againe, thou God of hosts, shew the light of thy countenance, and we shall be whole.

8 Thou hast brought a vine out of Egypt, thou hast cast out the heathen, and planted it.

9 Thou madest roome for it, and when it had taken root, it filled the land.

10 The hils were covered with the shadow of it, and the boughes thereof were like the goodly cedar trees.

11 She stretched out her branches unto the Sea, and her boughes unto the river.

12 Why hast thou then broken downe her hedge, that all they that go by, plucke off her grapes?

13 The wild bore out of the wood doth root it up: and the wilde beasts of the field devoure it.

14 Turne thee again thou God of hosts, looke downe from heaven: behold, and visit this vine.

15 And the place of the vineyard that thy right hand hath planted: and the branch that thou madest so strong for thine owne selfe.

16 It is burnt with fire, and cut downe: and they shall perish at the rebuke of thy countenance.

17 Let thy hand be upon the man of thy right hand: and upon the Son of man whom thou madest so strong for thine owne selfe.

18 And so will not we goe backe from thee: O let us live, and we shall call upon thy Name.

19 Turne us againe, O Lord God of hosts: shew the light of thy countenance, and we shall be whole.

## *Exultate Deo.* Psal. 81.

SIng we merily unto God our strength: make a cheerefull noyse unto the God of Iacob.

2 Take the Psalme, bring hither the Tabret: the merry Harpe with the Lute.

3 Blow up the Trumpet in the new Moon: even in the time appointed, and upon our solemne Feast day.

4 For this was made a statute for Israel: and a Law of the God of Iacob.

5 This hee ordained in Ioseph for a testimony: when he came out of the land of Egypt, and had heard a strange language.

6 I eased his shoulder from the burden: and his hands were delivered from making the pots.

7 Thou callest upon mee in troubles, and I delivered thee: and heard thee what time as the storme fell upon thee.

8 I proved thee also: at the waters of Strife.

9 Heare, O my people, and I will assure thee, O Israel: if thou wilt hearken unto mee.

10 There shall no strange god be in thee: neither shalt thou worship any other god.

11 I am the Lord thy God, which brought thee out of the land of Egypt: open thy mouth wide, and I shall fill it.

12 But my people would not heare my voyce, and Israel would not obey me.

13 So I gave them up to their owne hearts lust: and let them follow their owne imaginations.

14 O that my people would have hearkned unto me: for if Israel had walked in my wayes.

15 I should soone have put downe their enemies: and turned my hand against their adversaries.

16 The haters of the Lord should have bin found lyars: but their time should have endured for ever.

17 He should have fed them also with the finest wheat flour: and with honey out of the stony rocke should I have satisfied thee.

*Deus stetit.* } *Evening*
Psal. 82. } *Prayer.*

GOd standeth in the Congregation of Princes: he is a Judge among gods.

2 How long will ye give wrong judgement: and accept the persons of the ungodly?

3 Defend the poore and fatherlesse: see that such as be in need and necessity have right.

4 Deliver the out-cast and poore: save them from the hand of the ungodly.

5 They will not bee learned nor understand, but walke still in darknesse: all the foundations of the earth bee out of course.

6 I have said, ye are gods: and ye all the children of the most Highest.

7 But ye shall die like men: and fall like one of the Princes.

8 Arise, O God, and judge thou the earth: for thou shalt take all the heathen thine inheritance.

*Deus quis similis.* Psal. lxxxiij.

HOld not thy tongue, O God, keepe not still silence: refraine not thy selfe, O God.

2 For loe, thine enemies make a murmuring: and they that hate thee have lift up their head.

3 They have imagined craftily against thy people: and taken counsell against thy secret ones.

4 They have said, Come and let us roote them out, that they bee no more a people: and that the Name of Israel may be no more in remembrance.

5 For they have cast their heads together with one consent: and are confederat against thee.

6 The Tabernacles of the Edomites, and the Ismaelites, the Moabites, and Hagarens.

7 Gebal, and Ammon, and Amalech: the Philistines, with them that dwell at Tyre.

8 Assur also is joyned unto them: and have holpen the children of Lot.

9 But doe thou unto them as unto the Midianites: unto Sisera, and unto Jabin, at the brooke of Kison.

10 Which perished at Endor, and became as the dung of the earth.

11 Make them and their Princes like Oreb and Zeb: yea, make all their Princes like as Zeba and Salmana.

12 Which say, Let us take to our selves the houses of God in possession.

13 O my God, make them like unto a wheele: and as the stubble before the wind.

14 Like as the fire that burneth up the wood: and as the flame that consumeth the mountaines.

15 Persecute them even so with thy tempest: and make them afraid with thy storme.

16 Make their faces ashamed, O Lord: that they may seeke thy Name.

17 Let them be confounded and vexed ever more and more: let them be put to shame and perish.

18 And they shall know that thou, whose Name is Jehovah: art onely the most Highest over all the earth.

*Quam dilecta.* Psal. lxxxiv.

OHow amiable are thy dwellings: thou Lord of hosts?

2 My soule hath a desire and longing to enter into the courts of the Lord: my heart and my flesh rejoyce in the living God.

3 Yea, the Sparrow hath found her an house, and the Swallow a nest where she may lay her young: even thy Altars, O Lord of hosts, my King and my God.

4 Blessed are they that dwell in thy house

house : they will bee alway praising thee.

5 Blessed is the man whose strength is in thee : in whose heart are thy wayes.

6 Which going through the vale of misery, use it for a well : and the pooles are filled with water.

7 They will goe from strength to strength : and unto the God of gods appeareth every one of them in Sion.

8 O Lord God of hosts, heare my prayer : hearken, O God of Jacob.

9 Behold, O God, our defender : and looke upon the face of thine anointed.

10 For one day in thy Courts : is better than a thousand.

11 I had rather be a doore-keeper in the house of my God : than to dwell in the tents of ungodlinesse.

12 For the Lord God is a light and defence : the Lord will give grace and worship, and no good thing shall hee withhold from them that live a godly life.

13 O Lord God of hosts : blessed is the man that putteth his trust in thee.

*Benedixisti Domine.* Psal. Lxxxv.

LOrd, thou art become gracious unto thy Land : thou hast turned away the captivity of Jacob.

2 Thou hast forgiven the offence of thy people and covered all their sinnes.

3 Thou hast taken away all thy displeasure : and turned thy selfe from thy wrathfull indignation.

4 Turne us then, O God our Saviour : and let thine anger cease from us.

5 Wilt thou bee displeased at us for ever : and wilt thou stretch out thy wrath from one generation to another ?

6 Wilt thou not turne againe and quicken us : that thy people may rejoyce in thee ?

7 Shew us thy mercy, O Lord : and grant us thy salvation.

8 I will hearken what the Lord God will say concerning me : for he shall speake peace unto his people, and to his Saints, that they turne not againe.

9 For his salvation is nigh them that feare him : that glory may dwell in our land.

10 Mercy and truth are met together : righteousnesse and peace have kissed each other.

11 Truth shall flourish out of the earth, & righteousnesse hath looked down from heaven.

12 Yea, the Lord shall shew loving kindnesse, and our land shall give her increase.

13 Righteousnesse shall go before him : and shee shall direct his going in the way.

*Inclina Domine.* Psal. Lxxxvj. — *Morning Prayer.*

BOw downe thine eare, O Lord, and heare mee : for I am poore, and in misery.

2 Preserve thou my soule, for I am holy : my God, save thy servant that putteth his trust in thee.

3 Be mercifull unto me, O Lord : for I will call dayly upon thee.

4 Comfort the soule of thy servant : for unto thee (O Lord) doe I lift up my soule.

5 For thou Lord, art good and gracious : and of great mercy to all them that call upon thee.

6 Give eare, Lord, unto my prayer : and ponder the voyce of my humble desires.

7 In the time of my trouble I will call upon thee : for thou hearest me.

8 Among the gods there is none like unto thee, (O Lord :) there is not one that can do as thou doest.

9 All nations whom thou hast made, shall come and worship thee, O Lord : and shall glorifie thy Name.

10 For thou art great, and doest wondrous things : thou art God alone.

11 Teach me thy way, O Lord, and I will walke in thy truth : O knit my heart unto thee, that I may feare thy Name.

12 I will thanke thee, O Lord my God, with all my heart : and will praise thy Name for evermore.

13 For great is thy mercy toward me : and thou hast delivered my soule from the nethermost hell.

14 O God, the proud are risen against me : and the congregations of naughty men have sought after my soule, and have not set thee before their eyes.

15 But thou (O Lord God) art full of compassion and mercy : long suffering, plenteous in goodnesse and truth.

16 O turne thee then unto mee, and have mercy upon me : give thy strength unto thy servant, and helpe the sonne of thy hand-maid.

17 Shew some good token upon mee for good, that they that hate me may see it, and bee ashamed : because thou Lord, hast holpen mee, and comforted me.

*Fundamenta ejus.* Psal. Lxxxvij.

HEr foundations are upon the holy hils, the Lord loveth the gates of Sion

more then all the dwellings of Iacob.

2 Very excellent things are ſpoken of thee: thou Citie of God.

3 I will thinke upon Rahab and Babylon: with them that know mee.

4 Behold ye the Philiſtins alſo: & they of Tyre, with the Morians, loe there: was he borne.

5 And of Syon it ſhall be reported, that hee was borne in her: and the moſt high ſhall eſtabliſh her.

6 The Lord ſhall rehearſe it when he writeth up the people: that he was borne there.

7 The ſingers alſo and trumpeters ſhall bee rehearſed: all my freſh ſprings ſhall bee in thee.

*Domine Deus ſalutis.* Pſal. Lxxxviii.

O Lord God of my ſalvation, I have cryed day and night before thee: O let my prayer enter into thy preſence, incline thine eare unto my calling.

2 For my ſoule is full of trouble: and my life draweth nigh unto hell.

3 I am counted as one of them that go downe into the pit: and I have beene even as a man that hath no ſtrength.

4 Free among the dead, like unto them that bee wounded and lie in the grave: which bee out of remembrance, and are cut away from thy hand.

5 Thou haſt laied me in the loweſt pit: in a place of darkneſſe and in the deepe.

6 Thine indignation lieth hard upon mee: and thou haſt vexed me with all thy ſtormes.

7 Thou haſt put away mine acquaintance farre from me: and made me to bee abhorred of them.

8 I am ſo faſt in priſon: that I cannot get forth.

9 My ſight faileth for very trouble: Lord I have called daily upon thee, I have ſtretched out my hands unto thee.

10 Doeſt thou ſhew wonders among the dead: or ſhall the dead riſe up againe and praiſe thee?

11 Shall thy loving kindneſſe be ſhewed in the grave: or thy faithfulneſſe in deſtruction?

12 Shall thy wonderous workes be knowne in the darke: and thy righteouſnes in the land where all things are forgotten?

13 Vnto thee have I cryed, O Lord: and early ſhall my prayer come before thee.

14 Lord, why abhorreſt thou my ſoule: and hideſt thou thy face from me?

15 I am in miſery: and like unto him that is at the point to die: (even from my youth up) thy terrors have I ſuffered with a troubled mind.

16 Thy wrathful diſpleaſure goeth over me: and the feare of thee hath undone mee.

17 They came round about me daily like water: and compaſſed me together on every ſide.

18 My lovers & friends haſt thou put away from me: and hid mine acquaintance out of my ſight.

*Miſericordias Dom.* Pſal. Lxxxix. Covering Prayer.

MY ſong ſhall be alway of the loving kindneſſe of the Lord: with my mouth will I ever bee ſhewing thy truth, from one generation to another.

2 For I have ſaid, mercy ſhall be ſet up for ever: thy truth ſhalt thou eſtabliſh in the heavens.

3 I have made a covenant with my choſen: I have ſworne unto David my ſervant.

4 Thy ſeed will I ſtabliſh for ever: and ſet up thy throne from one generation to another.

5 O Lord, the very heavens ſhall praiſe thy wonderous workes: and thy truth in the congregation of the Saints.

6 For who is he among the clouds: that ſhall bee compared unto the Lord?

7 And what is he among the gods; that ſhall bee like unto the Lord?

8 God is very greatly to be feared in the counſell of the Saints, and to be had in reverence, of all them that are about him.

9 O Lord God of hoſts, who is like unto thee; thy truth (moſt mighty Lord) is on every ſide.

10 Thou rulleſt the raging of the ſea; thou ſtilleſt the waves thereof, when they ariſe.

11 Thou haſt ſubdued Egypt, and deſtroyed it; thou haſt ſcattered thine enemies abroad, with thy mighty arme.

12 The heavens are thine, the earth alſo is thine, thou haſt laid the foundation of the round world and all that therein is.

13 Thou haſt made the North and the South, Tabor and Hermon ſhal rejoice in thy name.

14 Thou haſt a mighty arme; ſtrong is thy hand and high is thy right hand.

15 Righteouſneſſe and equity is the habitation of thy ſeat; mercy and truth ſhall go before thy face.

16 Bleſſed is the people, O Lord, that can rejoyce in thee; they ſhall walke in the light of thy countenance.

17 Their delight ſhall be daily in thy name

name; and in thy righteousnesse shal they make their boast.

18 For thou art the glory of their strength; & in thy loving kindnesse thou shalt lift up our horne.

19 For the Lord is our defence, the holy one of Israel is our King.

20 Thou spakest sometimes in visions unto thy Saints, and saidst; I have laid help upon one that is mighty, I have exalted one chosen out of the people.

21 I have found David my servant; with my holy oile have I annointed him.

22 My hand shall hold him fast; and my arme shall strengthen him.

23 The enemie shall not be able to do him violence, the son of wickednesse shall not hurt him.

24 I shall smite downe his foes before his face, and plague them that hate him.

25 My truth also and my mercie shall be with him; and in my name shall his horne be exalted.

26 I will set his dominion also in the sea; and his right hand in the floods.

27 He shall call me, thou art my Father, my God, and my strong salvation.

28 And I will make him my first borne; higher than the kings of the earth.

29 My mercie will I keep for him for evermore; and my covenant shall stand fast with him.

30 His seed also will I make to endure for ever, and his throne as the dayes of heaven.

31 But if his children forsake my law; and walke not in my judgements.

32 If they breake my statutes, and keepe not my commandements: I will visit their offences with the rod, and their sin with scourges.

33 Neverthelesse, my loving kindnesse will I not utterly take from him: nor suffer my truth to faile.

34 My covenant will I not breake: nor alter the thing that is gone out of my lips: I have sworne once by my holinesse, that I will not faile David.

35 His seed shall endure for ever: and his state is like as the Sunne before me.

36 He shall stand fast for evermore as the Moone: and as the faithfull witnesse in heaven.

37 But thou hast abhorred and forsaken thine annointed: and art displeased at him.

38 Thou hast broken the covenant of thy servant: and cast his crowne to the ground.

39 Thou hast overthrowne all his hedges: and broken downe his strong holds.

40 All they that goe by spoile him: and hee is become a rebuke to his neighbours.

41 Thou hast set up the right hand of his enemies: and made all his adversaries to rejoyce.

42 Thou hast taken away the edge of his sword: and givest him not victory in the battell.

43 Thou hast put out his glorie: and cast his throne downe to the ground.

44 The dayes of his youth hast thou shortened: and covered him with dishonour.

45 Lord, how long wilt thou hide thy selfe for ever: and shall thy wrath burne like fire?

46 Oh remember how short my time is: wherefore hast thou made all men for nought?

47 What man is he that liveth, and shal not see death: and shall hee deliver his soule from the hand of hell?

48 Lord, where are thy old loving kindnesses: which thou swarest unto David in thy truth?

49 Remember (Lord) the rebuke that thy servants have: and how I do beare in my bosome the rebukes of many people,

50 Wherewith thine enemies have blasphemed thee, and slandered the foote-steps of thine annoint: dispraised be the Lord for evermore. Amen. Amen.

*Domine refugium.* Psal. xc. } *Morning Prayer.*

LOrd thou hast been our refuge; from one generation to another.

2 Before the mountaines were brought forth, or ever the earth & the world were made: thou art God, from everlasting, and world without end.

3 Thou turnest man to destruction: again thou sayest, Come again ye children of men.

4 For a thousand years in thy sight are but as yesterday: seeing that is past as a watch in the night.

5 As soone as thou scatterest them, they are even as a sleep: and fade away suddenly like the grasse.

6 In the morning it is green & groweth up: but in the evening it is cut down, dryed up, and withered.

7 For we consume away in thy displea-

sure

love: and are afraid at thy wrathfull indignation.

8 Thou hast set our misdeeds before thee: and our secret sins in the sight of thy countenance.

9 For when thou art angry, all our dayes are gone: wee bring our yeares to an end, as it were a tale that is told.

10 The daies of our age are threescore years and ten, and though men be so strong that they come to fourescore yeres: yet is their strength then but labour and sorrow, so soone passeth it away, and wee are gone.

11 But who regardeth the power of thy wrath: for even thereafter as a man feareth, so is thy displeasure.

12 O teach us to number our dayes: that wee may apply our hearts unto wisdome.

13 Turne thee againe, O Lord, at the last: and be gracious unto thy servants.

14 O satisfie us with thy mercy, and that soon: so shal we rejoyce and be glad all the dayes of our life.

15 Comfort us againe, now after the time that thou hast plagued us: and for the yeares wherein we have suffered adversity.

16 Shew thy servants thy worke: and their children thy glory.

17 And the glorious Maiestie of the Lord our God bee upon us, prosper thou the worke of our hands upon us, O prosper thou our handy worke.

*Qui habitat.* Psal. xci.

WHo so dwelleth under the defence of the most high, shall abide under the shadow of the Almighty.

2 I will say unto the Lord: Thou art my hope and my strong hold, my God, in him will I trust.

3 For hee shall deliver thee from the snare of the hunter: and from the noysome pestilence.

4 He shall defend thee under his wings, and thou shalt be safe under his feathers: his faithfulnesse and truth shall bee thy shield and bucklar.

5 Thou shalt not be afraid for any terrour by night: nor for the arrow that flieth by day.

6 For the pestilence that walketh in darknesse: nor for the sickenesse that destroyeth in the noone day.

7 A thousand shall fall beside thee, and ten thousand at thy right hand: but it shall not come nighthee.

8 Yea, with thine eyes shalt thou behold: and see the reward of the ungodly.

9 For thou Lord art mine hope: thou hast set thine house of defence very high.

10 There shall no evill happen unto thee: neither shall any plague come nigh thy dwelling.

11 For he shall give his Angels charge over thee: to keepe thee in all thy wayes.

12 They shal beare thee in their hands: that thou hurt not thy foot against a stone.

13 Thou shalt goe upon the Lyon and Adder: the young Lyon and the Dragon shalt thou tread under thy feet.

14 Because hee hath set his love upon me, therefore shall I deliver him: I shall set him up, because hee hath knowne my name.

15 He shall call upon me, and I will heare him: yea, I am with him in trouble, I will deliver him & bring him to honour.

16 With long life will I satisfie him: and shew him my salvation.

*Bonum est confiteri.* Psal. xcij.

IT is a good thing to give thankes unto the Lord, and to sing praises unto thy name, O most highest.

2 To tell of thy loving kindnesse early in the morning: and of thy truth in the night season.

3 Upon an instrument of ten strings, and upon the Lute, upon a loud instrument, and upon the harpe.

4 For thou Lord hast made mee glad through thy workes: and I will rejoyce in giving praise for the operations of thy hands.

5 O Lord, how glorious are thy workes and thy thoughts are very deepe!

6 An unwise man doth not well consider this: and a foole doth not understand it.

7 When the ungodly are greene as the grasse, and when all the workers of wickednesse doe flourish, then shall they bee destroyed for ever: but thou Lord art the most highest for evermore.

8 For loe, thine enemies, O Lord, loe thine enemies shall perish: and all the workers of wickednesse shall be destroyed.

9 But my horne shall be exalted like the horne of an Vnicorne: for I am anointed with fresh oyle.

10 Mine eye also shall see his lust of mine enemies: and mine eare shall heare his desire of the wicked that rise up against me.

11 The righteous shall flourish like a Palme-tree: and shall spread abroad, like a Cedar in Libanus.

12 Such as be planted in the house of the Lord: shall flourish in the courts of the house of our God,

13 They

15 They also shall bring forth more fruit in their age: and shall bee fat and well liking.

14 That they may shew how true the Lord my strength is: and that there is no unrighteousnesse in him.

*Dominus regnavit* } { *Evening*
Psal. xciij. } { *Prayer.*

THe Lord is King, and hath put on glorious apparell. the Lord hath put on his apparell, and girded himselfe with strength.

2 He hath made the round world so fast, that it cannot be moved.

3 Ever since the world began, hath thy seat beene prepared: thou art from everlasting.

4 The floods are risen, O Lord, the floods have lift up their voyce: the floods lift up their waves.

5 The waves of the sea are mighty, and rage horribly: but yet the Lord that dwelleth on high is mightier.

6 Thy testimonies, O Lord, are very sure: holinesse becommeth thine house for ever.

*Deus ultionum.* Psal. xciij.

O Lord God, to whom vengeance belongeth, thou God, to whom vengeance belongeth, shew thy selfe.

2 Arise thou Judge of the world: and reward the proud after their deserving.

3 Lord, how long shall the ungodly: how long shall the ungodly triumph?

4 How long shall all wicked doers speak so disdainfully: and make such proud boasting?

5 They smite downe thy people, O Lord: and trouble thine heritage.

6 They murder the widow and the stranger: and put the fatherlesse to death.

7 And yet they say, Tush, the Lord shal not see: neither shall the God of Iacob regard it.

8 Take heed, ye unwise among the people: O yee fooles, when will yee understand?

9 He that planted the eare, shall he not heare: or he that made the eye, shall hee not see?

10 Or he that nurtureth the heathen: it is he that teacheth man knowledge, shall not he punish?

11 The Lord knoweth the thoughts of man: that they are but vaine.

12 Blessed is the man whom thou chasteneſt, O Lord: and teachest him in thy law.

13 That thou maist give him patience in time of adversity: until the pit be digged up for the ungodly.

14 For the Lord will not faile his people: neither will hee forsake his inheritance.

15 Untill righteousnesse turne againe unto judgement: all such as bee true in heart shall follow it.

16 Who will rise up with mee against the wicked: or who will take my part against the evill doers?

17 If the Lord had not holped mee: it had not failed, but my soule had been put to silence.

18 But when I sayd, my foot hath slipped: thy mercy, O Lord, held me up.

19 In the multitude of the sorrowes that I had in my heart: thy comforts have refreshed my soule.

20 Wilt thou have any thing to doe with the stoole of wickednes: which imagineth mischiefe as a Law?

21 They gather them together against the soule of the righteous: and condemne the innocent bloud.

22 But the Lord is my refuge: and my God is the strength of my confidence.

23 He shall recompence them their wickednesse, and destroy them in their owne malice: yea, the Lord our God shall destroy them.

*Venite exultemus.* } { *Morning*
Psal. xcv. } { *prayer.*

OCome, let us sing unto the Lord: let us heartily rejoyce in the strength of our salvation.

2 Let us come before his presence with thanksgiving: and shew our selves glad in him with Psalmes.

3 For the Lord is a great God: and a great King above all gods.

4 In his hand are all the corners of the earth: and the strength of the hils is his also.

5 The sea is his, and he made it: and his hands prepared the dry land.

6 O come let us worship, and fall down, and kneele before the Lord our maker.

7 For he is the Lord our God: and we are the people of his pasture, and the sheep of his hande.

8 To day, if yee will heare his voyce, harden not your hearts: as in the provocation, and as in the day of temptation in the wildernesse,

9 When

9 When your fathers tempted mee: proved mee, and saw my works.

10 Forty yeares long was I grieved with this generation, and said, it is a people that doe erre in their hearts, for they have not known my wayes.

11 Vnto whom I sware in my wrath, that they should not enter into my rest.

*Cantate Domino Canticum.* Psal. xcvi.

O Sing unto the Lord a new song: sing unto the Lord, all the whole earth.

2 Sing unto the Lord, and praise his name: be telling of his salvation from day to day.

3 Declare his honour unto the heathen: and his wonders unto all people.

4 For the Lord is great, and cannot worthily be praised: he is more to bee feared than all gods.

5 As for all the gods of the heathen, they be but idols: but it is the Lord that made the heavens.

6 Glory and worship are before him: power and honour are in his Sanctuary.

7 Ascribe unto the Lord, O ye kindreds of the people: ascribe unto the Lord worship and power.

8 Ascribe unto the Lord the honour due unto his Name: bring presents, and come into his courts.

9 O worship the Lord in the beauty of holinesse: let the whole earth stand in awe of him.

10 Tell it out among the heathen, that the Lord is King: and that it is he that hath made the round world so fast, that it cannot be moved: and how that hee shall judge the people righteously.

11 Let the heavens rejoyce, and let the earth bee glad: let the Sea make a noise, and all that therein is.

12 Let the field bee joyfull, and all that is in it: then shall all the trees of the wood rejoyce before the Lord.

13 For he commeth, for he commeth to judge the earth, and with righteousnesse to judge the world, and the people with his truth.

*Dominus regnavit.* Psal. xcvij.

THe Lord is King, he earth may be glad thereof: yea, the multitude of the Iles may be glad thereof.

2 Clouds and darknesse are round about him: righteousnesse and judgement are the habitation of his seat.

3 There shall goe a fire before him: and burne up his enemies on every side.

4 His lightenings gave shine unto the world, the earth saw it, and was afraid.

5 The hils melted like wax, at the presence of the Lord, at the presence of the Lord of the whole earth.

6 The heavens have declared his righteousnesse: and all the people have seene his glory.

7 Confounded bee all they that worship carved Images, and that delight in vaine Gods: worship him, all ye gods.

8 Sion heard of it and rejoyced: and the daughters of Iuda were glad, because of thy judgments, O Lord.

9 For thou Lord, art higher than all that are in the earth, thou art exalted far above other gods.

10 O yee that love the Lord, see that ye hate the thing which is evil, the Lord preserveth the soules of his Saints: he shall deliver them from the hand of the ungodly.

11 There is sprung up a light for the righteous: and joyfull gladnesse for such as be true hearted.

12 Rejoyce in the Lord ye righteous: and give thanks for a remembrance of his holinesse.

*Cantate Domino.* Psal. xcviij. } *Evening Prayer.*

O Sing unto the Lord a new song: for hee hath done marvellous things.

2 With his owne right hand, and with his holy arme: hath hee gotten himselfe the victory.

3 The Lord declared his salvation: his righteousnesse hath he openly shewed in the sight of the heathen.

4 Hee hath remembred his mercy and truth towards the house of Israel: and all the ends of the world have seene the salvation of our God.

5 Shew your selves joyfull unto the Lord, all ye lands: sing, rejoyce, and give thanks.

6 Praise the Lord upon the Harpe: sing to the harpe with a Psalme of thanksgiving.

7 With Trumpets also, and Shaumes: O shew your selves joyfull before the Lord the King.

8 Let the sea make a noise, and all that therein is: the round world, and they that dwell therein.

9 Let the floods clap their hands, and let the hils bee joyfull together before the Lord: for he is come to judge the earth.

10 With righteousnesse shall he judge the world: and the people with equity.

*Dominus*

*Dominus regnavit.* Psal. xcix.

THe Lord is King, bee the people never so unpatient: hee sitteth betweene the Cherubins, be the earth never so unquiet.

2 The Lord is great in Sion: and high above all people.

3 They shall give thankes unto thy Name: which is great, wonderfull, and holy.

4 The Kings power loveth judgement, thou hast prepared equity: thou hast executed judgement and righteousnesse in Jacob.

5 O magnifie the Lord our God: and fall downe before his foot-stoole, for he is holy.

6 Moses and Aaron among his Priests, and Samuel among such as call upon his Name: these called upon the Lord, and he heard them.

7 He spake unto them out of the cloudy pillar: for they kept his testimonies, and the law that hee gave them.

8 Thou heardest them, (O Lord our God:) thou forgavest them, O God, and punishedst their owne inventions.

9 O magnifie the Lord our God, and worship him upon his holy hill: for the Lord our God is holy.

*Jubilate Deo.* Psal. C.

O Be joyfull in the Lord all ye lands: serve the Lord with gladnesse, and come before his presence with a song.

2 Be ye sure that the Lord he is God, it is he that hath made us, and not we our selves: we are his people, and the sheep of his pasture.

3 O go your way into his gates with thanksgiving, and into his courts with praise: be thankfull unto him, and speake good of his Name.

4 For the Lord is gracious, his mercie is everlasting: and his truth endureth from generation to generation.

*Misericordiam & judicium.* Psal. Ci

MY song shall bee of mercy and judgement: unto thee, O Lord, will I sing.

2 O let me have understanding in the way of godlinesse.

3 When wilt thou come unto me? I will walke in my house with a perfect heart.

4 I will take no wicked thing in hand: I hate the sinnes of unfaithfulnes, there shall no such cleave unto me.

5 A froward heart shall depart from me: I will not know a wicked person.

6 Who so privily slandereth his neighbour him will I destroy.

7 Who so also hath a proud look, and high stomacke: I will not suffer him.

8 Mine eyes looke unto such as bee faithfull in the land, that they may dwel with me.

9 Who so leadeth a godly life: hee shall be my servant.

10 There shall no deceitfull person dwell in my house: hee that telleth lies shall not tarry in my sight.

11 I shall soon destroy all the ungodly that are in the land: that I may root out all wicked doers from the City of the Lord.

*Domine exaudi.* Psal. cii. } *Morning Prayer.*

HEare my prayer, O Lord, and let my crying come unto thee.

2 Hide not thy face from mee in the time of my trouble: incline thine eares unto me when I call, O heare me, and that right soone.

3 For my dayes are consumed away, like smoke: and my bones are burnt up as it were a fire-brand.

4 My heart is smitten downe and withered like grasse: so that I forget to eat my bread.

5 For the voice of my groaning: my bones will scarce cleave to my flesh.

6 I am becom like a Pelican in the wildernesse: and like an Owle that is in the Desert.

7 I have watched, and am even as it were a Sparrow that sitteth alone upon the house top.

8 Mine enemies revile me all the day long, and they that are mad upon me, are sworne together against me.

9 For I have eaten ashes as it were bread: and mingled my drink with weeping.

10 And that because of thine indignation and wrath: for thou hast taken me up, and cast me downe.

11 My dayes are gone like a shadow: and I am withered like grasse.

12 But thou O Lord shalt endure for ever: and thy remembrance throughout all generations.

13 Thou shalt arise, and have mercy upon Sion: for it is time that thou have mercy upon her, yea the time is come.

14 And why, thy servants thinke upon her stones: and it pitieth them to see her in the dust.

15 The heathen shall fear thy name, O Lord

Lord: and all the kings of the earth thy Majesty.

16 When the Lord shall build up Sion: and when his glory shall appeare.

17 When he turneth him unto the prayer of the poore destitute: and despiseth not their desire.

18 This shall be written for those that come after: and the people which shall be borne shall praise the Lord.

19 For he hath looked downe from his Sanctuary: out of the heaven did the Lord behold the earth.

20 That he might heare the mournings of such as be in captivity: and deliver the children appointed unto death.

21 That they may declare the name of the Lord in Sion: and his worship at Jerusalem.

22 When the people are gathered together: and the kingdomes also to serve the Lord.

23 He brought downe my strength in my journey, and shortned my dayes.

24 But I said, O my God, take me not away in the midst of mine age: as for thy yeares, they endure throughout all generations.

25 Thou Lord in the beginning hast laid the foundation of the earth: and the heavens are the worke of thy hands.

26 They shall perish, but thou shalt endure: they all shall wax old, as doth a garment.

27 And as a vesture shalt thou change them, and they shall be changed: but thou art the same, and thy yeares shall not faile.

28 The children of thy servants shall continue: and their seed shall stand fast in thy sight.

*Benedic anima mea.* Psal. Ciij.

PRaise the Lord, O my soule: and all that is within me, praise his holy Name.

2 Praise the Lord, O my soule: and forget not all his benefits.

3 Which forgiveth all thy sinne: and healeth all thine infirmities.

4 Which saveth thy life from destruction: and crowneth thee with mercy and loving kindnesse.

5 Which satisfieth thy mouth with good things: making thee young and lusty as an Eagle.

6 The Lord executeth righteousnesse and judgement: for all them that are oppressed with wrong.

7 He shewed his wayes unto Moses: his works unto the children of Israel.

8 The Lord is full of compassion and mercy, long suffering, and of great goodnesse.

9 He will not alway be chiding: neither keepeth he his anger for ever.

10 He hath not dealt with us after our sinnes: nor rewarded us according to our wickednesse.

11 For looke how high the heaven is in comparison of the earth: so great is his mercy also toward them that feare him.

12 Looke how wide also the East is from the West: so farre hath he set our sinnes from us.

13 Yea, like as a father pitieth his own children: even so is the Lord mercifull unto them that feare him.

14 For he knoweth whereof we be made: he remembreth that we are but dust.

15 The dayes of man are but as grasse: for he flourisheth as a flower of the field.

16 For as soone as the wind goeth over it, it is gone: and the place thereof shall know it no more.

17 But the mercifull goodnesse of the Lord endureth for ever and ever upon them that feare him: and his righteousnesse upon children's children.

18 Even upon such as keepe his covenant: and thinke upon his Commandements to doe them.

19 The Lord hath prepared his seat in heaven: and his kingdome ruleth over all.

20 O praise ye the Lord, ye Angels of his, ye that excell in strength: ye that fulfill his commandement, and hearken unto the voyce of his words.

21 O praise the Lord all ye his hosts: ye servants of his that do his pleasure.

22 O speake good of the Lord, all ye works of his, in all places of his dominion: praise thou the Lord O my soul.

*Benedic anima mea.* Psal. Civ. } *Evening Prayer.*

PRaise the Lord, O my soule: O Lord my God, thou art become exceeding glorious, thou art clothed with Majesty and honour.

2 Thou shalt thy selfe with light, as it were with a garment: and spreadest out the heavens like a curtaine.

3 Which layeth the beames of his chambers in the waters: and maketh the clouds his chariot, and walketh upon the wings of the wind.

4 He

4 He maketh his Angels spirits: and his Ministers a flaming fire.

5 He laid the foundations of the earth: that it never should move at any time.

6 Thou coveredst it with the deepe, like as with a garment: the waters stand in the hills.

7 At thy rebuke they flie: at the voice of thy thunder they are afraid.

8 They goe up as high as the hils, and downe to the valleyes beneath: even unto the place which thou hast appointed for them.

9 Thou hast set them their bounds, which they shall not passe: neither turn againe to cover the earth.

10 He sendeth the springs into the Rivers: which runne among the hils.

11 All beaste of the field drinke thereof: and the wilde Asses quench their thirst.

12 Beside them shall the fowles of the aire have their habitation: and sing among the branches.

13 He watereth the hils from above: the earth is filled with the fruit of thy works.

14 He bringeth forth grasse for the cattell: and greene herbe for the service of men.

15 That he may bring food out of the earth, & wine that maketh glad the heart of man: and oyle to make him a cheerfull countenance, and bread to strengthen mans heart.

16 The trees of the Lord also are full of sap: even the Cedars of Libanus which he hath planted.

17 Wherein the birds make their nests: and the Firre trees are a dwelling for the Storke.

18 The high hils are a refuge for the wild Goates: and so are the stonie rocks for the Conies.

19 He appointed the Moone for certain seasons: and the Sunne knoweth his going downe.

20 Thou makest darkenesse, that it may be night: wherein all the beasts of the forrest doe move.

21 The lions roaring after their pray: doe seeke their meat at God.

22 The Sun ariseth, and they get them away together: and lay them downe in their dennes.

23 Man goeth forth to his worke, and to his labour: untill the evening.

24 O Lord, how manifold are thy workes: in wisdome hast thou made them all, the earth is full of thy riches.

25 So is the great and wide Sea also: wherein are things creeping innumerable, both small and great beasts.

26 There goe the ships, and there is that Leviathan: whom thou hast made to take his pastime therein.

27 These wait all upon thee: that thou mayest give them meat in due season.

28 When thou givest it them, they gather it: and when thou openest thy hand, they are filled with good.

29 When thou hidest thy face, they are troubled: when thou takest away their breath, they die, and are turned againe to their dust.

30 When thou letteest thy breath goe forth, they shall be made: and thou shalt renew the face of the earth.

31 The glorious Majesty of the Lord shall endure for ever: the Lord shall rejoyce in his works.

32 The earth shall tremble at the looke of him: if he doe but touch the hils, they shall smoke.

33 I will sing unto the Lord as long as I live: I will praise my God while I have my being.

34 And so shall my words please him: my joy shall be in the Lord.

35 As for sinners they shall be consumed out of the earth, and the ungodly shall come to an end: praise thou the Lord, O my soule, praise the Lord.

*Confitemini Domino.* } *Morning*
*Psal. cv.* } *Prayer.*

OGive thanks unto the Lord, and call upon his Name: tell the people what things he hath done.

2 O let your songs bee of him, and praise him: and let your talking be of all his wonderous works.

3 Rejoyce in his holy Name: let the heart of them rejoyce that seek the Lord.

4 Seek the Lord and his strength: seek his face evermore.

5 Remember the marvellous works that he hath done: his wonders, and the judgements of his mouth.

6 O ye seed of Abraham his servant: ye children of Jacob his chosen.

7 He is the Lord our God: his judgements are in all the world.

8 He hath been alway mindfull of his covenant and promise: that hee made to a thousand generations.

9 Even the covenant that hee made with Abraham: and the oath that hee sware to Isaac.

10 And appointed the same unto Jacob for

for a law: and to Israel for an everlasting testament.

11 Saying, unto thee will I give the land of Canaan: the lot of your inheritance.

12 When there was yet but a few of them: and they strangers in the land.

13 What time as they went from one Nation to another: from one Kingdome to another people.

14 Hee suffered no man to doe them wrong: but reproved even Kings for their sakes.

15 Touch not mine anoynted: and doe my Prophets no harme.

16 Moreover he called a dearth upon the land: and destroyed all the provision of bread.

17 But he had sent a man before them: even Joseph which was sold to be a bond-servant.

18 Whose feet they hurt in the stocks: the iron entred into his soule.

19 Vntill the time came that his cause was knowne: the Word of the Lord tried him.

20 The King sent and delivered him: the Prince of the people let him goe free.

21 He made him Lord also of his house: and ruler of all his substance.

22 That he might informe his Princes after his will: and teach his Senators wisdome.

23 Israel also came into Egypt: and Jacob was a stranger in the land of Ham.

24 And hee encreased his people exceedingly: and made them stronger than their enemies.

25 Whose heart turned, so that they hated his people: and dealt untruly with his servants.

26 Then sent he Moses his servant: and Aaron whom he had chosen.

27 And these shewed his tokens among them: and wonders in the land of Ham.

28 He sent darknesse, and it was darke, and they were not obedient unto his word.

29 Hee turned their waters into bloud: and slew their fish.

30 Their land brought forth frogs: yea, even in their Kings chambers.

31 He spake the word and there came all manner of flies, and lice in all their quarters.

32 Hee gave them haile-stones for raine: and flames of fire in their land.

33 He smote their Vines also & figge-trees: and destroyed the trees that were in their coasts.

34 He spake the word, and the grasshoppers came, and caterpillers innumerable: and did eat up all the grasse in their land, and devoured the fruit of the ground.

35 He smote all the first-borne in the land: even the chiefe of all their strength.

36 He brought them forth also with silver and gold: there was not one feeble person among their tribes.

37 Egypt was glad at their departing: for they were afraid of them.

38 He spread out a cloud to be a covering: and fire to give light in the night season.

39 At their desire he brought quailes: and hee filled them with the bread of heaven.

40 He opened the rocke of stone, and the waters flowed out: so that the Rivers ran in dry places.

41 For why, he remembred his holy promise: and Abraham his servant.

42 And hee brought forth his people with joy: and his chosen with gladnesse.

43 And gave them the lands of the heathen: and they tooke the labours of the people in possession.

44 That they might keepe his statutes: and observe his lawes.

Glory be to the Father, &c.

*Confitemini Domino. Psal. cvj.* } { *Evening prayer.*

O Give thanks unto the Lord, for he is gracious: and his mercy endureth for ever.

2 Who can expresse the noble acts of the Lord: or shew forth all his praise.

3 Blessed are they that alway keepe judgement: and doe righteousnesse.

4 Remember me, O Lord, according to the favour that thou bearest unto thy people: O visit me with thy salvation.

5 That I may see the felicity of thy chosen: and rejoyce in the gladnesse of thy people, and give thanks with thine inheritance.

6 Wee have sinned with our fathers: we have done amisse, and dealt wickedly.

7 Our fathers regarded not thy wonders in Egypt, neither kept they thy great goodnesse in remembrance: but were disobedient at the Sea, even at the red Sea.

8 Nevertheless hee helped them for his Names sake: that he might make his power to be knowne.

9 He rebuked the red Sea also, and it was dried up: so he led them through the deepe, as through a wildernesse.

10 And he saved them from the adversary

saries hand: and delivered them from the hand of the enemie.

11 As for those that troubled them, the waters overwhelmed them: there was not one of them left.

12 Then beleeved they his words: and sang praise unto him.

13 But within a while they forgot his works; and would not abide his counsell.

14 But lust came upon them in the wildernesse: and they tempted God in the desart.

15 And he gave them their desire, and sent leannesse withall into their soule.

16 They angred Moses also in the tents and Aaron, the Saint of the Lord.

17 So the earth opened, and swallowed up Dathan: and covered the congregation of Abiram.

18 And the fire was kindled in their company: the flame burnt up the ungodly.

19 They made a calfe in Horeb: and worshipped the molten image.

20 Thus they turned their glory into the similitude of a calfe that eateth hay.

21 And they forgot God their Saviour: which had done so great things in Egypt.

22 Wondrous works in the land of Ham: and fearefull things by the red Sea.

23 So he said, he would have destroyed them, but not Moses his servant stood before him in the gap: to turn away his wrathfull indignation, lest hee should destroy them.

24 Yea, they thought scorne of that pleasantland: and gave no credence unto his word.

25 But murmured in their tents: and hearkned not unto the voice of the Lord.

26 Then lift he up his hand against them: to overthrow them in the wildernesse.

27 To cast out their seed among the nations: and to scatter them in the lands.

28 They joyned themselves unto Baal-Peor: and ate the offerings of the dead.

29 Thus they provoked him to anger with their owne inventions: and the plague was great among them.

30 Then stood up Phinees, and prayed: and so the plague ceased.

31 And that was counted unto him for righteousnesse: among all posterities for evermore.

32 They angred him also at the waters of strife: so that he punished Moses for their sakes.

33 Because they provoked his spirit: so that hee spake unadvisedly with his lips.

34 Neither destroyed they the heathen: as the Lord commanded them.

35 But were mingled among the heathen: and learned their workes.

36 Insomuch as they worshipped their Idols, which turned to their owne decay: yea, they offered their sonnes and daughters unto divels.

37 And shed innocent bloud, even the bloud of their sons and of their daughters: whom they offered unto the Idols of Canaan, and the land was defiled with bloud.

38 Thus were they stayned with their owne workes: and went a whoring with their owne inventions.

39 Therefore was the wrath of the Lord kindled against his people: insomuch that he abhorred his owne inheritance.

40 And he gave them over into the hand of the heathen: and they that hated them were Lords over them.

41 Their enemies oppressed them: and had them in subiection.

42 Many a time did hee deliver them, but the rebelled against him with their owne inventions: and were brought down in their wickednesse.

43 Nevertheless, when hee saw their adversitie he heard their complaint.

44 He thought upon his covenant, and pittied them, according to the multitude of his mercies, yea, he made all those that had led them away captive, to pitty them.

45 Deliver us, O Lord our God, and gather us from among the heathen: that we may give thanks unto thy holy name, and make our boast of thy praise.

46 Blessed be the Lord God of Israel: from everlasting, and world without end: and let all the people say, Amen.

*Confitemini Domino.* Psal. CVII. } { *Morning Prayer.*

O Give thanks unto the Lord, for he is gracious: and his mercy endureth for ever.

2 Let them give thanks whom the Lord hath redeemed: and delivered from the hand of the enemie.

3 And gathered them out of the lands: from the East, and from the West, from the North, and from the South.

4 They went astray in the wildernes out

of

of the way, and found no city to dwell in.

5 Hungry & thirsty: their soule fainted in them.

6 So they cryed unto the Lord in their trouble, and hee delivered them from their distresse.

7 He led them forth by the right way: that they might go to the city where they dwelt.

8 O that men would therefore praise the Lord for his goodnesse: and declare the wonders that he doth for the children of men.

9 For he satisfieth the empty soule: and filleth the hungry soule with goodnesse.

10 Such as sit in darknesse, and in the shadow of death, being fast bound in misery and iron.

11 Because they rebelled against the word of the Lord, and lightly regarded the counsell of the most High.

12 He also brought down their heart throughheavinesse: they fell downe, and there was none to helpe them up.

13 So when they cried unto the Lord in their trouble: he delivered them out of their distresse.

14 For he brought them out of darknesse, and out of the shadow of death: and brake their bonds in sunder.

15 O that men would therefore praise the Lord for his goodnesse: and declare the wonders that hee doth for the children of men.

16 For he hath broken the gates of brasse: and smitten the bars of yron in sunder.

17 Foolish men are plagued for their offence: and breaute of their wickednesse.

18 Their soule abhorred all manner of meate: and they were even hard at deaths doore.

19 So when they cryed unto the Lord in their trouble: he delivered them out of their distresse.

20 He sent his word, and healed them, and they were saved from their destruction.

21 O that men would therefore praise the Lord, for his goodnesse: and declare the wonders that hee doth for the children of men.

22 That they would offer unto him the sacrifice of thankesgiving: and tell out his works with gladnesse.

23 They that goe downe to the sea in ships: and occupy their businesse in great waters.

24 These men see the workes of the Lord: and his wonders in the deepe.

25 For at his word the stormy wind ariseth: which lifteth up the waves thereof

26 They are carried up to the heaven, and down againe to the deep: their soule melteth away because of the trouble.

27 They reele to and fro, and stagger like a drunken man: and are at their wits end.

28 So when they cryed unto the Lord in their trouble: he delivered them out of their distresse.

29 For he maketh the storme to cease, so that the waves thereof are still.

30 Then are they glad, because they be at rest: & so he bringeth them them unto the haven where they would be.

31 O that men would therefore praise the Lord for his goodnesse: and declare the wonders that he doth for the children of men.

32 That they would exalt him also in the congregation of the people: and praise him in the seat of the elders.

33 Which turneth the flouds into a wildernes: & dryeth up the waterspring:

34 A fruitfull land maketh he barren: for the wickednesse of them that dwell therein.

35 Againe, he maketh the wildernesse a standing water: and water-springs of a dry ground.

36 And there he setteth the hungry: that they may build them a City to dwell in.

37 That they may sow their land, and plant Vine-yards: to yeeld them fruits of increase.

38 He blesseth them, so that they multiply exceedingly: and suffereth not their cattell to decrease.

39 And againe, when they are minished and brought low through oppression: through any plague or trouble.

40 Though he suffer them to be evil intreated through tyrants: and let them wander out of the way in the wildernes

41 Yet helpeth he the poore out of misery: and maketh him housholds like a flocke of sheepe.

42 The righteous will consider this, and reioyce: and the mouth of all wickednesse shall be stopped.

43 Who so is wise will ponder these things, and they shall understand the loving kindnes of the Lord.

*Paratum cor meum.* } { *Evening*
Psal. Cviii. } { *Prayer.*

O God my heart is ready (my heart is ready) I will sing and give praise

with the beſt member that I have.

2 Awake then Lute and harpe, I my ſelfe will awake right early.

3 I will give thanke unto thee, O Lord, among the people; I will ſing prayſes unto thee among the nations.

4 For thy mercy is greater than the heavens; and thy truth reacheth unto the cloudes.

5 Set up thy ſelfe, O God, above the heavens; and thy glory above all the earth.

6 That thy beloved may be delivered; help thy right hand ſave them; and heare thou me.

7 God hath ſpoken in his holineſſe; I will rejoyce therefore, and divide Sichem, and mete out the valley of Succoth.

8 Galead is mine, and Manaſſes is mine; Ephraim alſo is the ſtrength of my head.

9 Juda is my law-giver, Moab is my waſh-pot; over Edom will I caſt out my ſhoe, upon the Philiſtines will I triumph.

10 Who will lead me into the ſtrong city; and who will bring me into Edom?

11 Haſt not thou forſaken us, O God; and wilt not thou God go forth with our hoſts?

12 O helpe us againſt the enemy; for vaine is the help of man.

13 Through God we ſhall doe great acts; and it is hee that ſhall tread downe our enemies.

*Deus laudem.* Pſal. Cix.

HOld not thy tongue O God of my prayſe, for the mouth of the ungodly, yea, and the mouth of the deceitfull is opened upon mee.

2 And they have ſpoken againſt mee with falſe tongues; they compaſſed me about alſo with words of hatred, and fought againſt me without a cauſe.

3 For the love that I had unto them, lo they take now my contrary part; but I give my ſelfe to prayer.

4 Thus have they rewarded me evill for good; and hatred for my good will.

5 Set thou an ungodly man to be ruler over him; and let Satan ſtand at his right hand.

6 When ſentence is given upon him, let him be condemned, and let his prayer be turned into ſinne.

7 Let his dayes bee few, and let another take his office.

8 Let his children be fatherleſſe; and his wife a widow.

9 Let his children be vagabonds, and begge their bread; let them ſeeke it alſo out of deſolate places.

10 Let the extortioner conſume all that he hath: and let the ſtranger ſpoyle his labour.

11 Let there be no man to pity him, nor to have compaſſion upon his fatherleſſe children.

12 Let his poſterity be deſtroyed: and in the next generation let his name bee cleane put out.

13 Let the wickedneſſe of his fathers be had in remembrance in the ſight of the Lord: and let not the ſin of his mother be done away.

14 Let them alway be before the Lord: that hee may root out the memoriall of them from off the earth.

15 And that becauſe his mind was not to doo good: but perſecuted the poore helpleſſe man, that he might ſlay him that was vexed at the heart.

16 His delight was in curſing, and it ſhall happen unto him: he loved not bleſſing, therefore ſhall it bee farre from him.

17 He clothed himſelfe with curſing like as with a raiment: and it ſhall come into his bowels like water, and like oyle into his bones.

18 Let it be unto him as the cloke that he hath upon him: and as the girdle that he is alway girded withall.

19 Let it thus happen from the Lord unto mine enemies: and unto thoſe that ſpeake evill againſt my ſoule.

20 But deale thou with mee (O Lord God) according unto thy Name: for ſweet is thy mercy.

21 O deliver me, for I am helpleſſe and poore: and my heart is wounded within me.

22 I goe hence like the ſhadow that departeth: and am driven away as the graſſhopper.

23 My knees are weake through faſting: my fleſh is dried up for want of fatneſſe.

24 I became alſo a reproach unto them: they that looked upon mee ſhaked their heads.

25 Helpe me (O Lord my God:) O ſave me according to thy mercy.

26 And they ſhall know how that this is thy hand: and that thou Lord haſt done it.

27 Though they curſe, yet bleſſe thou: and let them bee confounded that riſe up againſt

against me, but let thy servant rejoyce.

28 Let mine adversaries bee clothed with shame: and let them cover themselves with their owne confusion, as with a cloake.

29 As for me, I will give great thanks unto the Lord with my mouth: and praise him among the multitude.

30 For hee shall stand at the right hand of the poore, to save his soule from unrighteous Judges.

*Divit Dominus.* Pſal. Cx. } *Morning Prayer.*

THe Lord said unto my Lord: sit thou on my right hand, until I make thine enemies thy footstoole.

2 The Lord shall send the rod of thy power out of Sion: be thou ruler even in the midst among thine enemies.

3 In the day of thy power shal the people offer thee free willofferings with an holy worship: the dew of thy birth is of the wombe of the morning.

4 The Lord sware and will not repent: thou art a Priest for ever after the order of Melchisedech.

5 The Lord upon thy right hand shall wound even kings in the day of his wrath.

6 Hee shall judge among the heathen, he shall fil the places with the dead bodies: and smite in sunder the heads over divers countries.

7 He shall drinke of the brook in the way: therefore shall he lift up his head.

*Confitebor tibi.* Pſal. Cxi.

I Will give thanks unto the Lord with my whole heart: secretly among the faithfull, and in the congregation.

2 The works of the Lord are great: sought out of all them that have pleasure therein.

3 His worke is worthy to be praised, and had in honour, and his righteousnesse endureth for ever.

4 The merciful and gracious Lord hath so done his marvellous workes: that they ought to be had in remembrance.

5 He hath given meat unto them that feare him: he shall ever be mindfull of his covenant.

6 He hath shewed his people the power of his workes: that he may give them the heritage of the heathen.

7 The workes of his hands are verity and judgement: all his commandements are true.

8 They stand fast for ever, and even and are all done in truth and equity.

9 He sent redemption unto his people: he hath commanded his covenant for ever, holy and reuerent is his name.

10 The feare of the Lord is the beginning of wisdome: a good understanding have all they that do thereafter, the praise of it endureth for ever.

*Beatus vir.* Pſal. cxii.

BLessed is the man that feareth the Lord: he hath great delight in his commandements.

2 His seed shall be mighty upon earth: the generation of the faithfull shall be blessed.

3 Riches and plenteousnesse shall bee in his house: and his righteousnesse endureth for ever.

4 Unto the godly there ariseth up light in the darknesse: he is merciful, loving, and righteous.

5 A good man is merciful, and lendeth: and will guide his words with discretion.

6 For he shall never be moved: and the righteous shall be had in an everlasting remembrance.

7 He will not be afraid for any evill tidings: for his heart standeth fast, and believeth in the Lord.

8 His heart is stablished and will not shrinke: until he see his desire upon his enemies.

9 He hath dispersed abroad and given to the poore: and his righteousnesse remaineth for ever, his horne shall be exalted with honour.

10 The ungodly shall see it, and it shall grieve him: he shall gnash with his teeth, and consume away: the desire of the ungodly shall perish.

*Laudate pueri.* Pſal. Cxiii.

PRaise the Lord (ye servants): O praise the name of the Lord.

2 Blessed be the name of the Lord: from this time forth for evermore.

3 The Lords name is praised: from the rising up of the sun, unto the going down of the same.

4 The Lord is high above all heathen: and his glory above the heavens.

5 Who is like unto the Lord our God, that

hath his dwelling so high: and yet humbleth himselfe to behold the things that are in heaven and earth?

6 He taketh up the simple out of the dust: and lifteth the poore out of the dare.

7 That hee may set him with the princes: even with the princes of his people.

8 Hee maketh the barren woman to keepe house: and to be a joyfull mother of children.

*In exitu Israel.* } *Evening*
Psal. Cxiv. } *Prayer.*

WHen Israel came out of Egypt: and the house of Jacob from among the strange people.

2 Juda was his Sanctuary: and Israel his dominion.

3 The Sea saw that, and fled: Jordan was driven backe.

4 The mountaines skipped like rams: and the little hils like young sheepe.

5 What aileth thee, O thou Sea, that thou fleddest: and thou Jordan, that thou wast driven backe?

6 Ye mountaines, that ye skipped like rammes: and ye little hils like young sheepe?

7 Tremble thou earth at the presence of the Lord: at the presence of the God of Jacob.

8 Which turned the hard rocke into a standing water: and the flint stone into a springing Well.

*Non nobis Domine.* Psal. Cxv.

NOt unto us, O Lord, not unto us, but unto thy Name give the praise: for thy louing mercy, and for thy truths sake.

2 Wherefore shall the Heathen say: Where is now their God?

3 As for our God, he is in heaven: he hath done whatsoeuer pleased him.

4 Their Idols are but siluer and gold, even the worke of mens hands.

5 They haue mouthes, and speake not: eyes haue they, and see not.

6 They haue eares and heare not: noses haue they, and smell not.

7 They haue hands, and handle not, feet haue they and walke not: neither speake they through their throat.

8 They that make them are like unto them: and so are all such as put their trust in them.

9 But thou house of Israel, trust thou in the Lord: hee is their succour and defence.

10 Yee house of Aaron, put your trust in the Lord: he is their helper and defender.

11 Yee that feare the Lord, put your trust in the Lord: he is their helper and defender.

12 The Lord hath beene mindfull of us, and he shall blesse us: even hee shall blesse the house of Israel, he shall blesse the house of Aaron.

13 He shall blesse them that feare the Lord: both small and great.

14 The Lord shall increase you more and more: you and your children.

15 Yee are the blessed of the Lord: which made heaven and earth.

16 All the whole heavens are the Lords: the earth hath he given to the children of men.

17 The dead praise not thee, O Lord: neither all they that goe downe into the silence.

18 But we will praise the Lord: from this time forth for evermore, praise the Lord.

*Dilexi quoniam.* } *Morning*
Psal. Cxvj. } *prayer.*

I Am well pleased: that the Lord hath heard the voyce of my prayer

2 That he hath inclined his eare unto mee: therefore will I call upon him as long as I live.

3 The snares of death compassed mee round about: and the paines of hell gate hold upon me.

4 I shall finde trouble and heavinesse, and I shall call upon the name of the Lord: O Lord, I beseech thee, deliver my soule.

5 Gracious is the Lord, and righteous: yea, our God is mercifull.

6 The Lord preserveth the simple: I was in miserie, and he helped me.

7 Turne againe unto thy rest, O my soule: for the Lord hath rewarded thee.

8 And why? thou hast delivered my soule from death: mine eyes from teares, and my feet from falling.

9 I will walke before the Lord: in the land of the living.

10 I believed, and therefore will I speake, but I was sore troubled: I said in my haste, All men are lyars.

11 What reward shall I give unto the Lord: for all the benefits that hee hath done unto me?

12 I will receive the cup of salvation: & call upon the name of the Lord.

13 I will pay my vows now in the presence of all his people: right deare in the sight of the Lord, is the death of his Saints.

14 Behold (O Lord) how that I am thy servant: I am thy servant, and the sonne of thine handmaid, thou hast broken my bonds in sunder.

15 I will offer to thee the sacrifice of thanksgiving: and will call upon the name of the Lord.

16 I will pay my vows unto the Lord, in the sight of all his people: in the courts of the Lords house, even in the mids of thee, O Ierusalem. Praise the Lord.

*Laudate Dominum.* Psal. Cxvii.

O Praise the Lord all ye heathen: praise him all ye nations.

2 For his mercifull kindnesse is ever more and more toward us: and the truth of the Lord endureth for ever: Praise the Lord.

*Confitemini Domino.* Psal. Cxviii.

O Give thanks unto the Lord, for hee is gracious: because his mercy endureth for ever.

2 Let Israel now confesse that he is gracious: and that his mercy endureth for ever.

3 Let the house of Aaron now confesse; that his mercy endureth for ever.

4 Yea, let them now that fear the Lord confesse: that his mercy endureth for ever.

5 I called upon the Lord in trouble: and the Lord heard me at large.

6 The Lord is on my side: I will not feare what man doth unto me.

7 The Lord taketh my part with them that help me: therefore shall I see my desire upon mine enemies.

8 It is better to trust in the Lord: then to put any confidence in man.

9 It is better to trust in the Lord: than to put any confidence in princes.

10 All Nations compassed me round about: but in the name of the Lord will I destroy them.

11 They kept me in on every side, they kept me in (I say) on every side: but in the name of the Lord will I destroy them.

12 They came about me like bees, and are extinct even as the fire amongst the thorns: for in the name of the Lord will I destroy them.

13 Thou hast thrust sore at me, that I might fall: but the Lord was my help.

14 The Lord is my strength & my song: and is become my salvation.

15 The voice of ioy and health is in the dwellings of the righteous: the right hand of the Lord bringeth mighty things to passe.

16 The right hand of the Lord hath the preeminence; the right hand of the Lord bringeth mighty things to passe.

17 I will not die, but live: and declare the workes of the Lord.

18 The Lord hath chastened and corrected me: but he hath not given me over unto death.

19 Open me the gates of righteousnesse: that I may go into them, and give thanks unto the Lord.

20 This is the gate of the Lord: the righteous shall enter into it.

21 I will thank thee, for thou hast heard me: and art become my salvation.

22 The same stone which the builders refused: is become the head stone in the corner.

23 This is the Lords doing: and it is marvellous in our eyes.

24 This is the day which the Lord hath made: we will reioyce and be glad in it.

25 Helpe me now, O Lord: O Lord, send us now prosperity.

26 Blessed be he that commeth in the name of the Lord: we have wished you good lucke, ye that be of the house of the Lord.

27 God is the Lord which hath shewed us light: binde the sacrifice with cords, yea, even unto the hornes of the altar.

28 Thou art my God, and I will thanke thee: thou art my God, and I will praise thee.

29 O give thanks unto the Lord, for he is gracious: and his mercy endureth for ever.

*Beati immaculati.* Psal. Cxix — *Evening prayer.*

BLessed are those that are undefiled in the way: and walke in the Law of the Lord.

2 Blessed are they that keepe his testimonies, and seeke him with their whole heart.

3 For they which doe no wickednesse, walk in his wayes.

4 Thou hast charged: that we shall diligently keep thy commandements.

5 O that my waies were made so direct: that I might keep thy statutes.

6 So shall I not be confounded: while I have

I have respect unto all thy commandements.

7 I will thanke thee with an unfained heart: when I shal have learned the judgements of thy righteousnesse.

8 I will keepe thy testimonies: O forsake me not utterly.

*In quo corriget.*

WHerewith shall a young man cleanse his way: even by ruling himselfe after thy Word.

2 With my whole heart have I sought thee: O let mee not goe wrong out of thy Commandements.

3 Thy words have I hid within mine heart: that I should not sinne against thee.

4 Blessed art thou, O Lord: O teach mee thy statutes.

5 With my lips have I beene telling: of all the judgements of thy mouth.

6 I have had as great delight in the way of thy testimonies: as in all manner of riches.

7 I will talke of thy Commandements: and have respect unto thy wayes.

8 My delight shall be in thy statutes: and I will not forget thy word.

*Retribue servo tuo.*

ODoe well unto thy servant: that I may live and keepe thy Word.

2 Open thou mine eyes: that I may see the wondrous things of thy Law.

3 I am a stranger upon earth: O hide not thy Commandements from me.

4 My soule breaketh out: for the very fervent desire that it hath alwayes unto thy judgemen ts.

5 Thou hast rebuked the proud: and cursed are they that doe erre from thy Commandements.

6 O turne from me shame and rebuke: for I have kept thy testimoni s.

7 Princes also did sit and speake against me: but thy servant is occupied in thy statutes.

8 For thy testimonies are my delight: and my counsell is.

*Adhæsit pavimento.*

MY soule cleaueth to the dust: O quicken thou me according to thy Word.

2 I have knowledged my wayes, and thou heardest mee: O teach mee thy statutes.

3 Make mee to understand the way of thy Commandements: and so shall I talke of all thy wondrous works.

4 My soule melteth away for very heavinesse: comfort me according to thy Word.

5 Take from mee the way of lying: and cause thou me to make much of thy law.

6 I have chosen the way of truth: and thy judgements have I laid before me.

7 I have stricken unto thy testimonies: O Lord, confound me not.

8 I will runne the way of thy Commandements: when thou hast set my heart at liberty.

*Legem pone.* } *Morning Prayer.*

TEach me, O Lord the way of thy statutes: and I shall keepe it unto the end.

2 Give me understanding: and I shall keep thy law: yea, I will keepe it with my whole heart.

3 Make me to goe in the path of thy Commandements: for therein is my desire.

4 Incline my heart unto thy testimonies: and not to covetousnesse.

5 O turne away mine eyes, lest they behold vanity: and quicken thou me in thy way.

6 O stablish thy Word in thy servant: th t I may feare thee.

7 Take away the rebuke that I am afraid of: for thy judgements are good.

8 Behold, my delight is in thy Commandements: O quicken me in thy righteousnesse.

*Et veniat super me.*

LEt thy loving mercy come also unto me O Lord: even thy salvation, according to thy Word.

2 So shall I make answer unto my blasphemers: for my trust is in thy Word.

3 O take not the word of thy truth utterly out of my mouth: for my hope is in thy judgements.

4 So shall I alway keepe thy law: yea, for ever and ever.

5 And I will walke at liberty: for I seeke thy Commandements.

6 I will speake of thy testimonies also, even before Kings: and will not be ashamed.

7 And my delight shall bee in thy Commandements: which I have loved.

8 My hands also will I lift up unto thy Commandements, which I have loved: and my study shall be in thy Statutes.

*Memor esto verbi tui.*

OThinke upon thy servant, as concerning thy word: wherein thou hast caused mee to put my trust.

2 The same is my comfort in my trouble: for thy word hath quickned me.

3 The proud hath had me exceedingly

in derision: yet have I not shrunken from thy law.

4 For I remembred thine everlasting judgements, O Lord: and received comfort.

5 I am horribly afraid: for the ungodly that forsake thy Law.

6 Thy statutes have beene my songs, in the house of my pilgrimage.

7 I have thought upon thy Name, O Lord, in the night season: and have kept thy Law.

8 This I had, because I kept thy Commandements.

*Portio mea Domine.*

THou art my portion, O Lord: I have promised to keepe thy Law.

2 I made my humble petition in thy presence with my whole heart: O be mercifull unto me according to thy Word.

3 I called mine owne wayes to remembrance: and turned my feet unto thy testimonies.

4 I made haste, and prolonged not the time, to keepe thy Commandements.

5 The congregation of the ungodly have robbed me: but I have not forgotten thy law.

6 At midnight I will rise and give thanks unto thee: because of thy righteous judgements.

7 I am companion of all them that feare thee: and keepe thy Commandements.

8 The earth, O Lord, is full of thy mercy: O teach me thy statutes.

*Benignitatem fecisti.*

O Lord, thou hast dealt graciously with thy servant: according to thy Word.

2 O learne mee true understanding and knowledge: for I have beleeved thy Commandements.

3 Before I was troubled I went wrong: but now have I kept thy Word.

4 Thou art good and gracious: O teach me thy statutes.

5 The proud have imagined a lie against mee: but I will keepe thy commandements with my whole heart.

6 Their heart is as fat as brawne: but my delight hath beene in thy law.

7 It is good for me that I have beene in trouble: that I may learn thy statutes.

8 The law of thy mouth is dearer unto me than thousands of gold and silver.

*Manus tuæ fecerunt me.* Evening prayer.

THy hands have made me and fashioned mee: O give me understanding, that I may learne thy Commandements.

2 They that feare thee, will be glad when they see me: because I have put my trust in thy Word.

3 I know, O Lord, that thy judgements are right: and that thou of very faithfulnesse hast caused mee to be troubled.

4 O let thy mercifull kindnesse be my comfort according to thy Word unto thy servant.

5 O let thy loving mercies come unto me, that I may live: for thy law is my delight.

6 Let the proud be confounded, for they goe wickedly about to destroy me: but I will be occupied in thy Commandements.

7 Let such as feare thee, and have knowne thy testimonies: be turned unto mee.

8 O let my heart be sound in thy statutes: that I be not ashamed.

*Defecit anima mea.*

MY soule hath longed for thy salvation: and I have a good hope because of thy Word.

2 Mine eyes long sore for thy word: saying, O when wilt thou comfort me?

3 For I am become like a bottle in the smoke: yet doe I not forget thy statutes.

4 How many are the dayes of thy servant? when wilt thou be avenged of them that persecute me?

5 The proud have digged pits for me: which are not after thy law.

6 All thy Commandements are true: they persecute me falsly, O bee thou my helpe.

7 They had almost made an end of me upon earth: but I forsooke not thy Commandement.

8 O quicken me after thy loving kindnesse: and so shall I keepe the testimonies of thy mouth.

*In æternum Domine.*

O Lord, thy Word endureth for ever in heaven.

2 Thy truth also remaineth from one generation to another: thou hast laid the foundation of the earth, and it abideth.

3 They continue this day according to thine ordinance: for all things serve thee.

4 If my delight had not been in thy law: I should have perished in my trouble.

5 I will never forget thy Commandements: for with them thou hast quickned me.

6 I am thine, O save me: for I have sought thy Commandements.

7 The

7 The unogdly laied wait for me, to destroy me: but I will consider thy testimonies.

8 I see that all things come to an end: but thy commandment is exceeding broad

*Quomodo dilexi!*

LOrd, what love have I unto thy law: all the day long is my study in it.

2 Thou through thy commandement hast made me wiser than mine enemies: for they are ever with me.

3 I have more understanding than my teachers: for thy testimonies are my study.

4 I am wiser than the aged: because I keep thy Commandements.

5 I have refrained my feet from every evill way: that I may keepe thy Word.

6 I have not shrunke from thy judgements: for thou teachest me.

7 O how sweet are thy words unto my throat: yea, sweeter than honey unto my mouth.

8 Through thy commandement I get understanding: therefore I hate all wicked wayes.

*Lucerna pedibus meis.* Morning prayer.

THy Word is a lanterne unto my feet: and a light unto my paths.

2 I have sworn, and am stedfastly purposed; to keep thy righteous judgements.

3 I am troubled above measure: quicken me, O Lord, according to thy Word.

4 Let the free-will offerings of my mouth please thee, O Lord: and teach me thy judgements.

5 My soule is alway in my hand: yet do I not forget thy law.

6 The ungodly have laid a snare for me: but yet I swerved not from thy Commandements.

7 Thy testimonies have I claimed as my heritage for ever: and why? they are the very joy of my heart.

8 I have applied my heart to fulfill thy statutes alway: even unto the end.

*Iniquos odio habui.*

I Hate them that imagine evill things: but thy lawdoe I love.

2 Thou art my defence and shield: and my trust is in thy Word.

3 Away from me ye wicked: I will keepe the Commandements of my God.

4 O stablish mee according to thy Word, that I may live: and let mee not be disappointed of my hope.

5 Hold thou me up, and I shall be safe: yea, my delight shall be ever in thy statutes

6 Thou hast trodden downe all them that depart from thy statutes, for they imagine deceit.

7 Thou puttest away all the ungodly of the earth like drosse: therefore I love thy testimonies.

8 My flesh trembleth for feare of thee: and I am afraid of thy judgements.

*Feci iudicium.*

IDeale with the thing that is lawfull and right: O give me not over unto mine oppressors.

2 Make thou thy servant to delight in that which is good: that the proud do me no wrong.

3 Mine eies are wasted away with looking for thy health: and for the word of thy righteousnesse.

4 O deale with thy servant according unto thy loving mercy: and teach me thy statutes.

5 I am thy servant, O grant mee understanding, that I may know thy testimonies.

6 It is time for thee Lord to lay to thine hand: for they have destroyed thy law.

7 For I love thy commandements above gold and precious stones.

8 Therefore hold I straight all thy commandements: and all false wayes I utterly abhorre.

*Mirabilia.*

THy testimonies are wonderfull: therefore doth my soule keepe them.

2 When thy word goeth forth: it giveth light and understanding unto the simple.

3 I opened my mouth and drew in my breath: for my delight was in thy commandements.

4 O look thou upon me, & be mercifull unto me: as thou usest to doe unto those that love thy name.

5 Order my steps in thy word: and so shall no wickednesse have dominion over mee.

6 O deliver mee from the wrongfull dealings of men: and so shall I keepe thy commandements.

7 Shew the light of thy countenance upon thy servant: and teach mee thy statutes.

8 Mine eies gush out with water: because men keepe not thy law.

*Justus es Domine.*

RIghteous art thou, O Lord: and true is thy judgement.

2 The testimonies which thou hast commanded: are exceeding righteous and true.

3 My zeale hath even consumed mee: because mine enemies have forgotten thy words.

4 Thy word is tried to the uttermost: and thy servant loveth it.

5 I am small, and of no reputation: yet do I not forget thy commandements.

6 Thy righteousnesse is an everlasting righteousnesse: and thy law is the truth.

7 Trouble and heavinesse hath taken hold upon me: yet is my delight in thy commandements.

8 The righteousnesse of thy testimonies is everlasting: O grant me understanding, and I shall live.

*Clamavi in toto corde meo* } { *Evening prayer.*

I Call with my whole heart: heare me, O Lord, I will keepe thy statutes.

2 Yea, even upon thee do I call: help me and I shall keepe thy testimonies.

3 Early in the morning I do cry unto thee: for in thy word is my trust.

4 Mine eyes prevent the night watches: that I might be occupied in thy word.

5 Heare my voice, O Lord, according unto thy loving kindnesse: quicken mee, according as thou art wont.

6 They draw nigh, that of malice persecute mee, and are far from thy law.

7 Be thou nigh at hand, O Lord: for all thy commandements are true.

8 As concerning thy testimonies, I have knowne, long since: that thou hast grounded them for ever.

*Vide humilitatem.*

O Consider mine adversitie, and deliver me: for I doe not forget thy law.

2 Avenge thou my cause, and deliver me: quicken me according to thy word.

3 Health is far from the ungodly: for they regard not thy statutes.

4 Great is thy mercy, O Lord: quicken mee as thou art wont.

5 Many there are that trouble me, and persecute me: yet doe I not swerve from thy testimonies.

6 It grieveth me when I see the transgressors: because they keepe not thy law.

7 Consider, O Lord, how I love thy commandements: O quicken me according to thy loving kindnesse.

8 Thy word is true from everlasting: all the judgements of thy righteousnesse endure for evermore.

*Principes persecuti sunt.*

PRinces have persecuted me without a cause: but my heart standeth in awe of thy words.

2 I am as glad of thy word, as one that findeth great spoyles.

3 As for lies, I hate and abhorre them: but thy law doe I love.

4 Seven times a day do I praise thee: because of thy righteous judgements.

5 Great is the peace that they have which love thy law: and they are not offended at it.

6 I have looked for thy saving health: and done after thy commandements.

7 My soule hath kept thy testimonies: and loved them exceedingly.

8 I have kept thy commandements: and testimonies: for all my waies are before thee.

*Appropinquet deprecatio.*

LEt my complaint come before thee, O Lord: give me understanding, according unto thy word.

2 Let my supplication come before thee: deliver me, according to thy word.

3 My lips shall speake of thy praise: when thou hast taught me thy statutes.

4 Yea, my tongue shall sing of thy word: for all thy commandements are righteous.

5 Let thine hand helpe me: for I have chosen thy commandements.

6 I have longed for thy saving health, O Lord, and in thy law is my delight.

7 O let my soule live, and it shall praise thee: and thy judgements shall helpe me.

8 I have gone astray like a sheepe that is lost: O seeke thy servant, for I doe not forget thy commandements.

*Ad Dominum.* } { *Morning*
Psal. Cxx. } { *Prayer.*

WHen I was in trouble, I called upon the Lord: and he heard me.

2 Deliver my soule, O Lord, from lying lips: and from a deceitfull tongue.

3 What reward shall be given or done unto thee, thou false tongue: even mighty and sharpe arrowes, with hot burning coles.

4 Woe is me, that I am constrained to dwell with Mesech: and to have my habitation among the tents of Kedar.

5 My soul hath long dwelt among them, that be enemies unto peace.

6 I labour for peace; but when I speake unto them thereof, they make them ready to battell.

*Levavi oculos.* Psal. Cxxi.

I Will lift up mine eyes unto the hils: from whence commeth my helpe.

2 My helpe commeth even from the Lord: which hath made heaven and earth.

3 He will not suffer thy foot to be moved: and he that keepeth thee will not slepe.

4 Behold, he that keepeth Israel, shall neither slumber nor sleepe.

5 The Lord himselfe is thy keeper: the

the Lord is thy defence upon thy right hand.

6 So that the Sunne shall not hurne thee by day: neither the Moone by night.

7 The Lord shall preserve thee from all evill: yea, it is even he that shall keep thy soule.

8 The Lord shall preserve thy going out, and thy comming in: from this time forth for evermore.

*Lætatus sum.* Ps. 122

I Was glad when they said unto me: We will goe into the house of the Lord.

2 Our feet shall stand in thy gates: O Jerusalem.

3 Jerusalem is builded as a City: that is at unity within it selfe.

4 For thither the tribes goe up, even the tribes of the Lord: to testifie unto Israel, to give thanks unto the Name of the Lord.

5 For there is the seat of judgement: even the seat of the house of David.

6 O pray for the peace of Jerusalem: they shall prosper that love thee.

7 Peace be within thy walls: and plentifulnesse within thy palaces.

8 For my brethren and companions sake: I will wish thee prosperity.

9 Yea, because of the house of the Lord our God: I will seeke to do thee good.

*Ad te levavi oculos meos.* Psal. 123

UNto thee lift I up mine eyes: O thou that dwellest in the heavens

2 Behold, even as the eyes of servants looke unto the hand of their Master, and as the eyes of a maiden unto the hand of her mistresse: even so our eyes wait upon the Lord our God, untill he have mercy upon us.

3 Have mercy upon us, O Lord, have mercy upon us: for we are utterly despised.

4 Our soule is filled with the scornful reproofe of the wealthy: and with the despitefulnesse of the proud.

*Nisi quia Dominus.* Psal. 124

IF the Lord himselfe had not bin on our side (now may Israel say:) if the Lord himselfe had not bin on our side, when men rose up against us:

2 They had swallowed us up quicke: when they were so wrathfully displeased at us.

3 Yea, the water had drowned us: and the streams had gone over our soule.

4 The deepe waters of the proud, had even gone over our soule.

5 But praised be the Lord: which hath not given us over for a pray unto their teeth.

6 Our soule is escaped, even as a bird out of the snare of the fowler: the snares is broken, and we are delivered.

7 Our helpe standeth in the Name of the Lord: which hath made heaven and earth.

*{Qui confidunt.* Psal. 125

THey that put their trust in the Lord, shall bee even as the Mount Sion: which may not be removed, but standeth fast for ever.

2 The hils stand about Jerusalem, even so standeth the Lord round about his people: from this time forth for evermore.

3 For the rod of the ungodly commeth not into the lot of the righteous: lest the righteous put their hand unto wickednesse.

4 Doe well, O Lord, unto those that be good, and true of heart.

5 As for such as turne backe unto their owne wickednesse: the Lord shall lead them forth with the evill doers, but peace shall be upon Israel.

*In convertendo.* } { *Evening*
*Psal Cxxvj.* } { *Prayer.*

WHen the Lord turned againe the captivity of Sion: then were we like unto them that dreame.

2 Then were our mouths filled with laughter: and our tongue with joy.

3 Then said they among the heathen: The Lord hath done great things for them.

4 Yea, the Lord hath done great things for us already: whereof we rejoyce.

5 Turne our captivity O Lord: as the Rivers in the South.

6 They that sow in teares, shall reape in joy.

7 He that now goeth on his way weeping, and beareth forth good seed: shal doubtlesse come again with joy, and bring his sheaves with him.

*Nisi Dominus.* Psal. 127

EXcept the Lord build the house, their labour is but lost that build it.

2 Except the Lord keep the city: the watchman waketh but in vain.

3 It is but lost labour, that yee haste to rise up early, and so late take rest: and eat the bread of carefulnesse, for so he giveth his beloved sleep.

4 Lo, children, & the fruit of the womb: are an heritage and gift that commeth of the Lord.

5 Like as the arrowes in the hand of the Giant: even: so are the young children.

6 Happy is the man that hath his quiver full of them: they shall not be ashamed when they speake with their enemies in the gate.

*Beati omnes.* Psal. Cxxviii.

BLessed are all they that fear the Lord: and walke in his waies.

2 For thou shalt eat the labors of thine hands: O well is thee, and happy shalt thou be.

3 Thy wife shall be as the fruitfull vine: upon the wals of thine house.

4 Thy children are like Olive branches: round about thy table.

5 Lo, thus shall the man be blessed, that feareth the Lord.

6 The Lord from out of Sion shall so blesse thee; that thou shalt see Ierusalem in prosperity all thy life long.

7 Yea, that thou shalt see thy childrens children: and peace upon Israel.

*Sæpe expugnaverunt.* Psal. Cxxix.

MAny a time have they fought against me from my youth up: (may Israel now say.)

2 Yea many a time have they vexed me from my youth up: but they have not prevailed against me.

3 The plowers plowed upon my back: and made long furrowes.

4 But the righteous Lord, hath hewne the snares of the ungodly in pieces.

5 Let them be confounded and turned backward: as many as have evill will at Sion.

6 Let them be even as the grasse growing upon the house top: which withereth before it be plucked up.

7 Whereof the mower filleth not his hand: neither hee that bindeth up the sheaves his bosome.

8 So that they which go by, say not so much as, The Lord prosper you: we wish you good lucke, in the name of the Lord.

*De profundis clamavi.* Psal. Cxxx.

OVt of the deep have I called unto thee, O Lord: Lord heare my voyce.

2 O let thine eares consider well the voice of my complaint.

3 If thou Lord wilt be extreame to marke what is done amisse: O Lord who may abide it?

4 For there is mercy with thee: therefore shalt thou be feared.

5 I looke for the Lord, my soule doth wait for him: in his word is my trust.

6 My soule fleeth unto the Lord, before the morning watch: I say before the morning watch.

7 O Israel trust in the Lord, for with the Lord there is mercy, and with him is plenteous redemption.

8 And he shall redeeme Israel: from all his sins.

*Domine non est.* Cxxxi.

LOrd, I am not high-minded: I have no proud lookes.

2 I do not exercise my selfe in great matters, which are too high for me.

3 But I refrain my soule and keep it low, like as a childe that is weaned from his mother: yea, my soule is even as a weaned childe.

4 O Israel trust in the Lord from this time forth for evermore.

*Memor esto Domine.* Psa. Cxxxii. } *Morning Prayer.*

LOrd remember David: and all his troubles.

2 How he swore unto the Lord: and vowed a vow unto the Almighty God.

3 I will not come within the tabernacle of my house: nor climb up into my bed.

4 I will not suffer mine eyes to sleepe, nor mine eyelids to slumber: neither the temples of my head to take any rest.

5 Vntill I finde out a place for the temple of the Lord: an habitation for the mighty God of Iacob.

6 Lo, we heard of the same at Ephrata: and found it in the wood.

7 We will go into his tabernacle: and fall low on our knees before his footstoole.

8 Arise, O Lord, into thy resting place: thou and the arke of thy strength.

9 Let thy Priests be clothed with righteousnesse: and let thy Saints sing with joyfulnesse.

10 For thy servant Davids sake, turne not away the presence of thine annointed.

11 The Lord hath made a faithfull oath unto David: and he will not shrinke from it.

12 Of the fruit of thy body, shall I set upon thy seat.

13 If thy children will keepe my covenant & my testimonies that I shall learn them: their children also shall sit upon thy seat for evermore.

14 For the Lord hath chosen Sion to be an habitation for himselfe: hee hath longed for her.

15 This shal be my rest for ever: here will I dwel, for I have a delight therein.

16 I will blesse her victuals with increase and will satisfie her poore with bread.

17 I will deck her priests with health: and her Saints shall rejoyce and sing.

18 There shall I make the horn of David to flourish: I have ordained a lanterne for mine annointed.

19 As for his enemies, I shall cloath them

them with ſhame: but upon himſelfe ſhall his crowne flouriſh.

*Ecce quam bonum.* Pſal. 133.

BEhold how good and ioyfull a thing it is: brethren to dwell together in unity.

2 It is like the precious ointment upon th head that ran downe unto the beard: even unto Aarons beard, and went downe unto the skirts of his cloathing.

3 Like as the dew of Hermon: which fell upon the hill of Sion.

4 For there the Lord promiſed his bleſſing: & life for evermore.

*Ecce nunc benedicite.* Pſal. 134.

BEhold (now) praiſe the Lord: all yee ſervants of the Lord.

2 Yee that by night ſtand in the houſe of the Lord: even in the courts of the houſe of our God.

3 Lift up your hands in the ſanctuary: and praiſe the Lord.

4 The Lord that made heaven and earth: give thee bleſsing out of Sion.

*Laudate nomen.* Pſal. 135.

O Praiſe the Lord, laud ye the name of the Lord: praiſe it, O ye ſervants of the Lord.

2 Yee that ſtand in the houſe of the Lord: in the courts of the houſe of our God.

3 O praiſe the Lord, for the Lord is gracious: O ſing prayſes unto his name for it is lovely.

4 For why, the Lord hath choſen Iacob unto him ſelf: and Iſrael for his owne poſſeſſion.

5 For I know that the Lord is great: and that our Lord is above all gods.

6 Whatſoever the Lord pleaſed, that did he in heaven and earth: and in the ſea, and in all deepe places.

7 He bringeth forth the clouds from the ends of the world: and ſendeth forth lightening with the raine, bringing the winds out of his treaſures.

8 He ſmote the firſt borne in Egypt both of man and beaſt.

9 He hath ſent tokens and wonders into the midſt of thee, O thou land of Egypt: upon Pharao and all his ſervants.

10 He ſmote divers nations: and ſlue mightie kings.

11 Sehon king of the Amorites, and Og the king of Baſan: and all the kingdomes of Canaan.

12 And he gave their land to be an heritage: even an heritage unto Iſrael his people.

13 Thy name, O Lord, endureth for ever: ſo doth thy memorial, O Lord, from one generation to another.

14 For the Lord will avenge his people: and be gracious unto his ſervants.

15 As for the Images of the heathen, they are but ſilver and gold: the worke of mens hands.

16 They have mouths and ſpeak not: eyes have they, and ſee not.

17 They have eares, and yet they heare not: neither is there any breath in their mouthes.

18 They that make them are like unto them: and ſo are all they that put their truſt in them.

19 Praiſe the Lord, ye houſe of Iſrael: praiſe the Lord, ye houſe of Aaron.

20 Praiſe the Lord, ye houſe of Levi: ye that feare the Lord, praiſe the Lord.

21 Praiſed be the Lord, out of Sion: which dwelleth at Ieruſalem.

*Confitemini Domino* } *Turning*
*Pſ. l. Cxxvi.* } *prayer.*

O Give thankes unto the Lord: for hee is gracious, and his mercy endureth for ever.

2 O give thankes unto the God of all Gods: for his mercy endureth for ever.

3 O thanke the Lord of all Lords: for his mercy endureth for ever.

4 Which onely doth great wonders: for his mercy endureth for ever.

5 Which by his excellent wiſedome made the heavens: for his mercy endureth for ever.

6 Which layed out the earth above the waters: for his mercy endureth for ever.

7 Which hath made great lights: for his mercie endureth for ever.

8 The Sun to rule the day: for his mercy endureth for ever.

9 The Moone and the ſtars to governe the night: for his mercy endureth for ever.

10 Which ſmote Egypt with their firſt borne: for his mercy indureth for ever.

11 And brought out Iſrael from among them: for his mercy indureth for ever.

12 With a mighty hand, & ſtretched out armes: for his mercy indureth for ever.

13 Which divided the red ſea in two parts: for his mercy endureth for ever.

14 And made Iſrael to go through the midſt of it: for his mercy endureth for ever.

15 But as for Pharao and his hoaſt, hee overthrew them in the red ſea: for his mercy indureth for ever.

16 Which led his people through the wildernesſe: for his mercy indureth for ever.

17 Which smote great kings: for his mercy indureth for ever.
18 Yea, and slue mighty kings: for his mercy indureth for ever.
19 Sehon king of the Amorites: for his mercy endureth for ever.
20 And Og the king of Basan: for his mercy indureth for ever.
21 And gave away their land for an heritage: for his mercy endureth for ever.
22 Even for an heritage unto Israel his servant: for his mercy indureth for ever.
23 Which remembred us, when we were in trouble: for his mercy indureth for ever.
24 And hath delivered us from our enemies: for his mercy endureth for ever
25 Which giveth food to all flesh: for his mercy endureth for ever.
26 O give thanks unto the God of heaven: for his mercy endureth for ever.
27 O give thankes unto the Lord of Lords: for his mercy endureth for ever.

*Super flumina. psal.* Cxxxvi.

BY the waters of Babylon, we sat downe and wept, when we remembred thee (O Sion.)
2 As for our harpes, wee hanged them up, upon the trees that are therein.
3 For they that led us away captive, required of us then a song and melody in our heavinesse: Sing us one of the songs of Sion.
4 How shall wee sing the Lords song, in a strange land?
5 If I forget thee, O Jerusalem: let my right hand forget her cunning.
6 If I do not remember thee, let my tongue cleave to the roofe of my mouth: yea, if I prefer not Jerusalem in my mirth.
7 Remember the children of Edom, O Lord, in the day of Jerusalem: how they said, Downe with it, downe with it, even to the ground.
8 O Daughter of Babylon, wasted with misery, yea, happy shall he be that rewardeth thee, as thou hast served us.
9 Blessed shall he be that takes thy children, and throweth them against the stones.

*Confitebor tibi Domine.* Psal. Cxxxviii.

I Will give thankes unto thee, O Lord, with my whole heart: even before the Gods will I sing praises unto thee.
2 I will worship toward thy holy temple, and praise thy name because of thy loving kindnesse and truth: for thou hast magnified thy name, and thy word above all things.
3 When I called upon thee, thou heardest me, and endouedst my soule with much strength.
4 All the Kings of the earth shall praise thee, O Lord: for they have heard the words of thy mouth.
5 Yea, they shall sing in the Wayes of the Lord: that great is the glory of the Lord.
6 For though the Lord bee high, yet hath he respect unto the lowly: as for the proud, he beholdeth them a far off.
7 Though I walke in the middest of trouble: yet shalt thou refresh me, thou shalt stretch forth thine hand upon the furiousnesse of mine enemies, and thy right hand shall save me.
8 The Lord shall make good his loving kindnesse towards mee: yea thy mercy, O Lord, endureth for ever, despise not then the works of thine owne hands

*Domine probasti* } *Morning*
Psal. Cxxxix. } *Prayer.*

O Lord thou hast searched me out and knowne me: thou knowest my downe sitting and my uprising, thou understandest my thoughts long before.
2 Thou art about my path, and about my bed: and spiest out all my waies.
3 For lo, there is not a word in my tongue: but thou, O Lord, knowest it altogether.
4 Thou hast fashioned me behind and before: and layed thine hand upon me.
5 Such knowledge is too wonderfull and excellent for me: I cannot attaine unto it.
6 Whither shall I then flie from thy spirit: or whither shall I then goe from thy presence.
7 If I climbe up into heaven, thou art there: If I go down to hell, thou art there also.
8 If I take the wings of the morning: and remaine in the uttermost parts of the sea.
9 Even there also shall thine hand lead me: and thy right hand shall hold me.
10 If I say, peradventure the darknesse shall cover me: then shall my night be turned to day.
11 Yea, the darknesse is no darknesse with thee, but the night is as cleare as the day: the darknesse and light to thee are both alike.
12 For my reines are thine: thou hast covered me in my mothers wombe.
13 I will give thanks unto thee, for I am fearfully and wonderfully made: marvellous are thy workes, and that my soule knoweth right well.

14 My bones are not hid from thee: though I be made secretly, and fashioned beneath in the earth.

15 Thine eyes did see my substance yet beeing unperfect: and in thy booke were all my members written.

16 Which day by day were fashioned: when as yet there was none of them.

17 How deare are thy counsels unto me, O God! O how great is the sum of them.

18 If I tell them, they are mo in number than the sand: when I wake up, I am present with thee.

19 Wilt not thou slay the wicked, O God: depart from me ye bloud-thirsty men.

20 For they speake unrighteously against thee: and thine enemies take thy name in vaine.

21 Do I not hate them, O Lord, that hate thee: and am not I grieved with those that rise up against thee.

22 Yea, I hate them right sore: even as though they were mine enemies.

23 Try me, O God, and seeke the ground of my heart: prove me and examine my thoughts.

24 Looke well, if there be any way of wickednes in me: and lead me in the way everlasting.

*Eripe me Domine.* Psal. Cxl.

DEliver me, O Lord, from the evill man: and preserve me from the wicked man.

2 Which imagine mischiefe in their hearts: and stir up strife all the day long

3 They have sharpned their tongues like Serpents: adders poyson is under their lips.

4 Keepe me O Lord, from the hands of the ungodly: preserve me from the wicked men which are purposed to overthrow my goings.

5 The proud have laied a snare for me, & spred a net abroad with cords: yea, and set traps in my way.

6 I said unto the Lord, Thou art my God: heare the voyce of my prayers, O Lord.

7 O Lord God, thou strength of my health: thou hast covered my head in the day of battell.

8 Let not the ungodly have his desire, O Lord: let not his mischievous imagination prosper, least they be too proud.

9 Let the mischiefe of their owne lips fall upon the head of them, that compasse me about.

10 Let hot burning coales fall upon them: Let them be cast into the fire, and into the pit, that they never rise up againe.

11 A man full of words shall not prosper upon the earth: evill shall hunt the wicked person to overthrow him.

12 Sure I am, that the Lord will avenge the poore: and maintaine the cause of the helplesse.

13 The righteous also shall give thanks unto thy name: and the just shall continue in thy sight.

*Domine clamavi.* Psal. Cxli.

LOrd I call upon thee, haste thee unto me: and consider my voice when I cry unto thee.

2 Let my prayer bee set forth in thy sight as the incense, and let the lifting up of my hands bee an evening sacrifice.

3 Set a watch, O Lord, before my mouth: and keepe the doore of my lips.

4 O let not mine heart be inclined to any evil thing: let me not be occupied in ungodly workes, with the men that worke wickednesse, least I eate of such things as please them.

5 Let the righteous rather smite mee friendly: and reprove me.

6 But let not their precious balmes breake mine head, yea I will pray yet against their wickednesse.

7 Let their Iudges be overthrowne in stony places: that they may heare my words, for they are sweet.

8 Our bones are scattered before the pit: like as when one breaks and heweth wood upon the earth.

9 But mine eies looke unto thee, O Lord God: in thee is my trust, O cast not out my soule.

10 Keepe me from the snare which they have laid for me: and from the traps of wicked doers.

11 Let the ungodly fall into their own nets together: and let mee ever escape them.

*Voce mea ad Dom* } *Evening*
Psal. Cxlii. } *Prayer.*

I Cryed unto the Lord with my voice, yea, even unto the Lord did I make my supplication.

2 I powred out my complaint before him: and shewed him of my trouble.

3 When my heart was in heavinesse, thou knewest my path: in the way wherein I walked, have they privily laid a snare for me.

4 I looked also upon my right hand: and saw there was no man that would know me.

5 I had no place to flie unto: and no man cared for my soule.

6 I cryed unto thee, O Lord, and said; thou art my hope and my portion in the land of the living.

7 Consider my complaint: for I am brought very low.

8 O deliver me from my persecutors: for they are too strong for me.

9 Bring my soule out of prison, that I may give thanks unto thy name: Which thing if thou wilt grant me, then shall the righteous resort unto my company.

*Dominus audiuit.* Psal. cxlii.

HEare my Prayer, O Lord, and consider my desire: hearken unto me, for thy truth and righteousnesse sake.

2 And enter not into judgment with thy servant; for in thy sight shall no living man be justified.

3 For the enemy hath persecuted my soule, he hath smitten my life downe to the ground: he hath laid me in darknesse, as men that have bin long dead.

4 Therefore is my spirit vexed within me: and my heart within me is desolate.

5 Yet doe I remember the time past, I muse upon all thy workes: yea, I exercise my selfe in the workes of thy hands.

6 I stretch forth my hands unto thee: my soule gaspeth unto thee as a thirsty land.

7 Heare me, O Lord, and that soone, for my spirit waxeth faint: hide not thy face from me, lest I be like unto them that goe downe into the pit.

8 O let me heare thy loving kindnesse betimes in the morning, for in thee is my trust: shew thou mee the way that I should walke in, for I lift up my soule unto thee.

9 Deliver me, O Lord, from mine enemies: for I flie unto thee to hide me.

10 Teach me to do the thing that pleaseth thee for thou art my God: let thy loving spirit lead mee forth into the land of righteousnesse.

11 Quicken me, O Lord, for thy Names sake: and for thy righteousnesse sake bring my soule out of trouble.

12 And of thy goodnesse slay mine enemies: and destroy all them that vex my soule, for I am thy servant.

*Benedictus Dominus.* Psal. cxliii. } *Morning prayer.*

BLessed be the Lord my strength: which teacheth my hands to warre, and my fingers to fight.

2 My hope and my fortresse: my castle and deliverer, and my defender in whom I trust, which subdueth my people that is under me.

3 Lord what is man, that thou hast such respect unto him: or the sonne of man that thou so regardest him?

4 Man is like a thing of nought: his time passeth away like a shadow.

5 Bow thy heavens, O Lord, and come downe: touch the mountaines, and they shall smoake.

6 Cast forth thy lightning and teare them: shoot out thine arrowes and consume them.

7 Send downe thine hand from above: deliver me, and take me out of the great waters, from the hand of the strange children.

8 Whose mouth talketh of vanity: and their right hand is a right hand of wickednesse.

9 I will sing a new song unto thee, O God: and sing praises unto thee upon a ten stringed Lute.

10 Thou that givest victory unto kings: and hast delivered David thy servant, from the perill of the sword.

11 Save mee and deliver mee from the hand of strange children: whose mouth talketh of vanity, and their right hand is a right hand of iniquity.

12 That our sonnes may grow up as the young plants, and that our daughters may be as the polished corners of the Temple.

13 That our garners may bee full and plentifull with all manner of store: that our sheepe may bring forth thousands and ten thousands in our streets.

14 That our oxen may be strong to labour: that there be no decay, no leading into captivity, and no complaining in our streets.

15 Happy are the people that be in such a case: yea, blessed are the people which have the Lord for their God.

*Exaltabo te Deus.* Psal. 145.

I Will magnifie thee, O God, my King: and I will praise thy Name for ever and ever.

2 Every day will I give thanks unto thee and praise thy Name for ever and ever.

3 Great is the Lord, and marvellous worthy to be praised: there is no end of his greatnesse.

4 One generation shall praise thy works unto another: and declare thy power.

5 As for me, I will be talking of thy worship: thy glory, thy praise, and wondrous workes.

6 So that men shall speake of the might of thy marvellous acts: and I will also tell of thy greatnes.

7 The memoriall of thine abundant kindnesse shall be shewed: and men shall sing of thy righteousnesse.

8 The

8 The Lord is gracious and mercifull: long suffering, and of great goodnesse.

9 The Lord is loving unto every man: and his mercy is over all his workes.

10 All thy workes praise thee, O Lord: and thy Saints give thanks unto thee.

11 They shew the glory of thy kingdome: and talke of thy power.

12 That thy power, thy glory, and mightinesse of thy kingdome, might bee knowne unto men.

13 Thy kingdome is an everlasting kingdome: and thy dominion endureth throughout all ages.

14 The Lord upholdeth all such as fall: and lifteth up all those that be down.

15 The eyes of all wait upon thee, O Lord: and thou giveſt them their meat in due season.

16 Thou openeſt thine hand: and fillest all things living with plenteousnesse.

17 The Lord is righteous in all his waies: and holy in all his workes.

18 The Lord is nigh unto all them that call upon him: yea, all such as call upon him faithfully.

19 Hee will fulfill the desire of them that feare him: he also will heare their cry and will help them.

20 The Lord preserveth all them that love him: but scattereth all the ungodly.

21 My mouth shall speake the praise of the Lord: and let all flesh give thankes unto his holy name for ever and ever.

*Lauda anima mea.* Psal. Cxlvi.

PRaise the Lord O my soule, while I live will I praise the Lord: yea, as long as I have any being I will sing praise unto my God.

2 O put not your trust in Princes: nor in any child of man, for there is no help in them.

3 For when the breath of man goeth forth, he shall turne againe to his earth: and then all his thoughts perish.

4 Blessed is he that hath the God of Iacob for his helpe: and whose hope is in the Lord his God.

5 Which made heaven and earth, the sea and all that therein is: which keepeth his promise for ever.

6 Which helpeth them to right that suffer wrong: which feedeth the hungry.

7 The Lord loseth men out of prison: the Lord giveth sight to the blind.

8 The Lord helpeth them that are fallen: the Lord careth for the righteous.

9 The Lord careth for the strangers, and defendeth the fatherlesse and widow: as for the way of the ungodly, he turneth it upside downe.

10 The Lord thy God, O Sion, shall be king for evermore, and throughout all generations.

*Laudate Dominum.* Evening prayer.

Psal. Cxlvii.

OPraise the Lord, for it is a good thing to sing praises unto our God: yea a joyfull and pleasant thing it is to be thankfull.

2 The Lord doth build up Ierusalem: & gather together the out-casts of Israel.

3 He healeth those that are broken in heart: and giveth medicine to heale their sicknesse.

4 He telleth the number of the starres: and calleth them all by their names.

5 Great is our Lord, and great is his power: yea, and his wisedome is infinite.

6 The Lord setteth up the meek: and bringeth the ungodly down to the ground.

7 O sing unto the Lord with thanksgiving: sing praises upon the Harp unto our God.

8 Which covereth the earth with clouds, and prepareth raine for the earth: and maketh the grasse to grow upon the mountaines, and herbs for the use of men.

9 Which giveth foode unto the cattell: and feedeth the young ravens that call upon him.

10 He hath no pleasure in the strength of an horse: neither delighteth he in any mans legs.

11 But the Lords delight is in them that feare him: and put their trust in his mercy.

12 Praise the Lord, O Ierusalem: praise thy God, O Sion.

13 For he hath made fast the bars of thy gates: and hath blessed thy children within thee.

14 Hee maketh peace in thy borders: and filleth thee with the flower of wheate.

15 Hee sendeth forth his commandement upon earth: and his word runneth very swiftly.

16 He giveth snow like wooll: and scattereth the hoare frost like ashes.

17 He casteth forth his yce like morsels: who is able to abide his frost?

18 He sendeth out his word, and melteth them: he bloweth with his wind, and the waters flow.

19 He sheweth his word unto Iacob: his statutes and ordinances unto Israel.

20 He hath not dealt so with any nation: neither have the Heathen knowledge of his lawes.

*Laudate Dominum.* Psal. Cxlviii.

OPraise the Lord of heaven: praise him in the height.

Praise

2 Praise him all ye Angels of his : praise him all his host.

3 Praise him Sun and Moone : praise him all ye stars and light.

4 Praise him all ye heavens: and ye waters that be above the heavens.

5 Let them praise the name of the Lord : for hee spake: the word, and they were made, hee commanded, and they were created.

6 He hath made them fast for ever and ever : hee hath given them a law which shall not be broken.

7 Praise the Lord upon earth : yee Dragons and all deeps.

8 Fire and haile, snow and vapours : winde and storme fulfilling his word.

9 Mountaines and all hils : fruitfull trees and all Cedars.

10 Beasts and all cattell: wormes and feathered foules.

11 Kings of the earth and all people: Princes and all Iudges of the world.

12 Young men and maidens, old men and children, praise the name of the Lord, for his name only is excellent, and his praise above heaven and earth.

13 He shall exalt the horne of his people, all his Saints shall praise him : even the children of Israel, even the people that serve him.

*Cantate Domino.* Psal. Cxlix.

O Sing unto the Lord a new song : let the congregation of Saints praise him.

2 Let Israel reioyce in him that made him : and let the children of Sion be glad in their king.

3 Let them praise his name in the daunce : let them sing praises unto him with tabret and harpe.

4 For the Lord hath pleasure in his people : and helpeth the meek-hearted.

5 Let the Saints be ioyfull with glory : let them reioyce in their beds.

6 Let the praises of God bee in their mouth : and a two-edged sword in their hands.

7 To be avenged of the heathen : and to rebuke the people.

8 To binde their kings in chaines : and their nobles with linkes of yron.

9 That they may be avenged of them, as it is written: Such honour have all his Saints.

*Laudate Dominum.* Psal. CL.

O Praise God in his holinesse : praise him in the firmament of his power.

2 Praise him in his noble acts : praise him according to his excellent greatnesse.

3 Praise him in the sound of the trumpet : praise him upon the Lute and Harpe.

4 Praise him in the Cymbals & dances: praise him upon the strings and pipe.

5 Praise him upon the well tuned Cymbals : praise him upon the loud Cymbals.

6 Let every thing that hath breath: praise the Lord.

FINIS.